संताल एक्सप्रेस

विश्व आदिवासी दिवस विशेषांक

10 अगस्त

भाग 02

वर्ष- 08 | अंक -315 दुमका | epaper.santalexpress.com | santalexpress20@gmail.com | 10 अगस्त 2026, सोमवार | पृष्ठ 04

ब्रिटिश हुकूमत और अहिंसात्मक आदिवासी आंदोलन

रणेन्द्र

आदिवासी इतिहास लेखन के अवरोध

भारत का इतिहास शब्द-समुच्चय के अनुगूंज से मानस पटल पर सिंधुघाटी, इंद्रप्रस्थ, दिल्ली, कन्नौज, पाटलिपुत्र, कोलकाता के शासकों के इतिहास की छवि उभरती है। प्राचीन काल, मध्यकाल और आधुनिक काल का भारतीय इतिहास मुख्य रूप से उत्तर भारत और गंगा-यमुना दोआब क्षेत्र का इतिहास है। हां दक्षिण भारत भी है किंतु कुछ अध्यायों में सिमटा हुआ। पूर्वी भारत, उत्तर पूर्व, कश्मीर एवं हिमालय के इलाके, केरल आदि भारतीय इतिहास के अनछुए से क्षेत्र हैं। बंग-बंगाल-कलकत्ता मुगल काल में विद्रोहों के कारण और ईस्ट इंडिया कंपनी की आधार भूमि के कारण चिन्हित होता रहा है। किंतु मध्य भारत, झारखंड, कलिंग, असम तो इतिहास के पन्नों से अदृश्य-ओझल से रहे हैं। उत्तर-भारतीय वर्चस्व के बाबजूद इधर मध्य भारत, झारखंड, कलिंग, उत्तर पूर्व और पश्चिम भारत के ÷आदिवासी इतिहास÷ पर पिछले एक-दो दशकों से कुछ चुनिंदा इतिहासकारों की लेखनी सक्रिय हुई है।

इतिहासकार देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय, ब्रजदुलाल चट्टोपाध्याय, डी.डी. कोशांबी, रामशरण शर्मा आदि ने प्राचीन भारत के इतिहास लेखन के क्रम में राजतंत्र के उदय के पूर्व इस देश के गणराज्यों के जनजातीय स्वरूपों की चर्चा तो की है किंतु इस विषय पर अब तक कोई स्वतंत्र रूप से कार्य हुआ नहीं दिखता। उसी प्रकार मुख्य रूप से सी.यू. विल्स, हरमेन कुल्के, सुरजीत सिन्हा, सुरंजीत के. साहा, सुमित गुहा ने मध्यकालीन आदिवासी राजवंशों पर कार्य किया है किंतु ये कार्य भी मुख्य रूप से राजगोंडों और उड़ीसा के नल, भुईयां आदि तक सीमित हैं। इस सीमित अध्ययन ने भी अभी तक भारत के इतिहास के किसी अध्याय में जगह बनाने में सफलता हासिल नहीं की है।

ब्रिटिश हुकूमत और आदिवासी

इतिहासकार कालीकिंकर दत्त, जे.सी. झा, कुमार सुरेश सिंह, डेविड हार्डिमैन, गौतम भद्रा, तनिका सरकार, विस्मोय पति, अशोक कुमार सेन, पुरुषोत्तम कुमार, नंदिनी सुंदर, इंद्र कुमार चैधरी, सगीता दास गुप्ता, वर्जीनियस खाखा आदि ने मुख्य रूप से ब्रिटिश हुकूमत की स्थापना, 1757 के प्लासी के युद्ध में ईस्ट इंडिया कंपनी की विजय, 1764 ई. में बक्सर युद्ध में मुगलों की हार और 1765 ई. में बंगाल की दीवानी ईस्ट इंडिया कंपनी को मिलने के पश्चात 1767 ई. में जंगल महाल से शुरू हो कर 1920-30 तक के आदिवासी उलगुलानों-क्रांतियों पर लेखनी चलाई है। धरती आबा बिरसा मुंडा, संताल

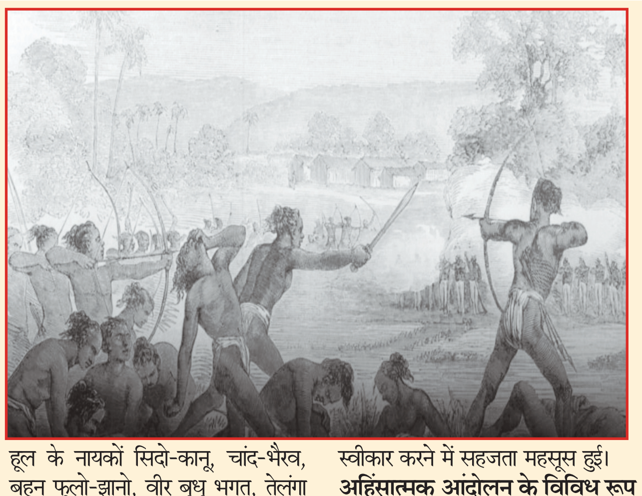

हूल के नायकों सिदो-कानू, चांद-भैरव, बहन फूलो-झानो, वीर बुधु भगत, तेलंगा खड़िया, 1910 का भूमकाल गुंडा धूर, रंपा फितूर अल्लूरू सीताराम राजू आदि-आदि पूरे भारत में सत्तर-अस्सी आदिवासी क्रांतिकारियों की जीवनी तैयार हो चुकी है या हो रही है। इन सारे इतिहासकारों की लेखनी में एक बात कॉमन है कि सब के सब हिंसक प्रतिकारों को ही रेखांकित कर रहे हैं क्योंकि अहिंसा-सत्याग्रह-अवज्ञा आंदोलन को दिल्ली में बैठे इतिहासकारों ने महात्मा गांधी के आंदोलनों का पर्यायवाची बना कर छोड दिया है। या विदेशी और देशी मानवशास्त्रियों ने अपनी लेखनी से सारे आदिवासी समुदायों को जंगलवासी, कथित सभ्यता से दूर अन्य के रूप में गढ़ कर हमारे सामने रखा है। हमारी श्रेष्ठता ग्रंथि को भी आदिवासी समुदायों को अन्य (जंगलवासी-असभ्य) के रूप में ही स्वीकार करने में सहजता महसूस हुई।

अहिंसात्मक आंदोलन के विविध रूप

लेकिन सच तो यह है मोहनदास करमचंद गांधी के दक्षिण अफ्रीका से भारत आगमन (09 जनवरी, 1915) के कई दशक पूर्व से ही आदिवासी समुदायों ने प्रतिकार के विविध स्वरूपों का सहारा लिया है। हाकिमों को आवेदन, न्यायपालिका में मुकदमा, शांतिपूर्ण घेराव, सविनय अवज्ञा, धार्मिक पुनर्जागरण के माध्यम से स्वराज की प्राप्ति, जुलूस, धरना आदि के कई-कई तरीके 1857-58 से आजादी के बाद तक भी देखने को मिलते हैं। ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ आदिवासी समुदायों के इन शांतिपूर्ण अहिंसात्मक प्रतिकार प्रविधियों पर कम ही पढ़ने को मिलता है। इतिहासकार मृदुला मुखर्जी ने किसान आंदोलनों के संदर्भ और अशोक कुमार सेन ने अपने एक आलेख ÷आदिवासी प्रतिकार के बदलते रूप÷ में इन अहिंसात्मक प्रतिकारों के कारणों की पड़ताल की है।

मृदुला मुखर्जी के अनुसार, ÷... राज्य की अर्द्धवर्चस्ववादी या निरंकुश या सर्वसत्तावादी संरचनाएं असंतोष और प्रतिरोध के अबाध्यकारी और शांतिपूर्ण रूपों के लिए या तो बहुत कम गुंजाइश छोड़ती हैं या छोड़ती ही नहीं। या फिर जो गुंजाइश होती भी है वह बहुत तेजी से खत्म हो जाती है। ये संरचनाएं जटिल संस्थाओं, विचारधाराओं और वैचारिक तंत्रों के द्वारा वैचारिक वर्चस्व या सहमति स्थापित करने के बजाय सत्ता के निरंकुश व्यवहार पर अधिक स्पष्ट और खुले ढंग से आधारित होती हैं और इसलिए वे सभी प्रकार के अंसतोष और प्रतिरोध का सख्ती से दमन करती हैं।... यह ब्रिटिश भारत की अर्द्ध-वर्चस्ववादी राजकीय संरचना ही थी जिसने संघर्ष के रूपों के चयन पर जीवंत प्रभाव डाला, बल्कि उनको निर्धारित किया। फिर ब्रिटिश भारत के किसानों और उनके नेताओं के पास ब्रिटिश भारतीय राजसत्ता की सशस्त्र शक्ति का काफी तजुर्बा था। उन्नीसवीं सदी में 1857 के महाविद्रोह समेत उनके पहले के हिंसक विद्रोहों को ब्रिटिश सरकार के सैन्यबल ने सफलता के साथ कुचल दिया था और वे जानते थे कि अगर लाठियों, कुल्हाड़ियों, धनुषबाणों और भालों से लैस किसानों ने ब्रिटिश साम्राज्य के आधुनिक शस्त्रास्त्र को चुनौती दी तो उसकी उन्हें भारी कीमतें चुकानी पड़ेंगी। इसलिए जैसा कि राष्ट्रीय आंदोलन के साथ हुआ, अर्द्ध-वर्चस्ववादी राजीतिक संरचना के अंदर राजनीतिक गुंजाइश की उपलब्धता और कीमतों का हिसाब-किताब, इन दोनों ने किसान आंदोलन को प्रतिरोध और संघर्ष के अहिंसक या गैर-बागी रूपों का प्रयोग करने के लिए प्रेरित किया।÷ (औपनिवेशिक भारत में कृषक प्रतिरोध और कृषक चेतनाः इतिहास-अंक-3, भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद की शोध पत्रिकाः पृष्ठ 172-173)

इतिहासकार अशोक कुमार सेन ने हो आदिवासी समुदाय के संदर्भ में अपने आलेख में यह रेखांकित किया है कि ÷साधारणतः यह समझा जाता है कि हिंसा ही उनकी एकमात्र प्रतिवाद पद्धति है। अर्थात हो का अर्थ अनिवार्यतः लड़ाका कोल है या हो एवं लड़ाई समानार्थक शब्द हैं। केवल हो ही नहीं, आदिवासी एवं हिंसा की समानार्थकता एक प्रचलित धारणा है। हिंसा या तीर धनुष के प्रयोग को आदिवासियों के स्वभाव का अनिवार्य पहलू माना जाता है। इससे गलत धारणा बनती है कि वे आवश्यक रूप से प्राक् सभ्यता (पहाड़ जंगलवासी) अपरिवर्तनशील जन-समुदाय मात्र हैं। इस भ्रांत धारणा को नकारते हुए काल एवं परिवेश के अनुसार हो समुदाय के द्वारा विरोध के बदलते स्वरूप पर प्रकाश डालने की कोशिश करूंगा।

... बहिर्गमन (Migration) आदिवासियों के शांतिपूर्ण प्रतिवाद का प्राथमिक रूप रहा। आज से लगभग हजार साल पहले छोटानागपुर पर हिंदू एवं उरांव समुदायों का नियंत्रण होते ही अलग-अलग समूहों में गुंडाओं ने घाटी छोड़ कर सिंहभूम की ओर यात्रा की। इस प्रकार मुंडाओं ने सामूहिक निष्क्रमण के द्वारा अपने प्रतिवाद को व्यक्त किया। यह क्रिया आत्महननकारी (Masochistic) थी।

.... ब्रिटिश सरकार के जंगल संबंधी कानूनों ने प्रतिवाद के अन्य रूप को जन्म दिया। ... ब्रिटिश सरकार की वनों को सुरक्षित एवं संरक्षित करने की नीति के कारण उनके (आदिवासियों के) जीवन का स्वाभाविक लय-छंद नष्ट हुआ।... सिंहभूम के हो आदिवासियों के लिए साधन संपन्ना एवं पराक्रमी शासक कुल के विरूद्ध हथियार पकड़ना संभव नहीं था। इसलिए उन्होंने अहिंसक प्रतिवाद के मार्ग को चुना। कानून तोड़ना (सविनय अवज्ञा) पहला तरीका था। ... अर्थात जंगल कानूनों के खिलाफ लोगों ने व्यापक पैमाने पर लुक छिप कर सरकारी वनों के वृक्षों को काट कर अपना अंसतोष व्यक्त किया। ... न्याय प्राप्ति के लिए सरकार के पास अर्जी भेजना अन्य तरीका था।...÷ (आदिवासी प्रतिवाद के बदलते रूपः झारखंड एन्साइक्लोपीडिया खंड-1, पृष्ठ 208-211)

उलगुलान-प्रतिकार की एक विधि धार्मिक-सामाजिक पुनर्जागरण के रूप में भी सामने आई। विभिन्न परिवेश एवं काल में आदिवासी नेतृत्वकर्ताओं ने यह विचार किया या उन्हीं के शब्दों में कहें तो परमसत्ता ने उन्हें रास्ता दिखाया कि जब तक समुदाय अपने अंदर व्याप्त बुराइयों को दूर नहीं करेगा, तब तक अबुआ राज स्वराज या पुरातन स्वर्णयुग की वापसी नहीं होगी।

विश्व आदिवासी दिवस की प्रासंगिकता

महादेव टोप्पो

यूरोपीय देशों विशेषत : स्पेन, पुर्तगाल आदि देशों ने जब 1992 को कोलंबस के विश्व विजय दिवस के रूप में मनाने का प्रस्ताव संयुक्त राष्ट्र संघ में लाया था तब लैटिन अमेरिकी, अफ्रीकी देशों के साथ एशियाई देशों ने इसका विरोध किया था कि कोलंबस की नई खोज की कोशिश ने आदिवासी समुदाय के विनाश का रास्ता खोल दिया था। अतः , इसके खूनी इतिहास और आदिवासियों के विनाश को कोलंबस का गौरवशाली इतिहास नहीं कहा जा सकता, जिसने हर तरह से उनका संहार और विनाश किया था।इस पर बहस हुई और अंततः, यह सोचा गया इसका उपचारात्मक उपाय क्या हो? %मानवाधिकार संवर्धन और संरक्षण उप-आयोग के आदिवासी आबादी पर संयुक्त राष्ट्र कार्य समूह (WGIP) की पहली बैठक 9 अगस्त 1982 को हुई थी। फिर भी 1992 को कोलंबस के पांच सौवीं जयंती मनाने के पक्ष और विरोध में तीखी बहसें हुई। दोनों गुटों में बहस और विरोध चलता रहा । अंततः, यूरोपीय देशों द्वारा प्रस्तावित कोलंबस का पांच सौवीं जयंती मनाने के प्रस्ताव पास नहीं हो सका। संयुक्त राष्ट्र संघ (N) की महासभा में दिसंबर 1994 की बैठक में निर्णय लिया गया कि आदिवासियों की भाषा, संस्कृति उनके अधिकारों आदि की रक्षा करने के लिए उपयुक्त वातावरण और जागरूकता लाई जाए और इसका संरक्षण, संवर्धन किया जाए। अतः नौ अगस्त को विश्व आदिवासी दिवस मनाने का निर्णय लिया गया। फिर 1994 से 2004 तक विश्व आदिवासी दशक मनाया जो अगले दस वर्षों यानी 2014 तक चला। आदिवासी भाषा, भोजन के प्रति भी जागरूकता लाने उद्देश्य से संयुक्त राष्ट्र संघ 2023 को इंटरनेशनल मिलेट ईयर यानी अंतरराष्ट्रीय मोटा अन्नाज वर्ष मना चुका है और वर्ष 2022 से 2032 तक आदिवासी भाषा दशक मना रहा है।

विश्व की कुल जनसंख्या में आदिवासी समुदाय का हिस्सा लगभग 6त्न तक है। वे दुनिया की सांस्कृतिक विविधता का एक बड़ा हिस्सा प्रस्तुत करते हैं। दुनिया भर में बोली जाने वाली लगभग 7,000 भाषाओं में से अधिकांश भाषाएँ आदिवासी समुदायों द्वारा बोली जाती हैं। भारत की बात करें तो यहाँ 2011 की जनगणना के अनुसार आदिवासियों की संख्या लगभग 10.4 करोड़ यानी कुल भारतीय आबादी का लगभग 8.6% हैं। ये लगभग पांच सौ छोटी, बड़ी भाषाएं बोलते हैं। समस्त आदिवासी समुदायों को जैविक संरक्षण में सहभागिता 80 प्रतिशत से अधिक है।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में जलवायु परिवर्तन, जैव विविधता का ह्रास और वैश्विक तापन (Global Warming) सबसे गंभीर समस्याएँ हैं। इन संकटों के समाधान में आदिवासी जीवन शैली की प्रासंगिकता सबसे अधिक उभरकर आती है। आदिवासी समाज का अस्तित्व जल, जंगल और जमीन पर आधारित है। वे प्रकृति को उपभोग की वस्तु न मानकर जीवनदाता मानते हैं यही कारण है कि प्राकृतिक संसाधन इन्हीं इलाकों में बचे हैं। उनका पारंपरिक ज्ञान पेड़ों, पौधों, औषधियों और वन्यजीवों के संरक्षण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। आदिवासी समाज केवल उतना ही संसाधन प्रकृति से लेता है जितना कि उसको जरूरत है। इसलिए यह जीवनशैली आधुनिक उपभोक्तावादी संस्कृति के विपरीत सतत-विकास यानी सस्टेनेबल डेवलपमेंट का बेहतरीन उदाहरण प्रस्तुत करती है।

इसलिए आज औद्योगिक, वैज्ञानिक, तकनीक के आधुनिक युग के दौर में विश्व आदिवासी दिवस का महत्व और अधिक बढ़ जाता है। आधुनिकीकरण के नाम पर बड़े बाँधों, खदानों, अभयारण्यों और औद्योगिक परियोजनाओं के कारण भारी संख्या में आदिवासियों का विस्थापन हुआ है। अपनी मूल भूमि से बेदखल, विस्थापित होने के कारण वे अपनी सांस्कृतिक पहचान, भाषा और जीविका के साधनों से वंचित हो गए हैं। यह दिवस उनके जल-जंगल-जमीन पर उनके पारंपरिक अधिकारों को न केवल रेखांकित करता है बल्कि इसके लिए शेष समुदाय से संवाद का भी माध्यम बन जाता है

यूनेस्को की रिपोर्टों के अनुसार, दुनिया भर में लुप्तप्राय भाषाओं में से अधिकांश भाषाएँ आदिवासी समुदायों की हैं। जब एक भाषा विलुप्त होती है, तो उसके साथ सदियों पुरानी पारंपरिक ज्ञान, मौखिक इतिहास, लोक कथाएँ और स्मृतियां भी समाप्त हो जाती हैं। इसलिए यह दिवस कुँड़ुख, हो, मुण्डा, खड़िया, गोंडी, भीली आदि अनेक भाषाओं और उनके सांस्कृतिक धरोहरों के संरक्षण का न केवल संदेश देता है बल्कि इसके लिए सामूहिक प्रयास का आह्वान भी करता है।

भारतीय संविधान में आदिवासी समुदाय के अधिकारों की सुरक्षा के लिए कई प्रावधान किए गए हैं जैसे -

* पाँचवीं और छठी अनुसूचीः आदिवासी बहुल क्षेत्रों में विशेष प्रशासन और स्वायत्तता का अधिकार।
* पेसा अधिनियम, 1996 (PESA Act) : ग्राम सभाओं को स्वशासन और प्राकृतिक संसाधनों पर निर्णय लेने का अधिकार।
* वन अधिकार अधिनियम, 2006 (Forest Rights Act): आदिवासियों को उनकी भूमि और वनों पर कानूनी अधिकार ।

लेकिन यह देखना बेहद दुखद है कि इन कानूनों के बावजूद, ज़मीनी स्तर पर इनका पूर्ण क्रियान्वयन नहीं होता है। अक्सर नीतियों के निर्माण और उनके निष्पादन के बीच बड़ा अंतर देखने को मिलता है। फलतः , आदिवासी समाज में निरंतर असंतोष और हाशिए पर धकेले जाने का भय तेजी से फैल जाती है। आदिवासी अधिकारों की रक्षा और उनके सशक्तीकरण के लिए केवल एक दिन का आयोजन पर्याप्त नहीं है। इसके लिए निरंतर और प्रभावकारी प्रयासों की आवश्यकता है। आदिवासियों के विकास के नाम पर उन पर बाहर से योजनाएँ थोपने के बजाय, निर्णय प्रक्रिया में उनकी प्रत्यक्ष भागीदारी सुनिश्चित की जानी चाहिए। इसके अलावा आधुनिक विज्ञान और आदिवासी पारंपरिक ज्ञान के बीच समन्वय स्थापित किया जाना चाहिए। इस दिशा में आईआईटी गुवाहाटी के कुछ प्रयासों का अध्ययन किया जा सकता है जहां उन्होंने कुछ आदिवासी पारंपरिक तकनीक और ज्ञान को उपयोगी पाया है। झारखण्ड में जल प्रबंधन हेतु पद्मश्री सिमोन उराँव के ज्ञान और अनुभव को अन्य क्षेत्रों में लागू किया जा सकता है। बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के सहयोग से झारखण्डी औषधीय पेड़ पौधों, पारंपरिक फसलों के उन्नत किस्में तैयार की जा सकती हैं। भविष्य में रूप से पर्यावरण संरक्षण और जड़ी-बूटी अनुसंधान और आदिवासी औषधि ज्ञान के क्षेत्रों में भी कार्य करने की संभावना बनी हुई है।

दरअसल विश्व आदिवासी दिवस केवल एक उत्सव नहीं, बल्कि आदिवासी भाषा, ज्ञान,कला, खेल, सिनेमा, नृत्य, संस्कृति, इतिहास, खान-पान, रहन-सहन, परिधान आदि के सार्थक और गरिमापूर्ण विकास की ओर बढ़ने का एक बड़ा कदम भी है। यह हम सबके लिए आत्म-मंथन और संकल्प का अवसर है। यह दिवस हमें स्मरण दिलाता है कि एक न्यायसंगत और टिकाऊ दुनिया के निर्माण के लिए आदिवासी समुदायों के अधिकारों, उनकी गरिमा और उनकी अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर का सम्मान करना कितना अनिवार्य है। जब तक समाज के इस सबसे बुनियादी घटक को उसका अधिकार और सम्मान नहीं मिलता, तब तक वैश्विक विकास की अवधारणा अधूरी ही रहेगी। इसलिए आदिवासी दिवस को हमें संतुलित-विकास की ओर बढ़ने के लिए एक प्रेरक दिवस के रूप में भी मनाना चाहिए।

संपर्क-7250212369

ईमेल-mahadevtoppo1954@gmail.com

विश्व स्वदेशी दिवस और आदिवासी समुदाय

डॉ संजय कुमार झा

भारत के साथ - साथ विश्व के लगभग 90 देशों में प्रत्येक साल 9 अगस्त को विश्व आदिवासी (स्वदेशी) दिवस मनाया जाता है।यह दिवस विश्व भर के स्वदेशी लोगों के अधिकारों की रक्षा और उनकी संस्कृति के सम्मान के लिए मनाया जाता है।इस वर्ष,2026 में संयुक्त राष्ट्र ने विश्व आदिवासी दिवस का मुख्य विषय ÷ स्वदेशी दाइयों का सम्मान-जीवन और कल्याण सुरक्षा÷ रखा है।

विदित हो कि 23 दिसंबर, 1994 ई0 में संयुक्त राष्ट्र महासभा के प्रस्ताव संख्या 49/214 द्वारा 9 अगस्त को विश्व आदिवासी दिवस के रुप में घोषित किया गया जिसका मुख्य उद्देश्य विश्व की जनजातीय आबादी के अधिकारों की रक्षा करना है।विश्व में भारतीय लोकतंत्र एक ऐसा लोकतंत्र है जहां सभी नागरिकों के अधिकारों की रक्षा की जाती है। इतना ही नहीं भारतीय संविधान में आदिवासियों के लिए विशेष प्रावधान किया गया है,वह भी 1990 के दशक में नहीं बल्कि 26 जनवरी,1950 से ही।

विश्व की कुल आबादी में 476 मिलियन आदिवासी, 90 देशों में निवास करते हैं।जो विश्व की कुल आबादी का 6.2 प्रतिशत हैं। गौरतलब हो कि ये आदिवासी उन क्षेत्रों में निवास करते हैं ,जहां विश्व का 54 प्रतिशत क्षेत्र खान और खदान का है एवं भारत में अनुसूचित जनजाति (एसटी) की जनसंख्याः फरवरी 2025 तक, कुल जनसंख्या का लगभग 8.6त्न (0.086) है। परंतु आज भी इन आदिवासियों का समुचित विकास नहीं हो पाया है।संयुक्त राष्ट्र संघ के अनुसार विश्व में कुल आदिवासियों की 19 प्रतिशत आबादी आज भी गरीब है।

विदित हो कि आदिवासी को अन्य कई नामों यथा- जनजाति, आदिम जाति, वन्यजाति, गिरिजन,पिछड़े हिंदू आदि से संबोधित किया गया है।समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अनुसूचित जनजातियों को उन समुदायों के रूप में पहचाना जाता है जो सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित हैं। उनकी अनूठी सांस्कृतिक और सामाजिक प्रथाएं हैं, जो उन्हें व्यापक आबादी से अलग करती हैं। भारत के प्रमुख जनजातिय समुदाय में संथाल, भील, गोंड, उरांव, नागा, मिज़ो और खासी शामिल हैं। प्रत्येक समुदाय की अपनी विशिष्ट भाषा, रीति-रिवाज और परंपराएं हैं।

भारतीय संविधान में आदिवासियों को ÷अनुसूचित जनजाति÷ कहकर संबोधित किया गया है।दरअसल ÷ जनजाति या आदिवासी एक ऐसा अन्तर्विवाही क्षेत्रीय समूह है जिसके सदस्य सामान्य भूभाग , भाषा, संस्कृति, जीवन स्तर, धर्म तथा व्यवसाय के आधार पर समानता की भावना द्वारा संगठित रहते हैं।÷लोकुर समिति (1965)के अनुसार आदिवासियों की आवश्यक विशेषताओं में विशिष्ट संस्कृति,आदिम लक्षणों का संकेत, बड़े पैमाने पर समुदाय के साथ संपर्क में संकोच, भौगोलिक अलगाव तथा पिछड़ापन को माना गया है।ढ़ेबर आयोग ने 1973 में आदिम जनजातीय समूह (पीटीजी) का एक अलग श्रेणी बनाया जिसे भारत सरकार ने वर्ष 2006 में नाम बदलकर ÷पीभीटीजी÷ कर दिया।वर्तमान भारतीय समाज में कुल 705 अनुसूचित जनजातियों में से 75 पीभीटीजी (आदिम जनजाति) हैं।

भारत में अनुसूचित जनजातियाँ मुख्य रूप से पूर्वोत्तर भारत, मध्य भारत और दक्षिणी और पश्चिमी भारत के कुछ हिस्सों में निवास करती हैं। मध्य प्रदेश, ओडिशा, छत्तीसगढ़, झारखंड, महाराष्ट्र और राजस्थान जैसे राज्यों में अनुसूचित जनजातियों की बड़ी आबादी निवास करती है तथा द्रविड़ भाषा, आस्ट्रिक भाषा एवं चीनी तिब्बती भाषा परिवार से संबंधित है।जिनका मुख्य पेशा शिकार करना, खाद्य पदार्थों का संग्रह करना, पशुपालन करना, खेती करना तथा विभिन्न उद्योगों और दस्तकारियों द्वारा जीविकोपार्जन करना है।

अनुसूचित जनजातियों को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 342 के तहत मान्यता प्राप्त है। यह मान्यता सरकार को इन समुदायों को विशेष सुरक्षा और विकास योजनाएं प्रदान करने में सक्षम बनाती है।जिसके तहत कई

सरकारी पहल हुई है यथा अनुसूचित जनजातियों की सामाजिक-आर्थिक स्थितियों में सुधार के लिए वनबंधु कल्याण योजना जैसे विभिन्न कार्यक्रम लागू किए गए हैं, जो शिक्षा, स्वास्थ्य सेवा और रोजगार सृजन पर ध्यान केंद्रित करते हैं। ये सामाजिक और आर्थिक रूप से वंचित हैं। उनकी अनूठी सांस्कृतिक और सामाजिक प्रथाएं हैं, जो उन्हें व्यापक आबादी से अलग करती हैं। आज भी कुछ अपवादों को छोड़कर आदिवासी समुदाय अभावग्रस्त जीवन, ऋणग्रस्तता का शिकार, बेरोजगारी की समस्या,मद्यपान की समस्या, निरक्षरता, सांस्कृतिक संपर्क की समस्याएं, अंधविश्वास, डायन प्रथा जैसी समस्याओं से जुझ रहा है। सरकार ने जनजातियों के लिए कई बुनियादी सुरक्षा उपाय किये हैं । यथा शैक्षिक एवं सांस्कृतिक सुरक्षा हेतु अनुच्छेद 15(4),29,46,350 राजनीतिक सुरक्षा हेतु अनुच्छेद 330,332,243 एवं प्रशासनिक सुरक्षा सुरक्षा के संदर्भ में अनुच्छेद -275।जब देश वर्ष 2047 तक विकसित होने का दृढ़ संकल्प लिए खड़ा है ,तब इस अवधि में भी आदिवासी समुदाय अनगिनत समस्याओं का सामना कर रहा है, ऐसे में विश्व आदिवासी दिवस की प्रासंगिकता पर तार्किक रुप से विचार - विमर्श लाजमी है। जनजातीय क्षेत्रों के विशिष्ट क्षेत्र जिन्हें ÷अनुसूचित क्षेत्र÷ के रूप में जाना जाता है, को अनुसूचित जनजातियों के अधिकारों और स्वायत्तता की रक्षा के लिए भारतीय संविधान के तहत नामित किया गया है। इन क्षेत्रों को पांचवीं और छठी अनुसूचियों के तहत शासित किया जाता है। भारत सरकार ने अनुसूचित जनजातियों की भूमि और सांस्कृतिक अधिकारों की रक्षा के लिए वन अधिकार अधिनियम (2006) और पंचायतों के प्रावधान (अनुसूचित क्षेत्रों तक विस्तार) अधिनियम , 1996 जैसे कानून बनाए हैं।इसके अतिरिक्त जनजातीय समुदायों के बीच साक्षरता और शिक्षा में सुधार के लिए पोस्ट-मैट्रिक छात्रवृत्ति योजना और एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयों की स्थापना जैसे कार्यक्रम शुरू किए हैं।

आदिवासी समाज : सामाजिक सांस्कृतिक अन्तर्विरोध और विकास की नई चेतना

अशोक सिंह

विश्व आदिवासी दिवस पर औपचारिक आयोजनों से परे इस बात पर भी चिंतन-मनन किया जाना चाहिए कि आज जबकि आदिवासियों के दर्द के प्रति चिंतित समाज के एक बड़े तबके को उसकी अस्मिता से कोई खास मतलब नहीं है फिर भी पता नहीं क्यों इन दिनों वर्तमान समाज उनके जीवन और उनकी समस्याओं में इतनी रूचि ले रहा है? पता नहीं उनकी संस्कृति के प्रति चिंतित लोगों और समुदायों को क्या मिलेगा ? दो दिन के परिचय सुनी-सुनायी बातों तथा अर्ध सत्य एवं अर्ध कल्पनाओं के आधार पर इन जनजातियों की विचित्र प्रथाओं और अनोखे रीति-रिवाजों के रोमांचक वर्णन से ? सच तो यह है कि आज आदिवासी समाज की अवस्था को लेकर जो तरह-तरह की व्याख्याएँ दी जा रही हैं, उसकी संस्कृति का जिस तरह विश्लेषण किया जा रहा है, उसमें वास्तविकता से परे जाकर बदलावों को दरकिनार कर दिया जाता है। जिससे समकालीन चुनौतियों को समझना आज कठिन हो गया है। ऐसी रणनीति अपनायी जाती है कि उसमें समानता तथा सामाजिक न्याय के पहलू बहस के केन्द्र में नहीं उभरे। किसी भी परंपरागत समाज के अन्तर्विरोधों और उसकी प्रक्रिया को समझने के लिए उस समाज के स्वरूप, उसकी सामाजिक संरचना और उसके सामाजिक यर्थाथ के बीच के अंतर को समझना होगा। सवाल चाहे नये समाज की रचना का हो या पुरातन प्रणाली के रचनात्मक व सकारात्मक संबंधों को विकसित करने का, इस राह से गुजरना ही होगा। परंपरा के बारे में भी साफ और स्पष्ट समझ विकसित करने के लिए यह जरूरी है, ताकि उन भ्रमों से मुक्त हुआ जा सके जो इतिहास के एक खास दौर में पैदा होकर परंपरा और अंधविश्वास में गहन घालमेल कर देते हैं। जिससे समाज अपने ही इतिहास के बारे में भ्रांतियों का शिकार हो जाता है और वैज्ञानिकता तथा गतिशीलता के बदले स्थिरता को ही परंपरा मान लेता है। वैसे भी आज परंपरा का सवाल वास्तव में बार-बार परीक्षण की माँग करता है। खासकर आदिवासी परंपरा को समझने के लिए इतिहास और समाजशास्त्र की दोहरी जानकारी जरूरी है। साथ ही एक देशज और एथनिक नजरिया भी चाहिए। आज का आदिवासी समाज परंपरा के ऐसे संतुलन के लिए बेचैन है, जिसमें एक ओर वह अपनी पहचान भी कायम रख सके और विकास की दौड़ में पीछे भी न छूटे। वह यह भी चाहता है कि उसकी परंपरा को केवल

इतिहास अध्ययन का विषय नहीं रहने दिया जाय बल्कि उसका एक क्रांतिकारी विकल्प बने। इससे साफ जाहिर होता है कि आज आदिवासी समाज में विकास की नई चेतना जाग चुकी है लेकिन उसकी इस चेतना को एक बने बनाये तार्किक फ्रेम में नहीं समझा जा सकता। वैसे भी परंपरा के भीतर जो सार्थक संवाद है उसे नकार कर किसी भी समाज की व्याख्या नहीं की जा सकती। खासकर आदिवासी समाज की तो कतई नहीं। आज परंपरा की दुहाई देने वालों में एक समूह ऐसा भी है, जो केवल प्रतिगामी या समय के थपेड़ों से पस्त हो चुकी चीजों को ही जरूरी तथ्य साबित करने की कोशिश करता है। ऐसे तत्व आम तौर पर साम्राज्य के समय थोपे गए कई विचारों और प्रवृतियों को ही असली तथ्य बताते हैं, जबकि सच्चाई यह होती है कि आदिवासी समाज की बनावट से उसका कोई सिलसिला नहीं बैठता। चूंकि आदिवासी समाज में इधर हाल के तीन-चार दशकों में भारी बदलाव हुए हैं, इसलिए मनोगत विचारों से दूर इसकी वर्तमान स्थिति का वस्तुपरक मूल्यांकन करना होगा। साथ ही यह भी ध्यान रखना होगा कि वर्तमान बदलावों को समझने के क्रम मे हम अतीत से कहीं कट न जायें। नहीं तो जमीनी हालात को ठोस तरह से समझने की बजाय उससे मोहग्रस्तता हो जायेगी या फिर उसे ठुकराने की बात होने लगेगी। दोनों ही हालात में समाज के बेहतर मूल्यों के संवर्धन में आरोपित %जीवन-दृष्टि% को अपनाने का प्रचलन बढ़ेगा। वैसे भी आज आदिवासी समाज कई विडंबनाओं का शिकार है। जिसमें सबसे बड़ी विडंबना तो यह है कि उसके पास आज भी पर्याप्त लिखित दस्तावेजों का अभाव है, जिसके कारण निहित ताकतों को अपने मनोनुकूल अवधारण गढ़ने का अवसर मिल रहा है और वे आदिवासी समाज संरचना के जनवादी विचारों को अतीतोन्मुखी बताकर अपने अनुसार विचार और मिथक बनाने की कोशिश को अंजाम दे रहे हैं। जिससे आदिवासीयत को लेकर भ्रम पैदा कर दिया जाता है और व्यापक आदिवासी समाज में विभाजन की रेखा खींच दी जाती है। आदिवासी संस्कृति और परंपरा की ऐसी ही व्यवस्था का परिणाम है कि आज व्यापक आदिवासी एकता और सामाजिकता को तोड़ने में उन्हें सफलता मिल रही है। आज चारों ओर से एक सुनिश्चित साजिश के तहत आदिवासियों को मुख्यधारा में आने से रोका जा रहा है। उन्हें यथास्थिति में बनाये रखने वाले लोग जहाँ उन्हें जनजातीय कहकर उनके आदिवासी होने की अवधारण को मानने से इनकार करते रहे हैं, वहीं उनके परंपरागत समाज और संस्कृति की अपने अनुरूप व्याख्या कर उन पर अपने विचारों को थोपने में लगे हैं। ये वे लोग हैं जो अपनी सभ्यता संस्कृति को श्रेष्ठ बताकर उन्हें घृणा और हेय की दृष्टि से देखते हैं। पिछड़ा असभ्य जंगली कहकर दोयम दर्जे का प्राणी समझते हैं। इतना ही नहीं हमेशा उसे कुछ न कुछ सीखाने के मूड में रहते हैं उससे कुछ सीखने की कोशिश कभी नहीं करते। जबकि सच्चाई यह है कि अपने को श्रेष्ठ सभ्य और सुसंस्कृत समझने वाले इन तथाकथित बुद्धिजीवी लोगों को अभी इनसे बहुत कुछ सीखने की जरूरत है। आवश्यकता है अपने बने बनाये फ्रेम से बाहर निकलकर स्वस्थ मानसिकता और सच्ची जिज्ञासा से उनके जीवन में सूक्ष्मता से झाँकने की। आज आदिवासी समाज के लिए तो यह भारी चुनौती है कि वह अपने लायक और अपनी संवेदनात्मकता के अनुरूप इतिहास का अभिलेखीकरण करे तथा आरोपित इतिहास-दृष्टि से भी अपने को मुक्त कर ले। आदिवासी समाज को यह समझना होगा कि उनके लिए परंपरा का मतलब मृत रीति-रिवाजों को ढोना नहीं है। रीति-रिवाजों में अगर कुछ ऐसी रूढियों ने जगह बना ली है, जिसका आदिवासी समाज की अवधारणामूलक चिंतन से कोई मेल नहीं है, तो उसे नकार कर अपनी परंपरा के वास्तविक व्यवहारों से पैदा हुए जीवन-बोध को स्थापित करे। ऐसा करने में जितनी देरी होगी आदिवासी समाज का उतना ही नुकसान होगा ओर समकालीन चुनौतियों से जूझने की उसकी क्षमता जाती रहेगी। वैसे व्यवस्था को बनाये रखने वालों के लिए यह प्रक्रिया सहज ग्राह्य नहीं होती और वे एक सुनिश्चित साजिश के तहत इसे रोकने की हर संभव कोशिश करते हैं लेकिन उन्हें यह नहीं भूलना चाहिए वक्त काफी बदल चुका है। आदिवासी समाज की विकासमान चेतना नया आकार ले रही है। उन्हें व्यवस्था के उन हिमायती लोगों की पहचान हो गई है, जो अपने इतिहास ज्ञान के प्रति तटस्थ बनाने की सुनिश्चित चेष्टा करते रहे हैं और उनके समाज की सच्चाइयों को स्वीकारने की बजाय उस पर स्थिरता का बेबुनियादी आरोप लगाते रहे हैं। उसे जंगली पिछड़ा असभ्य अविकसित कहकर अपना दंभ प्रकट करते रहे हैं। अब वे धीरे-धीरे अपने ऊपर आरोपित विचारों के जाल-फांस को तोड़कर बाहर आयेंगे और अपने अतीत के क्रांतिकारी चेतना को आधार बनाकर नये समाज की रचना करेंगे। इतना ही नहीं अब वे संसाधनों पर हक के साथ-साथ उत्पादन के लक्ष्य पर भी नयी बहस खड़ा कर देंगे। जिससे अर्थतंत्र की वर्तमान व्यवस्था को पूरजोर चुनौती मिलेगी और व्यवस्था-पोषक ताकतों के लिए अपने को बचाये रखना मुश्किल हो जायेगा।

(लेखक जनमत शोध संस्थान, पुराना दुमका से जुड़े हैं) पता - केवटपाड़ा दुमका - 814101 झारखण्ड मो. 9110072128

संताल परगना की आदिवासी महिलाएं : संघर्ष, अस्मिता और विकास के अनुत्तरित सवाल

-डॉ. मिनी टुडू

जब पूरा देश विश्व आदिवासी दिवस पर आदिवासी संस्कृति, परंपराओं और विरासत का उत्सव मनाएगा, तब संथाल परगना की हजारों आदिवासी महिलाएँ खेतों में धान की रोपाई कर रही होंगी, जंगलों से लकड़ियाँ बीन रही होंगी या परिवार का पेट पालने के लिए दूसरे राज्यों की ओर पलायन कर रही होंगी।

यह विडंबना है कि आदिवासी संस्कृति की चर्चा तो खूब होती है, लेकिन उसकी सबसे बड़ी संवाहक–आदिवासी महिला–आज भी अपने अधिकार, सम्मान और सुरक्षा के लिए संघर्ष कर रही है।

अर्थव्यवस्था और संस्कृति की असली धुरी

संथाल परगना की पहचान उसकी प्राकृतिक संपदा और समृद्ध आदिवासी संस्कृति से है। यहाँ की आदिवासी महिलाएँ केवल परिवार की सदस्य नहीं, बल्कि कृषि, वनोपज, अर्थव्यवस्था, लोक संस्कृति और सामाजिक जीवन की धुरी हैं।

खेतों में उनका श्रम पुरुषों से कम नहीं, बल्कि कई बार अधिक होता है। परिवार के भोजन से लेकर बच्चों के पालन-पोषण और पारंपरिक ज्ञान को अगली पीढ़ी तक पहुँचाने की जिम्मेदारी भी वही निभाती हैं।

फिर भी भूमि के स्वामित्व, आर्थिक निर्णयों, शिक्षा और नेतृत्व के सवाल पर उनका स्थान अक्सर पीछे दिखाई देता है। यही विरोधाभास हमारे विकास मॉडल पर गंभीर प्रश्न खड़ा करता है।

शिक्षा और स्वास्थ्य : अब भी बड़ी चुनौती

शिक्षा को परिवर्तन का सबसे बड़ा माध्यम माना जाता है, लेकिन संथाल परगना के अनेक ग्रामीण क्षेत्रों में बालिका शिक्षा आज भी गरीबी, विद्यालयों की दूरी, घरेलू जिम्मेदारियों और संसाधनों के अभाव से प्रभावित है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी स्थिति संतोषजनक नहीं है। कुपोषण, एनीमिया, मातृ स्वास्थ्य संबंधी समस्याएँ और गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाओं की कमी बड़ी चुनौती बनी हुई हैं। यदि किसी समाज की महिलाएँ स्वस्थ और शिक्षित नहीं होंगी, तो उस समाज के विकास का दावा अधूरा ही रहेगा।

योजनाएँ अनेक, लेकिन पलायन क्यों?

महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए केंद्र और राज्य सरकार द्वारा स्वयं सहायता समूह, राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन, झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी (छ्र्स्क्र-), मनरेगा, पोषण अभियान, सखी मंडल और महिला उद्यमिता जैसी अनेक योजनाएँ संचालित की जा रही हैं।

इन योजनाओं का उद्देश्य महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना, स्थानीय रोजगार उपलब्ध कराना तथा गरीबी और पलायन को रोकना है।

लेकिन जमीनी तस्वीर कई असहज सवाल खड़े करती है। आज भी बड़ी संख्या में आदिवासी महिलाएँ पश्चिम बंगाल, दिल्ली, केरल और अन्य राज्यों की ओर घरेलू कामगार, कृषि मजदूर, ईंट-भट्ठों तथा असंगठित क्षेत्र में काम करने के लिए पलायन कर रही हैं।

यदि इतनी योजनाएँ चल रही हैं, तो आदिवासी महिलाओं को अपने ही राज्य में सम्मानजनक रोजगार क्यों नहीं मिल पा रहा है?

सवाल योजनाओं का नहीं, उनके वास्तविक लाभ का है

यदि योजनाओं का उद्देश्य महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना है, तो वे आज भी अपना घर और गाँव छोड़ने के लिए क्यों विवश हैं?

आखिर इन योजनाओं का वास्तविक लाभ किस तक पहुँच रहा है? क्या समाज की अंतिम पंक्ति में खड़ी आदिवासी महिला तक योजनाओं का लाभ पूरी ईमानदारी और प्रभावशीलता के साथ पहुँच रहा है, या वह अब भी विकास की मुख्यधारा से दूर खड़ी केवल इंतजार कर रही है?

विश्व आदिवासी दिवस पर इन प्रश्नों पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है।

महिला सुरक्षा : सबसे गंभीर चिंता

आदिवासी महिलाओं के सामने सबसे बड़ी चिंताओं में से एक उनकी सुरक्षा भी है। बच्चियों, किशोरियों, युवतियों और बुजुर्ग महिलाओं के साथ यौन हिंसा की घटनाएँ गंभीर सामाजिक चुनौती हैं।

लेकिन दर्ज मामलों से कहीं बड़ा वह मौन है, जिसमें अनेक महिलाएँ सामाजिक बदनामी, पारिवारिक दबाव, आर्थिक निर्भरता और न्याय प्रक्रिया की जटिलताओं के कारण शिकायत दर्ज कराने का साहस नहीं जुटा पातीं।

इसलिए दर्ज होने वाले अपराध उस पीड़ा का केवल एक हिस्सा हैं, जिसे महिलाएँ प्रतिदिन झेलती हैं।

घरेलू हिंसा से लेकर भूमि अधिकार तक

आदिवासी महिलाओं के सामने केवल यौन हिंसा ही नहीं, बल्कि मानव तस्करी, घरेलू हिंसा, डायन प्रथा, भूमि अधिकारों की समस्या और विस्थापन जैसी चुनौतियाँ भी हैं।

जल, जंगल और जमीन से उनका जीवन जुड़ा है, लेकिन इन्हीं संसाधनों पर उनका अधिकार सबसे कमजोर है।

खेती में सबसे अधिक श्रम करने वाली महिला के नाम पर अक्सर जमीन नहीं होती। यह केवल आर्थिक असमानता नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय का भी प्रश्न है।

संघर्ष के साथ बदलाव की कहानी भी

फिर भी संथाल परगना की आदिवासी महिलाओं की कहानी केवल संघर्ष की कहानी नहीं है। स्वयं सहायता समूहों, तसर और लाख उत्पादन, हस्तशिल्प, लघु उद्यम तथा पंचायतों में बढ़ती भागीदारी ने अनेक महिलाओं को नई पहचान दी है। इतिहास की वीरांगनाएँ फूलो-झानो आज भी यह याद दिलाती हैं कि आदिवासी महिलाएँ अन्याय के सामने झुकने वाली नहीं, बल्कि परिवर्तन की वाहक हैं।

महिलाओं को लाभार्थी नहीं, विकास की साझेदार बनाना होगा

आज आवश्यकता केवल नई योजनाओं की घोषणा करने की नहीं, बल्कि यह सुनिश्चित करने की है कि योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुँचे।

स्थानीय स्तर पर सम्मानजनक रोजगार उपलब्ध कराया जाए, बेटियों की शिक्षा सुनिश्चित की जाए, महिलाओं की सुरक्षा के लिए त्वरित न्याय व्यवस्था मजबूत हो तथा भूमि और प्राकृतिक संसाधनों पर उनके अधिकारों को व्यवहार में लागू किया जाए।सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि आदिवासी महिलाओं को विकास की लाभार्थी नहीं, बल्कि विकास की साझेदार बनाया जाए।

औपचारिक उत्सव से आगे बढ़ने का समय

विश्व आदिवासी दिवस पर केवल सांस्कृतिक कार्यक्रमों और औपचारिक भाषणों तक सीमित रहने के बजाय हमें वास्तविक समस्याओं पर विचार करना होगा।

किसी भी सभ्यता की वास्तविक पहचान उसके सबसे कमजोर वर्ग के जीवन से होती है। यदि संथाल परगना की आदिवासी महिला आज भी सम्मान, सुरक्षा, शिक्षा और समान अवसर के लिए संघर्ष कर रही है, तो विकास की हमारी यात्रा अभी अधूरी है।

तभी सार्थक होगा विश्व आदिवासी दिवस

विश्व आदिवासी दिवस का वास्तविक अर्थ तभी होगा, जब किसी आदिवासी बेटी को शिक्षा के लिए अपने सपनों से समझौता न करना पड़े, किसी महिला को रोजगार के लिए अपना घर छोड़कर असुरक्षित परिस्थितियों में पलायन न करना पड़े और किसी बच्ची, युवती या बुजुर्ग महिला को भय के साये में जीवन न बिताना पड़े।

आदिवासी महिलाओं का सम्मान केवल संविधान का दायित्व नहीं, बल्कि एक संवेदनशील और न्यायपूर्ण समाज की पहचान भी है।

(लेखिका वाई.एस.एन.एम. कॉलेज, मेदिनीनगर में गृह विज्ञान विभाग में सहायक प्रोफेसर हैं।)

धर्म कोड के बिना अधूरी है आदिवासी पहचान

मसूदी टुडू

किसी भी समुदाय की पहचान केवल उसकी भाषा, संस्कृति और परंपराओं से नहीं होती, बल्कि उसकी धार्मिक आस्था भी उसकी सामुदायिक पहचान का महत्वपूर्ण आधार होती है। भारत में आदिवासी समुदायों की धार्मिक परंपराएं प्रकृति, जंगल, नदी, पर्वत और धरती से गहरे जुड़ी हुई हैं। इसके बावजूद देश की जनगणना में आदिवासियों की स्वतंत्र धार्मिक पहचान को दर्ज करने के लिए अलग धर्म कोड का प्रावधान नहीं है। परिणामस्वरूप करोड़ों आदिवासियों की धार्मिक पहचान स्वतंत्र रूप से दर्ज नहीं हो पाती। यह केवल आंकड़ों का सवाल नहीं, बल्कि आदिवासी अस्मिता, धार्मिक स्वतंत्रता और अस्तित्व की पहचान से जुड़ा गंभीर प्रश्न है।

ब्रिटिश काल की जनगणना में आदिवासियों की धार्मिक पहचान को अलग से दर्ज करने की व्यवस्था थी। 1871 से लेकर 1941 तक की जनगणना में आदिवासियों के लिए अलग धार्मिक श्रेणियां दर्ज की जाती थीं। विशेष रूप से 1931 और 1941 की जनगणना में आदिवासियों के लिए आदिवासी धर्म का कॉलम मौजूद था। लेकिन आजादी के बाद 1951 की जनगणना से आदिवासियों को स्वतंत्र धार्मिक श्रेणी के रूप में दर्ज करने की व्यवस्था समाप्त हो गई और उनकी धार्मिक पहचान को अन्य श्रेणियों में शामिल किया जाने लगा। आदिवासी समुदाय लंबे समय से अलग धर्म कोड की मांग करते रहे हैं। उनका तर्क है कि जब उनकी धार्मिक पहचान जनगणना में स्वतंत्र रूप से दर्ज ही नहीं होगी, तो उनकी वास्तविक धार्मिक जनसंख्या का आंकड़ा सामने कैसे आएगा? 1941 की जनगणना के आंकड़ों में आदिवासियों की आबादी 47 प्रतिशत बताई गई थी। इसके बाद 1951 में यह 36.38 प्रतिशत, 1961 में 36.01 प्रतिशत, 1971 में 32.12 प्रतिशत, 1981 में 30.13 प्रतिशत, 1991 में 27.07 प्रतिशत, 2001 में 26.03 प्रतिशत और 2011 में 26.02 प्रतिशत रह गई। इन आंकड़ों में लगातार गिरावट आदिवासी समुदाय के लिए गंभीर चिंता का विषय है।

धर्म कोड की मांग को लेकर झारखंड सहित पूरे देश में आदिवासी संगठनों और समुदायों की आवाज लगातार उठ रही है। लेकिन इस मांग में एकरूपता का अभाव दिखाई देता है। अलग-अलग क्षेत्रों और समुदायों की ओर से भील धर्म, गौंडी धर्म, सारी धर्म, विदिन धर्म, सरना धर्म और आदिवासी धर्म जैसे अलग-अलग नामों से धर्म कोड की मांग की जा रही है।

ऐसे में एक बड़ा सवाल यह है कि जब इतिहास में 1931 और 1941 की जनगणना में %आदिवासी धर्म% के नाम से अलग श्रेणी मौजूद थी, तो आज आदिवासी समाज अपनी धार्मिक पहचान के लिए अलग-अलग नामों में क्यों बंटा हुआ है? इस विषय पर व्यापक सामाजिक विमर्श और एक साझा दृष्टिकोण की आवश्यकता है। वर्तमान जनगणना व्यवस्था में हिंदू, मुस्लिम (इस्लाम), सिख, ईसाई, जैन और बौद्ध जैसे प्रमुख धर्मों के लिए अलग-अलग धार्मिक श्रेणियां उपलब्ध हैं। वहीं आदिवासी समुदायों की धार्मिक पहचान के लिए स्वतंत्र कॉलम का अभाव है। आदिवासी समाज का सवाल है कि यदि अपेक्षाकृत कम जनसंख्या वाले धार्मिक समुदायों की धार्मिक पहचान जनगणना में स्वतंत्र रूप से दर्ज की जा सकती है, तो करोड़ों आदिवासियों के लिए ऐसी व्यवस्था क्यों नहीं हो सकती? यह प्रश्न केवल जनसंख्या के आंकड़ों का नहीं है। जनगणना में किसी समुदाय की धार्मिक पहचान दर्ज होना उसके अस्तित्व और सांस्कृतिक पहचान की सरकारी स्वीकृति का भी प्रश्न है।

आदिवासी धर्म और जीवन-दर्शन प्रकृति के साथ गहरे संबंध पर आधारित है। वन, पर्वत, नदी, धरती और प्राकृतिक शक्तियां उनकी आस्था और जीवन-पद्धति का अभिन्न हिस्सा हैं। प्रकृति के संरक्षण और उसके साथ संतुलित जीवन जीने की परंपरा आदिवासी समाज की प्राचीन विरासत रही है। आदिवासी समाज का मानना है कि उसकी धार्मिक परंपराएं किसी एक व्यक्ति या एक समय में स्थापित नहीं हुईं, बल्कि प्रकृति और जीवन के साथ उसके दीर्घकालीन सह-अस्तित्व से विकसित हुई हैं। इसलिए अपनी धार्मिक पहचान को स्वतंत्र रूप से दर्ज कराने की मांग उनके लिए केवल प्रशासनिक मांग नहीं, बल्कि ऐतिहासिक और सांस्कृतिक अस्मिता का प्रश्न है। आदिवासी पहचान को लेकर भी लंबे समय से बहस होती रही है। कुछ लोग आदिवासियों के लिए वनवासी या गिरिवासी जैसे शब्दों का इस्तेमाल करते हैं, जबकि अनेक आदिवासी समुदाय सदियों से स्वयं को अपनी पारंपरिक पहचान के अनुरूप होड़ (मानव) और आदिवासी कहते आए हैं। किसी समुदाय की आत्म-पहचान का सम्मान लोकतांत्रिक समाज की मूल भावना है। इसलिए आदिवासी समाज की भाषा, संस्कृति, परंपरा और आत्म-पहचान को सम्मान मिलना आवश्यक है।

आदिवासियों के अधिकारों और उनके जल, जंगल एवं जमीन की रक्षा के लिए देश में अनेक संवैधानिक प्रावधान और कानून बनाए गए हैं। लेकिन इन कानूनों और प्रावधानों का प्रभावी एवं सख्ती से अनुपालन आज भी एक बड़ी चुनौती है। आदिवासी क्षेत्रों में विकास, विस्थापन, भूमि, वनाधिकार, खनन और प्राकृतिक संसाधनों से जुड़े सवाल आज भी गंभीर बने हुए हैं। इसलिए केवल कानून बनाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनके प्रभावी क्रियान्वयन की भी आवश्यकता है।

संयुक्त राष्ट्र ने 9 अगस्त को विश्व आदिवासी दिवस के रूप में आदिवासी समुदायों को वैश्विक मंच प्रदान किया है। यह दिन आदिवासी अधिकारों, उनकी संस्कृति, भाषा, परंपराओं और प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण पर विचार करने का अवसर है।

विश्व आदिवासी दिवस की सार्थकता तभी होगी, जब आदिवासियों के जल, जंगल और जमीन पर उनके अधिकार सुरक्षित हों; उनकी भाषा और संस्कृति संरक्षित रहे; उनकी धार्मिक पहचान को सम्मान मिले और उन्हें मुख्यधारा में समान अधिकार एवं सम्मान प्राप्त हो। यह दिन केवल गीत, नृत्य और मनोरंजन का अवसर बनकर नहीं रहना चाहिए। बल्कि इस दिन आदिवासी समाज को अपने अधिकारों, उपलब्धियों और चुनौतियों की समीक्षा करनी चाहिए और यह विचार करना चाहिए कि आज आदिवासी समाज कहां खड़ा है और आने वाली पीढ़ियों के लिए वह कैसी विरासत छोड़ना चाहता है।

अलग-अलग नामों से उठ रही धर्म कोड की मांग को व्यापक आदिवासी समाज के साझा विमर्श से एक स्पष्ट और सर्वमान्य दिशा देने की आवश्यकता है। क्योंकि धर्म कोड केवल जनगणना के एक कॉलम का सवाल नहीं है; यह आदिवासी समाज की पहचान, अस्मिता, संस्कृति और भविष्य की पीढ़ियों के अस्तित्व से जुड़ा प्रश्न है। विश्व आदिवासी दिवस पर यही संकल्प होना चाहिए कि आदिवासी समाज अपनी भाषा, संस्कृति, परंपराओं, प्रकृति, वन, पर्वत, भूमि और धार्मिक पहचान की रक्षा के लिए लोकतांत्रिक एवं संवैधानिक तरीके से एकजुट होकर अपनी आवाज बुलंद करे।

जोहार!

(लेखक संताल हूल के अमर सेनानी शाम परगना के वंशज और जे.सी.ई.आर.टी. रांची के पूर्व सहायक निदेशक हैं।)

संघर्ष से सफलता तक एएसआई किशोर कुमार टुडू बने युवाओं की प्रेरणा

विश्व आदिवासी दिवस केवल उत्सव का अवसर नहीं, बल्कि संघर्ष, स्वाभिमान और सफलता की उन कहानियों को सम्मान देने का दिन है, जिन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी अपनी मंजिल हासिल की। ऐसी ही प्रेरणादायक शख्सियत हैं किशोर कुमार टुडू, जो वर्तमान में पाकुड़ जिले के महेशपुर थाना में एएसआई के पद पर कार्यरत हैं। गोड्डा जिले के सुंदरपहाड़ी प्रखंड के करमादंड गांव के एक साधारण किसान परिवार में जन्मे किशोर कुमार टुडू ने अभावों के बीच अपनी शिक्षा पूरी की। बचपन से पुलिस की वर्दी पहनकर समाज सेवा का सपना देखा और हर पुलिस भर्ती में लगातार प्रयास करते रहे। कई असफलताओं के बावजूद उन्होंने हार नहीं मानी। आखिरकार वर्ष 2005 में झारखंड पुलिस में चयनित हुए और पहली नियुक्ति दुमका में मिली।ईमानदार सेवा, अनुशासन और कड़ी मेहनत के बल पर पदोन्नति पाकर वे एएसआई बने। किशोर कुमार टुडू कहते हैं, ÷संघर्ष कभी व्यर्थ नहीं जाता। यदि लक्ष्य स्पष्ट हो और मेहनत ईमानदारी से की जाए, तो सफलता एक दिन जरूर मिलती है।÷उनकी जीवन यात्रा आज आदिवासी समाज ही नहीं, बल्कि हर उस युवा के लिए प्रेरणा है, जो सीमित संसाधनों के बावजूद बड़े सपने देखने और उन्हें साकार करने का साहस रखता है। विश्व आदिवासी दिवस पर उनकी कहानी यह संदेश देती है कि मेहनत, धैर्य और आत्मविश्वास ही सफलता की सबसे मजबूत नींव हैं।

डिग्री से आगे हुनर की दरकार : शिक्षा, कौशल और रोजगार से बदलेगी आदिवासी युवाओं की तस्वीर

डॉ. कुनूल कंदीर
कुलपति एसकेएमयू, दुमका

प्रत्येक वर्ष 9 अगस्त को विश्व आदिवासी दिवस मनाया जाता है। इस दिवस का उद्देश्य विश्वभर के आदिवासी समुदायों की संस्कृति, परंपरा, भाषा और उनके अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। यह दिन हमें याद दिलाता है कि आदिवासी समाज प्रकृति के संरक्षण, सांस्कृतिक विविधता और सतत विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है। भारत में आदिवासी समुदायों की बड़ी आबादी निवास करती है और झारखंड उनकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का प्रमुख केंद्र है। संथाल, मुंडा, उरांव, हो, बिरहोर, असुर, पहाड़िया आदि जनजातियाँ अपनी विशिष्ट पहचान, संस्कृति और जीवन मूल्यों के लिए जानी जाती हैं।

यद्यपि संविधान में अनुसूचित जनजातियों के लिए अनेक अधिकार और विशेष प्रावधान किए गए हैं, फिर भी झारखंड के आदिवासी युवा आज शिक्षा, रोजगार, पलायन, डिजिटल असमानता और कौशल विकास जैसी अनेक समस्याओं का सामना कर रहे हैं। इन चुनौतियों का समाधान करने में विश्वविद्यालयों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

विश्व आदिवासी दिवस का महत्व

विश्व आदिवासी दिवस आदिवासी समाज के सम्मान, समानता और अधिकारों का प्रतीक है। यह दिवस उनकी संस्कृति, भाषा और पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित करने का संदेश देता है। आदिवासी समुदाय पर्यावरण संरक्षण, जैव विविधता, प्राकृतिक संसाधनों के संतुलित उपयोग और सामुदायिक जीवन की उत्कृष्ट परंपराओं के लिए जाने जाते हैं। इसलिए इनके विकास के साथ-साथ उनकी सांस्कृतिक पहचान की रक्षा भी आवश्यक है।

झारखंड के आदिवासी युवाओं की स्थिति

झारखंड के अधिकांश आदिवासी युवा ग्रामीण और वन क्षेत्रों में रहते हैं। उनकी आजीविका कृषि, वनोपज और दैनिक मजदूरी पर निर्भर रहती है। गरीबी, अशिक्षा, संसाधनों की कमी और विकास परियोजनाओं के कारण विस्थापन ने उनके जीवन को प्रभावित किया है। आज का आदिवासी युवा शिक्षा प्राप्त कर बेहतर जीवन और रोजगार चाहता है, लेकिन अनेक सामाजिक और आर्थिक बाधाएँ उसके मार्ग में उपस्थित हैं।

शिक्षा संबंधी समस्याएँ

शिक्षा किसी भी समाज के विकास का आधार है, परंतु झारखंड के आदिवासी युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

सबसे बड़ी समस्या दूर-दराज़ क्षेत्रों में अच्छे विद्यालयों और महाविद्यालयों का अभाव है। कई विद्यार्थियों को लंबी दूरी तय करनी पड़ती है, जिससे पढ़ाई प्रभावित होती है। अनेक विद्यालयों में प्रशिक्षित शिक्षकों, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, कंप्यूटर और इंटरनेट जैसी मूलभूत सुविधाओं का अभाव है।

भाषा भी एक महत्वपूर्ण समस्या है। अधिकांश आदिवासी बच्चे घर में अपनी मातृभाषा जैसे संथाली, मुंडारी, हो या कुड़ुख बोलते हैं, जबकि विद्यालयों में शिक्षा हिंदी या अंग्रेज़ी में दी जाती है। इससे प्रारंभिक शिक्षा कठिन हो जाती है और कई छात्र पढ़ाई बीच में छोड़ देते हैं।

गरीबी भी शिक्षा में बड़ी बाधा है। अनेक परिवार पुस्तकों, वर्दी, डिजिटल उपकरण या उच्च शिक्षा का खर्च वहन नहीं कर पाते। यद्यपि सरकार छात्रवृत्ति और आरक्षण जैसी सुविधाएँ प्रदान करती है, फिर भी इनका लाभ सभी जरूरतमंद विद्यार्थियों तक प्रभावी ढंग से नहीं पहुँच पाता।

कौशल की कमी और सीमित अवसर- रोजगार की दहलीज पर आदिवासी युवाओं का संकट

शिक्षा पूरी करने के बाद भी आदिवासी युवाओं के सामने रोजगार का संकट बना रहता है। झारखंड की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि, खनन और असंगठित क्षेत्र पर आधारित है, जहाँ रोजगार के अवसर सीमित हैं।

कई शिक्षित युवा नौकरी के लिए प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करते हैं, लेकिन अवसर कम और प्रतियोगिता अधिक होने के कारण सफलता प्राप्त करना कठिन होता है। निजी क्षेत्र में भी तकनीकी ज्ञान, अंग्रेज़ी, संचार कौशल और डिजिटल दक्षता की कमी के कारण उन्हें अपेक्षित रोजगार नहीं मिल पाता। महिला आदिवासी युवाओं को रोजगार के क्षेत्र में अतिरिक्त चुनौतियों का सामना करना पड़ता है, जैसे सामाजिक बाधाएँ, सुरक्षा संबंधी समस्याएँ और सीमित अवसर।

स्थानीय रोजगार की कमी ने बढ़ाया पलायन, असुरक्षित भविष्य की ओर बढ़ते युवा

रोजगार के अभाव में झारखंड के हजारों आदिवासी युवा दिल्ली, मुंबई, सूरत, बेंगलुरु, हैदराबाद और अन्य महानगरों की ओर पलायन करते हैं। वे निर्माण कार्य, घरेलू काम, होटल, फैक्टरी तथा अन्य असंगठित क्षेत्रों में कम मजदूरी पर कार्य करने को मजबूर हो जाते हैं।

पलायन के कारण परिवार बिखर जाते हैं, बच्चों की शिक्षा प्रभावित होती है तथा सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन कमजोर पड़ता है। कई बार प्रवासी मजदूर शोषण, असुरक्षित कार्य परिस्थितियों और मानव तस्करी जैसी समस्याओं का भी सामना करते हैं। इसलिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर विकसित करना अत्यंत आवश्यक है।

डिजिटल खाई में फंसी आदिवासी प्रतिभाएं, अवसरों से दूर युवा

आज का युग डिजिटल तकनीक का युग है, लेकिन झारखंड के अनेक आदिवासी क्षेत्रों में इंटरनेट, बिजली और डिजिटल उपकरणों की कमी है। इससे विद्यार्थियों को ऑनलाइन शिक्षा, प्रतियोगी परीक्षाओं, छात्रवृत्तियों और रोजगार संबंधी सूचनाओं का लाभ नहीं मिल पाता।

कोविड-19 महामारी के दौरान यह समस्या और स्पष्ट हुई, जब अनेक आदिवासी छात्र ऑनलाइन कक्षाओं में भाग नहीं ले सके। डिजिटल साक्षरता की कमी भी एक बड़ी चुनौती है। इसलिए डिजिटल सुविधाओं का विस्तार और तकनीकी प्रशिक्षण समय की आवश्यकता है।

अवसर की उड़ान भरेंगे आदिवासी युवा, विश्वविद्यालय बनेंगे नई राह

केवल डिग्री प्राप्त करना पर्याप्त नहीं है। वर्तमान समय में युवाओं को तकनीकी, व्यावसायिक, डिजिटल, संचार और उद्यमिता संबंधी कौशल की भी आवश्यकता है।

झारखंड में कृषि, वनोपज, हस्तशिल्प, लाह उत्पादन, तसर उद्योग, पर्यटन, सूचना प्रौद्योगिकी और लघु उद्योगों में अपार संभावनाएँ हैं। यदि आदिवासी युवाओं को इन क्षेत्रों में प्रशिक्षण दिया जाए, तो वे आत्मनिर्भर बन सकते हैं और स्थानीय स्तर पर रोजगार सृजित कर सकते हैं।

विश्वविद्यालयों की भूमिका

विश्वविद्यालय केवल डिग्री देने वाले संस्थान नहीं हैं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के केंद्र होने चाहिए। वे आदिवासी युवाओं के लिए आशा, अवसर और विकास का माध्यम बन सकते हैं।

विश्वविद्यालयों को छात्रवृत्ति, छात्रावास, परामर्श, मार्गदर्शन और शैक्षणिक सहायता उपलब्ध करानी चाहिए ताकि आर्थिक कठिनाइयों के कारण कोई भी छात्र शिक्षा से वंचित न रहे।

डिजिटल पुस्तकालय, कंप्यूटर प्रयोगशालाएँ, इंटरनेट सुविधा और स्मार्ट कक्षाएँ विकसित की जानी चाहिए। कौशल विकास केंद्र स्थापित कर सूचना प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, उद्यमिता, कृषि, पर्यटन और अन्य आधुनिक क्षेत्रों में प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए। विश्वविद्यालयों को उद्योगों के साथ सहयोग बढ़ाकर इंटर्नशिप, कैंपस प्लेसमेंट और रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने चाहिए। साथ ही स्टार्टअप और उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए नवाचार एवं इनक्यूबेशन केंद्र स्थापित किए जाने चाहिए।

आदिवासी संस्कृति, भाषा और पारंपरिक ज्ञान पर शोध को प्रोत्साहित करना भी विश्वविद्यालयों का महत्वपूर्ण दायित्व है। इससे सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण होगा और नई पीढ़ी अपनी पहचान पर गर्व कर सकेगी।

शिक्षा, कौशल और रोजगार से बदलेगी आदिवासी युवाओं की तस्वीर

विश्व आदिवासी दिवस केवल उत्सव का अवसर नहीं, बल्कि आदिवासी समुदायों के अधिकारों, सम्मान और समावेशी विकास के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रतीक है। झारखंड के आदिवासी युवा प्रतिभाशाली, मेहनती और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध हैं, लेकिन शिक्षा, रोजगार, पलायन, डिजिटल असमानता और कौशल विकास की चुनौतियाँ उनके विकास में बाधा बन रही हैं।

सरकार, समाज और विश्वविद्यालय यदि मिलकर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, डिजिटल सुविधाएँ, कौशल प्रशिक्षण, स्थानीय रोजगार और उद्यमिता को बढ़ावा दें, तो आदिवासी युवाओं का भविष्य उज्ज्वल बनाया जा सकता है। विश्वविद्यालय ज्ञान, नवाचार और सामाजिक परिवर्तन के केंद्र बनकर इन युवाओं के जीवन में नई आशा और नई दिशा प्रदान कर सकते हैं। यही विश्व आदिवासी दिवस का वास्तविक संदेश है और यही समावेशी एवं सशक्त भारत की आधारशिला भी है।

आदिवासी समुदायों के विकास के लिए अभी और संवेदनशील प्रयासों की आवश्यकता

डॉ मोहन मुर्मू

झारखंड राज्य गठन के बाद निश्चित तौर पर आदिवासी समाज के लोगो का विकास हुआ है.लेकिन पठारी क्षेत्रों में निवास करने वाले आदिवासी समुदायों के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका और उनके जल-जंगल-जमीन के अधिकारों के संरक्षण के क्षेत्रों में अभी और अधिक लक्षित तथा संवेदनशील प्रयासों की आवश्यकता है.आज भी पठारी क्षेत्र जहां आदिवासी समुदाय के लोग निवास करते है.वहां मूलभूत सुविधाओं की कमी है.अंतिम पायदान पर खड़े आदिवासी समुदाय के लोगो को अगर मुख्य धारा में जोड़ना या उनके उत्थान की सोच के साथ कार्य करना है तो कई सिस्टम में सुधार करने की आवश्यकता है. गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, दूर-दराज के क्षेत्रों में स्कूलों की स्थिति में सुधार, स्थानीय और मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा की व्यवस्था, उच्च शिक्षा के लिए विशेष छात्रवृत्ति और सहायता , बेहतर स्वास्थ्य सेवाएं,गांवों में स्वास्थ्य केंद्रों और डॉक्टरों की कमी को दूर करना,कुपोषण और सिकल सेल एनीमिया जैसी गंभीर बीमारियों की रोकथाम,पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों को आधुनिक स्वास्थ्य सेवाओं से जोड़ना,आजीविका और रोजगार,पारंपरिक कला, हस्तशिल्प और कृषि के लिए बाजार उपलब्ध कराना,वनोपज का उचित मूल्य दिलाना,कौशल विकास के जरिए नए रोजगार के अवसर पैदा करना, कानूनों का प्रभावी बनाना,पेसा कानून और वन अधिकार अधिनियम का सख्ती से पालन,भूमि अधिग्रहण से जुड़े मामलों में ग्राम सभा की सहमति को अनिवार्य बनाना जैसे दर्जनों कार्यो को कराया जा सकता है. रही बात शिक्षा की तो शहर में रहने वाले आदिवासी समाज के लोगो ने एक दर्शक से शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया है. देश के गांव , पठारी क्षेत्र व जंगलों में रहने वाले आदिवासी समाज के लोगो को और ध्यान देने की जरूरत है.तभी हमारा आदिवासी समाज के लोगो का विकास होगा.रही बात पठारी क्षेत्रों में रहे वाले आदिवासियों के विकास व उनके उत्थान का तो सरकार व सिस्टम को शिक्षा के क्षेत्र में अनेकों कार्य करने होंगे.पठारी क्षेत्रों में जन-जागरूकता फैलाना होगा.लोगो को शिक्षा के प्रति जागरूक करने होंगे.तभी आदिवासियों का साक्षरता दर बढ़ेगी और आदिवासी समाज के लोग समाज के मुख्य धारा में जुड़ पाएंगे.

चिकित्सा पदाधिकारी साहिबगंज

संघर्ष कर किसान परिवार से निकलकर शिक्षक पद तक पहुंचे पूर्णेन्दु हांसदा

धनंजय हलदार

राजमहल प्रखंड क्षेत्र के दरला पंचायत अंतर्गत सरायपूरा विद्यालय में कार्यरत शिक्षक पूर्णेन्दु हांसदा एक किसान परिवार से निकलकर शिक्षक पद तक पहुंचे. राज्य के पूर्वी सिंहभूम जिले के प्रखंड बहरागोड़ा, थाना बरसोल, गांव पाथरा निवासी गोरा चंद हांसदा के घर 1972 में पूर्णेन्दु हांसदा का जन्म हुआ. पिताजी खड़कपुर स्टेशन में आरपीएफ का नौकरी करता था. और माता गृहस्थी का काम करती थी.पूर्णेन्दु हांसदा तीन भाई बहन थे. जिसमें पूर्णेन्दु हांसदा

सबसे छोटे थे. पूर्णेन्दु हांसदा की प्रारंभिक शिक्षा गांव के ही प्राथमिक विद्यालय पाथरा में 1978 में हुआ. एवं 1983 में घर से 3 किलोमीटर दूर राज्य संपोषित उच्च विद्यालय गंडानाटा में वर्ग 6 में नामांकन दाखिला किया. घर से विद्यालय पैदल ही आना-जाना करते थे. एवं वर्ग 1 से लेकर 9 तक बिना ट्यूशन के ही पढ़ाई किया. मैट्रिक में गणित विषय में थोड़ा सा कमजोर होने के कारण उन्हें गणित विषय का ट्यूशन लेना पड़ा. और अच्छे नंबर से मैट्रिक एग्जाम पास किया. इसके बाद घर से लगभग 40 किलोमीटर दूर घाटशिला महाविद्यालय से आर्ट्स विषय में इंटर पास किया एवं राजनीतिक विज्ञान में उन्होंने बीए पास किया. महाविद्यालय जाने के लिए उन्हें लगभग 12 किलोमीटर घर से साइकिल चलाकर चाकूलिया स्टेशन तक पहुंचाना पड़ता था. उसके बाद वह ट्रेन के माध्यम से घाटशिला पहुंचते थे. इसके बाद घर में परेशानी आई पापा पैसा देना बंद किया. और अपने ही मेहनत पर परिवार को चलना पड़ा था जिसके वजह से उन्होंने पढ़ाई को बंद कर दिया. बचपन से ही पापा आरपीएफ में होने के कारण उन्हें फौजी में जाने का काफी शौक था. जिसके लिए उन्होंने कई बार ट्राई भी किया परंतु नहीं हो पाया. इसके बाद उनके मन में शिक्षक की नौकरी के लिए आगे की पढ़ाई काम करते हुए शुरू किया उन्होंने पीजी कोऑपरेटिव कॉलेज जमशेदपुर से किया. एवं उसके बाद शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय चैनपुर पश्चिम सिंहभूम से किया. अपने जीवन में लगभग 15 से 20 फॉर्म भर चुके थे और सभी में निराशा हाथ लगे. अपनी अंतिम फॉर्म समझकर शिक्षक का फॉर्म भरा. और सफलता हाथ लगी 11 मार्च 2015 को राजमहल प्रखंड के प्राथमिक विद्यालय हाथीगड़ योगदान दिया. इसके बाद 5 जनवरी 2018 को दरला विद्यालय में स्थानांतरित किया गया. एवं 20 फरवरी 2025 को एकल शिक्षक के रूप में प्राथमिक विद्यालय सरायपूरा में स्थानांतरित किया गया है.

परिश्रम और हौसला का दूसरा नाम सब इंस्पेक्टर महादेव उरांव

धनंजय हलदार

राजमहल थाना में पद स्थापित सब इंस्पेक्टर महादेव उरांव एक छोटी सी गांव से निकाल कर आज सब इंस्पेक्टर बने हैं. उन्होंने अपने जीवन में काफी संघर्ष और बीच में ही पढ़ाई को छोड़ना पड़ा. घर में काफी परेशानी आने के बाद भी उन्होंने अपना हौसला कभी नहीं हारे. राज्य के गुमला जिला क्षेत्र के प्रखंड व थाना गुमला गांव हुरहुरिया निवासी महादेव उरांव पिता बीरसाई उरांव है. छः भाई बहन में महादेव उरांव 5 में नंबर में है. और पिताजी खेती गृहस्ती करते थे. महादेव उरांव का प्रारंभिक शिक्षा घर से 1 किलोमीटर दूर सरकारी विद्यालय राजकीय मध्य विद्यालय गढ़टुली

1980 में वर्ग एक में अपना नामांकन किया. एवं गुमला विद्यालय से दसमा पास किया जो घर से 12 किलोमीटर दूर लुथेरन में था. विद्यालय पैदल ही जाना पड़ता था घर की स्थिति को देखते हुए. जब उन्होंने मैट्रिक पास किया और घर से 15 किलोमीटर दूर कार्तिक उरांव महाविद्यालय गुमला में नामांकन करवाया तो पिताजी ने काफी मेहनत से उन्हें एक साइकिल खरीद कर दिया ताकि विद्यालय जाने में परेशानी ना हो. घर के दयनीय स्थिति को देखते हुए उन्हें बीए पार्ट 3 में ही पढ़ाई को छोड़ना पड़ा.कार्तिक उरांव महाविद्यालय गुमला से साइकोलॉजी ऑनर्स कर रहे थे. परंतु बचपन से ही उन्हें फुटबॉल खेलने का शौक था. और फुटबॉल में काफी अच्छे प्लेयर थे इसी बीच बिहार पुलिस का फॉर्म निकला. जब उनकी दौर की समय आई तो उनकी काफी पहले से ही फिटनेस अच्छे थे इसके कारण उन्होंने आसानी से सब कुछ कंप्लीट कर लिया. और 1999 में कांस्टेबल के पद में लोहरदगा जिला में जॉइनिंग की. इसके बाद 2003 में धनबाद जिला में ट्रांसफर हुआ. 2011 में पदोन्नति के साथ एएसआई बने और पोस्टिंग लातेहार जिला में हुआ. दोबारा पदोन्नति के साथ मार्च 2024 में साहिबगंज जिला के राजमहल थाना में सब इंस्पेक्टर के पद में योगदान दिया. इस दौरान सब इंस्पेक्टर महादेव उरांव ने बताया कि आज मैं जो भी यह मेरे पिताजी का देन है. परिवार में कठिनाई भी आई और परेशानी भी हुआ जिसके कारण मुझे पढ़ाई भी छोड़ना पड़ा. लेकिन कभी भी हौसला नहीं हरा. मैं बचपन से ही फुटबॉल खेलने में काफी अच्छा प्लेयर रहा. जिसके कारण आज मैं सब इंस्पेक्टर बना हूं.

जागरूकता के अभाव में आज भी आदिवासी शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़े है?

छवि हेम्ब्रम

सबसे पहले 1982 ई.में 9 अगस्त को वर्किंग ग्रुप ऑफ मूल निवासी का एक सम्मेलन जेनेवा स्वीटजरलैंड में हुई थी.जिसमे विभिन्न देशों के संगठनों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था.जो आदिवासी हितों के लिए कार्य करते थे.इस सम्मेलन में विभिन्न देशों के प्रतिनिधियों ने एक स्वर में आदिवासियों से संबंधित कई समस्याओं को उठाया तथा अशिक्षा, गरीबी व शोषण के खिलाफ व उनकी जीवन शैली , संस्कृति पर हमला,उनकी स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं,मानव अधिकारों का हनन और कई अन्य सामाजिक मुद्दों पर चर्चा हुई और इसके लिए विश्व स्तर पर संगठित होकर आवाज बुलंद

करने का निर्णय लिया.1982 के बाद विश्व स्तर पर कुछ चर्चाएं होती रही.लेकिन इस दिशा में कोई खास प्रगति नही हुई. यह दिवस सबसे पहले अमेरिका में ही 1992 को मनाया गया था.जिसमें उसका अमेरिका के मूल निवासी/आदिवासियों की अस्तित्व ही खत्म करने की योजना थी.उसका विरोध करने के लिए यह दिवस मनाया गया था.संयुक्त राष्ट्र संघ के कुछ सदस्यों ने इसे 9 अगस्त को ही विश्व स्तर पर मनाने का प्रस्ताव रखा.तब से विश्व आदिवासी दिवस 9 अगस्त को मनाया जाता है.

आज भारत में भले ही देश की राष्ट्रीय कई राज्यों के मुख्यमंत्री, केंद्रीय मंत्री राज्य विधानसभा के सदस्य मंत्रीमंडल के सदस्य स्थानीय स्तर पर संसद सदस्य,जिला परिषद सदस्य, पंचायत समिति सदस्य एवं पंचायत के मुखिया आदिवासी ही है.लेकिन आदिवासियों की समस्याएं जस की तस है.इसके कई कारणों के साथ आदिवासियों में जागरूकता की कमी भी मुख्य कारण है.आदिवासी अपने अधिकारों के प्रति सजग नही है.संविधान व विधायिका द्वारा जो अधिकार उन्हें दिया गया है.उन अधिकारों को प्राप्त करने के लिए वे जागरूक नही है.इसलिए आज भी वे शैक्षिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक रूप से पिछड़े है.उनके बीच साक्षरता की प्रतिशत कम है.उच्य शिक्षा के क्षेत्र में जैसे इंजीनियरिंग, मेडिकल, मेनेजमेंट एवं विश्वविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र में उनकी उपस्थिति नही के बराबर है.आज आदिवासियों के विकास के लिए शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में उन्हें आगे बढ़ाने की आवश्यकता है.तथा रूची जगाने की आवश्यकता है.

हौसले ने बनाया बीडीओ, युवाओं के लिए मिसाल बने दिलीप टुडू

जितेंद्र दास

सफलता केवल मेधावी छात्रों की नहीं होती, बल्कि उन लोगों की भी होती है जो अपनी कमजोरियों को मेहनत और दृढ़ संकल्प से ताकत में बदल देते हैं। हिरणपुर के प्रखंड विकास पदाधिकारी दिलीप टुडू की कहानी इसी जज्बे की प्रेरक मिसाल है।गोड्डा जिले के बोआरीजोर प्रखंड के बड़ा डूमर हिल गांव के रहने वाले दिलीप टुडू बताते हैं कि बचपन में पढ़ाई में उनका बिल्कुल मन नहीं लगता था और वे खुद को एक कमजोर छात्र थे। उनके पिता साहेबगंज में पुलिस सेवा में थे। उन्होंने बेटे का नामांकन संत जेवियर्स स्कूल, साहेबगंज में कराया, लेकिन शुरुआत में वहां भी पढ़ाई के प्रति रुचि नहीं बनी।दिलीप टुडू कहते हैं कि समय के साथ उन्होंने अपनी सोच बदली। धीरे-धीरे पढ़ाई के प्रति लगन बढ़ी और फिर उन्होंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा। उच्च शिक्षा पूरी करने के बाद लगातार प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी की और अपने लक्ष्य को हासिल कर लिया। उनकी पहली नियुक्ति कार्यपालक दंडाधिकारी के रूप में

तेनुघाट (बोकारो) में हुई। वर्तमान में वे हिरणपुर प्रखंड विकास पदाधिकारी (बीडीओ) के रूप में अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

विश्व आदिवासी दिवस पर दिलीप टुडू का संदेश –÷कमजोरी कभी मंजिल की बाधा नहीं बनती। यदि लक्ष्य स्पष्ट हो, मेहनत निरंतर हो और आत्मविश्वास बना रहे, तो कोई भी सपना असंभव नहीं रहता।÷उनकी संघर्षगाथा आज आदिवासी समाज ही नहीं, बल्कि हर उस युवा के लिए प्रेरणा है जो परिस्थितियों से नहीं, बल्कि अपने सपनों से पहचान बनाना चाहता है।

जल, जंगल, ज़मीन और आदिवासी अस्मिता

डॉ अन्नपूर्णा झा

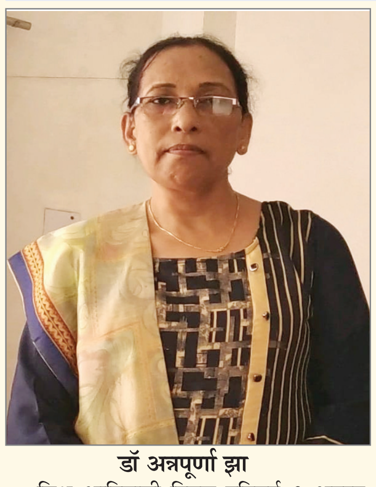

विश्व आदिवासी दिवस प्रतिवर्ष 9 अगस्त को मनाने की घोषणा संयुक्त राष्ट्र महासभा द्वारा 1994 ई. में की गयी।यह दिन पूरे विश्व के आदिवासियों/मूल निवासियों के अस्तित्व,उनके इतिहास, विशिष्ट संस्कृति,भाषा और जीवनशैली की रक्षा करने तथा समाज में उन्हें समान अवसर दिलाने के उद्देश्य से आरंभ किया गया।

कई शताब्दियों तक तथाकथित सभ्य समाज के शोषण, उपेक्षा, अधिकारोंके हनन,उनकी पारंपरिक भूमि और प्राकृतिक अधिकारों से वंचित किये जाने के कारण उनकी भाषाएं, परंपराएं तथा सांस्कृतिक पहचान लुप्त होने लगी थी। अतः उनके संरक्षण और संवर्धन की आवश्यकता महसूस की जाने लगी।

भारत के झारखंड, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश तथा पूर्वोत्तर राज्यों में की आदिवासी समुदाय निवास करते हैं।उन राज्यों में आदिवासियों के अधिकारों की रक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और भूमि संबंधी समस्याओं पर समाज और सरकार का ध्यान आकृष्ट कराने के अलावा उनकी सामाजिक - सांस्कृतिक विशेषताओं एवं पर्यावरण के प्रति उनके योगदान को प्रदर्शित करने के लिए अभियान चलाए जाते हैं।

आदिवासी समुदाय सदा से प्रकृति और पर्यावरण के सबसे निकट रहे हैं।अतः उन्होंने अपनी संस्कृति और जीवनशैली में प्रकृति के साथ तालमेल बनाए रखा है तथा स्वयं को प्रकृति के संरक्षक मानते हुए जल,जंगल और जमीन पर अपना विशेषाधिकार मानते हैं। झारखंड में भी 9 अगस्त को यहां की समृद्ध आदिवासी संस्कृति, परंपरा और संरक्षण दिवस के रूप में आदिवासी दिवस काफी धूमधाम और उत्साह के साथ मनाया जाता है।उस दिन राजधानी सहित अन्य क्षेत्रों में आदिवासी दिवस का आयोजन होता है जहां आदिवासी जननायकों और स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि दी जाती है तथा पारंपरिक शिल्प, भोजन, नृत्य- संगीत का आयोजन होता है।

संताली कला को लोकल से ग्लोबल पहचान दिला रहे हैं घाटशिला के सी.आर. हेम्ब्रम, कैनवास पर उकेर रहे हैं प्रकृति और आदिवासी जीवन का अनूठा रिश्ता

एस.के.झा.सुमन

झारखंड की समृद्ध आदिवासी संस्कृति और कला अब किसी परिचय की मोहताज नहीं है। इसी कड़ी में एक बड़ा नाम उभर कर सामने आया है चुनाराम हेम्ब्रम, जिन्हें कला जगत में सी.आर. हेम्ब्रम के नाम से जाना जाता है। मूल रूप से जमशेदपुर के पास घाटशिला ब्लॉक के गंधनिया गांव के रहने वाले सी.आर. हेम्ब्रम अपनी विशिष्ट संताली पेंटिंग शैली के जरिए आदिवासी समाज, उनकी परंपराओं और प्रकृति प्रेम को कैनवास पर जीवंत कर रहे हैं। वर्तमान में वे रांची स्थित श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय के चित्रकला विभाग में गेस्ट फैकल्टी के तौर पर अपनी सेवाएं दे रहे हैं और नई पीढ़ी को कला की बारीकियों से अवगत करा रहे हैं।

एक छोटे से गांव से निकलकर कला जगत के राष्ट्रीय पटल तक पहुंचने का उनका सफर बेहद प्रेरणादायक रहा है। प्रारंभिक शिक्षा गांव के ही हाई स्कूल से पूरी करने के बाद उन्होंने पटना आर्ट कॉलेज का रुख किया, जहां से बैचलर ऑफ फाइन आर्ट्स की डिग्री हासिल की। कला के प्रति उनकी असीम लगन उन्हें बड़ौदा स्थित प्रतिष्ठित महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय तक ले गई, जहां से उन्होंने मास्टर ऑफ फाइन आर्ट्स की पढ़ाई पूरी की। इस यात्रा के दौरान उन्होंने नवोदय विद्यालय में कला शिक्षक के रूप में भी कार्य किया और कई बच्चों की रचनात्मक प्रतिभा को निखारा।

कैनवास पर संस्कृति, संघर्ष और प्रकृति की कहानी

झारखंड की आदिवासी अस्मिता, प्रकृति और लोकजीवन को रंगों के माध्यम से दुनिया के सामने रखने वाले सी.आर. हेम्ब्रम की कला केवल चित्र नहीं, बल्कि संस्कृति और संघर्ष की जीवंत कहानी है। उनके कैनवास पर जंगल, जमीन, पशु-पक्षी, गांव और आदिवासी जीवन एक-दूसरे से जुड़े दिखाई देते हैं। यही उनकी कला की सबसे बड़ी पहचान है। उनकी कलाकृतियों में संताल समुदाय की जीवनशैली, प्रकृति के प्रति गहरा जुड़ाव और सांस्कृतिक चेतना प्रमुखता से उभरती है।

हेम्ब्रम का मानना है कि कला का उद्देश्य केवल सुंदरता दिखाना नहीं, बल्कि समाज और समय की सच्चाई को सामने लाना भी है। उनकी तूलिका उन सवालों को भी आवाज देती है, जिन्हें अक्सर शब्दों में व्यक्त करना कठिन होता है। जंगल और जमीन के साथ आदिवासी समाज के रिश्ते को वे रंगों और आकृतियों के माध्यम से इस तरह प्रस्तुत करते हैं कि देखने वाला केवल चित्र नहीं देखता, बल्कि उसके पीछे छिपी जीवनशैली और संवेदना को भी महसूस करता है। उनका मानना है कि आदिवासी संस्कृति को केवल संग्रहालयों की दीवारों तक सीमित नहीं रखा जाना चाहिए, बल्कि उसे वैश्विक कला मंच पर सम्मानजनक स्थान मिलना चाहिए। इसी सोच के साथ वे संताली कला को पारंपरिक सीमाओं से बाहर निकालकर नई पीढ़ी और व्यापक समाज तक पहुंचाने का प्रयास कर रहे हैं।

प्रकृति संरक्षण और सामाजिक चेतना का संदेश

सी.आर. हेम्ब्रम की कलाकृतियां मुख्य रूप से संताल जनजाति की जीवनशैली और प्रकृति के साथ उनके गहरे जुड़ाव पर केंद्रित होती हैं। उनकी पेंटिंग्स यह दर्शाती हैं कि आदिवासी समाज किस प्रकार जंगलों, जानवरों और अपने परिवेश के साथ एक अटूट और आत्मीय रिश्ता साझा करता है। उनका उद्देश्य अपनी कला के माध्यम से पर्यावरण और जंगल संरक्षण का संदेश देना तथा समाज में नई चेतना जगाना है। जिस तरह साहित्यकार या कवि अपनी कलम से समाज को दिशा देने का प्रयास करता है, उसी तरह सी.आर. हेम्ब्रम अपनी तूलिका के माध्यम से आदिवासी समाज की आवाज और उसकी सांस्कृतिक विरासत को सामने ला रहे हैं। उनके लिए पेंटिंग महज रंगों और रेखाओं का संयोजन नहीं, बल्कि अपनी जड़ों, पहचान और विरासत को बचाए रखने का माध्यम है।

छात्र जीवन से मिली पहचान, अब नई पीढ़ी को दे रहे दिशा

छात्र जीवन से ही उनकी अनूठी प्रतिभा को सराहा जाता रहा है। पढ़ाई के दौरान लगाई गई उनकी कला प्रदर्शनियों की खबरें प्रमुख समाचार पत्रों में प्रकाशित हुईं। इसके अलावा, दिल्ली से प्रकाशित कला पत्रिका इंडियन क्रिएटिव माइंड ने भी उनके उत्कृष्ट कार्यों को अपनी कवर स्टोरी में प्रमुखता से स्थान दिया। सी.आर. हेम्ब्रम का मानना है कि उच्च स्तरीय कला के गहरे अर्थों को समझना आम लोगों के लिए कभी-कभी चुनौतीपूर्ण हो सकता है। इसलिए उनका निरंतर प्रयास है कि संताली कला शैली को सरल और प्रभावी तरीके से आम जनमानस तक पहुंचाया जाए। वे चाहते हैं कि लोग आदिवासी संस्कृति को केवल एक परंपरा के रूप में न देखें, बल्कि उसकी जीवंतता, संवेदना और प्रकृति से जुड़े दर्शन को समझें। घाटशिला के एक छोटे से गांव से शुरू हुई सी.आर. हेम्ब्रम की कलायात्रा अब संताली कला को व्यापक पहचान दिलाने की दिशा में आगे बढ़ रही है। उनकी तूलिका में जहां अतीत की परंपराएं सांस लेती हैं, वहीं भविष्य की उम्मीदें भी आकार लेती हैं। यही वजह है कि उनके लिए कला लोकल से ग्लोबल तक पहुंचने का माध्यम ही नहीं, बल्कि आदिवासी अस्मिता की आवाज भी बन गई है।

आदिवासी माटी की कहानी को पर्दे तक पहुंचा रहे पंकज मुर्मू

संताली सिनेमा से बॉलीवुड तक बनाई पहचान, 'जोरम' से बॉलीवुड तक पहुंची आदिवासी कलाकार की पहचान

अभिनय से निर्देशन तक, हर किरदार में हुनर संथाली सिनेमा के बहुमुखी कलाकार हैं पंकज मुर्मू

एस.के. झा. सुमन

विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर जब देश-दुनिया आदिवासी समाज की भाषा, संस्कृति, कला और अस्मिता की बात करता है, तब झारखंड की धरती से निकलकर सिनेमा के माध्यम से अपनी सांस्कृतिक पहचान को व्यापक मंच देने वाले कलाकारों की चर्चा भी जरूरी हो जाती है। दुमका के मछाडीह गांव से निकलकर संथाली सिनेमा में अपनी अलग पहचान बनाने वाले *पंकज कुमार मुर्मू* इसी बदलाव की एक सशक्त कहानी हैं।

पंकज मुर्मू केवल अभिनेता नहीं हैं। वह निर्देशक, संपादक, छायाकार और सांस्कृतिक आयोजक के रूप में संथाली सिनेमा को लगातार समृद्ध कर रहे हैं। उनके सिनेमा में संथाली समाज की जिंदगी, भावनाएं, संघर्ष, परंपरा और प्रकृति की झलक दिखाई देती है। यही वजह है कि उनका फिल्मी सफर मनोरंजन से आगे बढ़कर आदिवासी संस्कृति को अभिव्यक्ति देने का माध्यम बन गया है।

गांव की गलियों से शुरू हुआ रचनात्मक सफर

14 जनवरी 1986 को दुमका जिले के जामा प्रखंड के मछाडीह गांव में जन्मे पंकज कुमार मुर्मू के पिता जीवन मुर्मू हैं। बायो-साइंस से इंटरमीडिएट की पढ़ाई करने के साथ उन्होंने कंप्यूटर तकनीक का ज्ञान हासिल किया। तकनीकी समझ और रचनात्मक सोच ने उन्हें फिल्म निर्माण की ओर आकर्षित किया। धीरे-धीरे कैमरा, संपादन और निर्देशन उनके जीवन का हिस्सा बनते चले गए।

पंकज मुर्मू

संथाली सिनेमा को पुरस्कारों से मिली नई पहचान

पंकज मुर्मू के निर्देशन में बनी *'टेटंग जीवी आस रे'* को वर्ष 2011 में जमशेदपुर में आयोजित ट्रस्ट की ओर से सम्मान मिला। इसके बाद वर्ष 2013 में उनकी फिल्म *'जीवी गाती'* को ट्रस्ट की ओर से सर्वश्रेष्ठ फिल्म निर्माण के लिए पुरस्कार मिला। इन उपलब्धियों ने संथाली सिनेमा में उनके रचनात्मक योगदान को स्थापित किया।

संथाली पर्दे से बॉलीवुड तक पहुंची पहचान

पंकज मुर्मू के सफर का महत्वपूर्ण पड़ाव हिंदी सिनेमा भी रहा। वर्ष 2022 में उन्होंने मनोज बाजपेयी अभिनीत चर्चित फिल्म *'जोरम'* में अभिनय किया। आदिवासी जीवन, विस्थापन और संघर्ष जैसे गंभीर सवालों को केंद्र में रखने वाली इस फिल्म से जुड़ना उनके लिए संथाली सिनेमा से राष्ट्रीय फिल्म जगत तक पहुंचने का महत्वपूर्ण अवसर रहा। इसके अलावा 'करम डरे किरया' में मुख्य भूमिका और 'संतु गातु' में अभिनय ने संथाली दर्शकों के बीच उनकी लोकप्रियता को और मजबूत किया। आने वाली फिल्में *'दुखने'* और *'हेन'* को लेकर भी दर्शकों में उत्सुकता है।

पर्दे के सामने से तकनीकी दुनिया तक

पंकज मुर्मू की खासियत उनकी बहुमुखी प्रतिभा है। उन्होंने 'सेंदरा' और 'नुलेदार' जैसी फिल्मों के निर्देशन और संपादन की जिम्मेदारी संभाली। *'एन हो चेदा इन दुलार एत मे'* और *'चाक-चन्दो'* में सहायक निर्देशक व संपादक के रूप में योगदान दिया। *'दुलार धरती'* में अभिनय तथा *'चाक-एम गाती कादिन'* में संपादन के साथ छायांकन भी किया।

'पिरितिया', 'प्रित तीन', 'हाय रे रूप तम', 'इनक दुलार' और 'चान्दो बोंगा दुलार चाक एम बनाव के दा' जैसे प्रोजेक्ट्स में उनके संपादन कौशल की भूमिका रही है।

विश्व आदिवासी दिवस पर कला के जरिए अस्मिता की आवाज

विश्व आदिवासी दिवस केवल उत्सव का अवसर नहीं, बल्कि आदिवासी समाज की पहचान, भाषा, संस्कृति और अधिकारों को समझने का दिन भी है। ऐसे समय में पंकज मुर्मू का सफर यह बताता है कि अपनी भाषा और संस्कृति में भी सिनेमा की बड़ी संभावनाएं मौजूद हैं। उनका मानना है कि समाज को आगे बढ़ाने के लिए सोच का दायरा बड़ा करना जरूरी है। उनका प्रयास है कि आधुनिक फिल्म तकनीक के माध्यम से संथाली भाषा और आदिवासी जीवन की कहानियां अधिक से अधिक दर्शकों तक पहुंचें।

गांव की माटी से शुरू होकर संथाली सिनेमा और फिर बॉलीवुड तक पहुंचा पंकज मुर्मू का सफर इस बात की मिसाल है कि स्थानीय भाषा और संस्कृति से जुड़ी प्रतिभा राष्ट्रीय मंच पर अपनी जगह बना सकती है। विश्व आदिवासी दिवस पर उनका सफर संथाली युवाओं के लिए प्रेरणा भी है और अपनी सांस्कृतिक जड़ों को दुनिया तक पहुंचाने की उम्मीद भी।

साहित्य से मैदान तक : आदिवासी युवा बदल रहे हैं साहित्य, कला और खेल की दुनिया

एस.के. झा. सुमन

मांदर की थाप पर थिरकते पारंपरिक कदमों से लेकर आधुनिक सिनेमा के स्क्रीन, खेल के मैदान और देश की सबसे कठिन परीक्षाओं के पन्नों तक झारखंड की उपराजधानी दुमका के आदिवासी युवाओं ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाना शुरू कर दिया है। पुरानी रूढ़ियों को तोड़कर अपनी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत को साथ लिए दुमका के ये नए उभरते सितारे आज वैश्विक मंच पर चमक रहे हैं। इस विश्व आदिवासी दिवस पर आइए रूबरू होते हैं दुमका जिले के उन चुनिंदा चेहरों से, जो अपनी साहित्य, कला और खेल के दम पर न सिर्फ संताल परगना बल्कि पूरे देश का नाम रोशन कर रहे हैं।

संताली संस्कृति के गौरव : धर्मंजय हेंब्रम की लेखनी को मिली राष्ट्रीय पहचान

झारखंड की माटी से जुड़े एक ऐसे जाबांज युवा साहित्यकार जिसने अपनी कलम से संताली साहित्य को नई ऊंचाइयों पर पहुँचाया है। दुमका के छोटे से गाँव के किसान परिवार में जन्मे

धर्मंजय हेंब्रम

धर्मंजय हेंब्रम ने अपनी रचनाओं में आदिवासी जीवन, खेती-किसानी, प्रकृति और प्रेम को जीवंत किया है। उनके गीत जागा रे पाहायान को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मन की बात कार्यक्रम में विशेष स्थान दिया, जिससे संथाली लोक गीतों को राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली। धर्मंजय न केवल मौलिक लेखन कर रहे हैं, बल्कि महत्वपूर्ण पुस्तकों का संथाली में अनुवाद कर दो संस्कृतियों को जोड़ने का काम भी कर रहे हैं। भाषा संरक्षण के प्रति उनका यह समर्पण पूरी युवा पीढ़ी के लिए एक अनूठी प्रेरणा है।

मानुवेल सोरेन

शिक्षक पद से सेवानिवृत्ति के बाद नई अलख : आदिवासी कला से गांव के बच्चों को मिल रही नई पहचान

सरकारी सेवा से सेवानिवृत्ति के बाद आराम की जिंदगी चुनने के बजाय जामा प्रखंड के अंतर्गत आने वाले गांव कुकुरतोपा के मानुवेल सोरेन समाज और संस्कृति की नई तस्वीर गढ़ रहे हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य और आत्मनिर्भरता के साथ वे आदिवासी कला को नई पीढ़ी तक पहुंचाने में जुटे हैं। गांव में सेमिनार के जरिए अभिभावकों को शिक्षा के प्रति जागरूक करने के साथ महिलाओं को साबुन, सर्फ और फिनाइल बनाने का प्रशिक्षण देकर आत्मनिर्भर बनाया जा रहा है।

मानुवेल सोरेन ने 'वीर बाजाल सांस्कृतिक आखाड़ा' की स्थापना कर बच्चों को मांदर, नगाड़ा और हारमोनियम का प्रशिक्षण शुरू किया है। बाँसकनली और नकटी जैसे गांवों में बच्चे सोहराय व जादोपटिया जैसी पारंपरिक चित्रकला सीख रहे हैं। उनकी यह पहल बच्चों को अपनी जड़ों से जोड़ने के साथ आदिवासी संस्कृति को नई पहचान देने की दिशा में मिसाल बन रही है।

गरीबी को मात दे ओलंपिक का सपना बुन रही तीरंदाज मेघा बेसरा

आदिवासियों के खून में खेल बसता है और दुमका के युवा इसे वैश्विक पहचान दे रहे हैं। तंगहाली को पीछे छोड़ झारखंड की आदिवासी तीरंदाज मेघा बेसरा आज युवाओं के लिए प्रेरणा बन चुकी हैं। एक साधारण सिविल मिस्त्री शुकरा बेसरा की बेटी मेघा वर्तमान में दुमका सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में प्रशिक्षण ले रही हैं।

उन्होंने ऑल इंडिया इंटर यूनिवर्सिटी गेम्स 2024 (ओडिशा) में कांस्य और हाल ही में खेलो इंडिया ट्रायबल गेम्स 2026 (रायपुर) में एक रजत और दो कांस्य पदक जीतकर राज्य का मान बढ़ाया है। विश्व आदिवासी दिवस पर मेघा ने कहा कि उनका अंतिम लक्ष्य ओलंपिक में भारत का प्रतिनिधित्व कर देश का नाम रोशन करना है।

अभावों को मात देकर देश का मान बढ़ाते राष्ट्रीय तीरंदाज दिनेश मुर्मू

जिले के घासीपुर गांव के एक होनहार आदिवासी युवा दिनेश मुर्मू की कहानी प्रेरणा देती है। एक अत्यंत गरीब किसान परिवार से आने वाले दिनेश ने वर्ष 2017 में तीरंदाजी (आर्चरी) की शुरुआत की। पिछले 3 वर्षों से दुमका के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस में प्रशिक्षण ले रहे दिनेश आज एक राष्ट्रीय स्तर के तीरंदाज हैं। उन्होंने नेशनल स्कूल गेम्स, जूनियर नेशनल आर्चरी चैंपियनशिप और खेलो इंडिया ट्राइबल्स गेम्स (2026) जैसी प्रतिष्ठित प्रतियोगिताओं में कई गोल्ड, सिल्वर और ब्रॉन्ज मेडल जीतकर देश-प्रदेश का मान बढ़ाया है। विपरीत परिस्थितियों से लड़कर सफलता पाने वाले दिनेश का अगला लक्ष्य भारत के लिए ओलंपिक में मेडल जीतना है।

चाईबासा के सुदूर गांव से निकलकर देश में तीरंदाजी का डंका बजा रहे हैं राजू

चाईबासा के सुदूर गांव राईहातु के रहने वाले राजू बानरा आज अपनी अचूक तीरंदाजी के दम पर देश के शीर्ष खिलाड़ियों को टक्कर दे रहे हैं।

बेहद गरीब किसान परिवार से आने वाले राजू पिछले 5 वर्षों से %सेंटर ऑफ एक्सीलेंस दुमका% में कड़ा प्रशिक्षण ले रहे हैं। राष्ट्रीय स्तर के इस तीरंदाज ने हाल ही में ऑल इंडिया इंटर यूनिवर्सिटी चैंपियनशिप (2024-25 और 2025-26) में शानदार प्रदर्शन करते हुए दो सिल्वर और एक ब्रॉन्ज मेडल अपने नाम किया है।

झारखंड के ग्रामीण इलाकों में बदल रही तस्वीर, नेतृत्व की नई पहचान बना रहीं महिलाएं

राकेश कुमार चन्दन।

कभी झारखंड के ग्रामीण इलाकों में आदिवासी महिलाओं की भूमिका घर और परिवार तक सीमित मानी जाती थी। लेकिन बदलते समय के साथ यह तस्वीर तेजी से बदल रही है। शिक्षा के बढ़ते अवसरों ने आदिवासी महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के साथ उन्हें सामाजिक और राजनीतिक नेतृत्व की नई राह भी दिखाई है। अब गांव की आदिवासी बेटियां और महिलाएं न केवल उच्च शिक्षा हासिल कर रही हैं, बल्कि पंचायत की जिम्मेदारी संभालने के बाद सक्रिय राजनीति में भी अपनी मजबूत पहचान बना रही हैं। सरैयाहाट प्रखंड में इसकी कई मिसालें सामने हैं।

प्रखंड प्रमुख ललिता मरांडी निर्वाचित होने के बाद लगातार क्षेत्र के विकास को लेकर सक्रिय हैं। पंचायत

प्रतिनिधियों और अधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित कर वह ग्रामीण क्षेत्रों की समस्याओं को प्रशासन के सामने रखने और उनके समाधान की दिशा में काम कर रही हैं। सड़क, स्वास्थ्य, शिक्षा, पेयजल और अन्य बुनियादी सुविधाओं को लेकर उनकी सक्रियता बताती है कि अब आदिवासी महिलाएं केवल प्रतिनिधि बनने तक सीमित नहीं हैं, बल्कि विकास की योजनाओं को जमीन पर उतारने में भी अपनी भूमिका निभा रही हैं।

इसी तरह बसंती मुर्मू ने पंचायत स्तर की राजनीति में अपनी मजबूत पकड़ बनाई है। दो टर्म तक मुखिया का पद संभालने के बाद अब उन्होंने पंचायत की राजनीति से आगे बढ़कर पार्टी से जुड़कर सक्रिय राजनीति में कदम रखा है। लंबे समय तक ग्रामीणों के बीच रहकर काम करने के अनुभव को अब वह व्यापक राजनीतिक मंच पर इस्तेमाल कर रही हैं। उनका राजनीतिक सफर इस बदलाव का उदाहरण है कि पंचायतों में नेतृत्व का अनुभव हासिल करने वाली आदिवासी महिलाएं अब मुख्यधारा की राजनीति की ओर भी बढ़ रही हैं।

वहीं प्रीति हांसदा नई पीढ़ी की उस तस्वीर को सामने रखती हैं, जिसमें शिक्षा और नेतृत्व साथ-साथ आगे बढ़ रहे हैं। पोस्ट ग्रेजुएट शिक्षा हासिल करने वाली प्रीति हांसदा क्षेत्र की सबसे कम उम्र की मुखिया के रूप में पंचायत की जिम्मेदारी संभाल रही हैं। उच्च शिक्षा के बाद सीधे स्थानीय शासन व्यवस्था में नेतृत्व की भूमिका में पहुंचना ग्रामीण क्षेत्र की बदलती सामाजिक सोच को दर्शाता है। युवा उम्र में पंचायत की जिम्मेदारी संभाल रहीं प्रीति के सामने विकास के साथ-साथ युवाओं और महिलाओं को पंचायत की गतिविधियों से जोड़ने की भी चुनौती है।

शिक्षा ने बदली सोच, राजनीति में बढ़ी भागीदारी

ग्रामीण झारखंड में शिक्षा के विस्तार और पंचायतों में महिलाओं के लिए आरक्षण ने आदिवासी महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व को नई दिशा दी है। पहले जहां महिलाएं राजनीतिक गतिविधियों में पर्दे के पीछे दिखाई देती थीं, वहीं अब वे चुनाव लड़ने, पंचायतों का नेतृत्व करने और अधिकारियों के साथ बैठकर विकास योजनाओं पर चर्चा करने में आगे आ रही हैं। इन महिलाओं की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि उन्होंने प्रतिनिधित्व को जिम्मेदारी में बदलने की कोशिश की है। पंचायत से शुरू हुआ नेतृत्व अब प्रखंड और पार्टी राजनीति तक पहुंच रहा है। इससे आदिवासी समाज की नई पीढ़ी की बेटियों के सामने भी यह संदेश जा रहा है कि शिक्षा हासिल कर वे अपने गांव और क्षेत्र के विकास में नेतृत्व की भूमिका निभा सकती हैं।

वर्ष- 08 | अंक -315 दुमका | epaper.santalexpress.com | santalexpress20@gmail.com | 10 अगस्त 2026, सोमवार | पृष्ठ 08 | मूल्य : 2 रुपये

जेपीएससी के तीनों सदस्यों का इस्तीफा, राज्यपाल ने स्वीकार किया

रांची । जेपीएससी के तीन वरिष्ठ सदस्यों अजीता भट्टाचार्य, डॉ जमील अहमद और अनिमा हांसदा ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। तीनों सदस्यों ने अपना त्यागपत्र राज्यपाल को भेज दिया है। राज्यपाल ने राज्य सरकार के अनुशंसा के आलोक में झारखंड लोक सेवा आयोग के सदस्य डॉ अजिता भट्टाचार्य, डॉ अनिमा हांसदा एवं डॉ जमाल अहमद द्वारा अपने पद से दिए गए त्यागपत्र को स्वीकार कर लिया है। जेपीएससी के तीन सदस्यों डॉ अजिता भट्टाचार्य, डॉ अनिमा हांसदा और डॉ जमाल अहमद ने भी अपने पद से इस्तीफा देते हुए राज्यपाल को त्यागपत्र भेज दिया है। इन तीनों सदस्यों को सीआईडी ने पूछताछ के लिए समन भेजा था। 10 अगस्त को डॉ अजिता भट्टाचार्य से सीआईडी की टीम पूछताछ करेगी। उल्लेखनीय है कि जेपीएससी की 14वीं सिविल सेवा परीक्षा और अन्य परीक्षाओं के संचालन में बड़े पैमाने पर धांधली, ओएमआर शीट में छेड़छाड़ और अयोग्य अभ्यर्थियों को पास कराने के आरोपों की जांच सीआईडी कर रही है।

सूचना

आज के अखबार के साथ आदिवासी दिवस विशेषांक संग्लन है, लेना न भूले.।

छात्रों की सरकार से वार्ता बेनतीजा आज करेंगे विधानसभा का घेराव

संवाददाता

रांची । जेएसएससी-जेपीएससी परीक्षा विवाद को लेकर आंदोलन कर रहे छात्रों और राज्य सरकार के बीच रविवार को दूसरी दौर की वार्ता हुई। छात्रों की विभिन्न मांगों पर विस्तार से चर्चा हुई। सरकार और छात्रों के बीच करीब पांच घंटे तक चली बातचीत में कोई समाधान नहीं निकल पाया है।
मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू ने दावा किया कि छात्रों की करीब 98प्रतिशत मांगों पर सहमति बन गई है।
बैठक में 14वीं जेपीएससी परीक्षा को लेकर बैठक में सरकार ने जांच कराने पर सहमति जताई. मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू के मुताबिक, मामले की जांच ईडी और सीआईडी करेगी। 14वीं जेपीएससी परीक्षा को रद्द करने की मांग पर सरकार ने तत्काल परीक्षा रद्द करने के बजाय इस पर विचार करने की बात कही है। वहीं, छात्रों का कहना है कि 50प्रतिशत से अधिक मांगों को सरकार ने स्वीकार किया है, लेकिन कई प्रमुख और निर्णायक मुद्दों पर अब भी सहमति नहीं बन पाई है। छात्रों ने आंदोलन खत्म करने से इनकार कर दिया।
छात्र प्रतिनिधियों ने ऐलान किया कि 10 अगस्त को झारखंड विधानसभा का घेराव किया जाएगा।
देवेन्द्रनाथ महतो ने कहा है की सिर्फ मौखिक आश्वासन के आधार पर छात्रों का अनशन और आंदोलन समाप्त नहीं होगा। उन्होंने स्पष्ट कहा कि जब तक सरकार की ओर से छात्रों की मांगों पर लिखित रूप से जवाब नहीं दिया जाता और मांगों को पूरा करने की दिशा में ठोस निर्णय नहीं लिया जाता, तब तक उनकी अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल जारी रहेगी।

छात्रों की बात, छात्रों के साथ : हेमंत सोरेन ने शुरू किया जनभागीदारी अभियान

रांची । जेपीएससी-जेएससी की परीक्षा व्यवस्था और भर्ती प्रक्रिया को लेकर छात्रों के बीच चल रही बहस के बीच मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने सीधे युवाओं से संवाद का रास्ता चुना है। मुख्यमंत्री ने रविवार को छात्रों की बात-छात्रों के साथ अभियान की शुरुआत करते हुए राज्य के युवाओं से परीक्षा व्यवस्था की कमियों, अपने अनुभवों और सुधार के सुझाव साझा करने की अपील की। इसके लिए सरकार ने संवाद पोर्टल शुरू किया है।मुख्यमंत्री ने कहा कि छात्रों के हर सुझाव का अध्ययन किया जायेगा और विशेषज्ञों के परीक्षण के बाद जहां संभव होगा, उसे नियमों और संवैधानिक प्रावधानों के अनुरूप तय समय सीमा में लागू करने का प्रयास किया जायेगा।मुख्यमंत्री ने कहा कि झारखंड के लाखों युवाओं के सपने सरकार की सबसे बड़ी जिम्मेदारी हैं। वर्षों की मेहनत के बाद प्रतियोगी परीक्षा देने वाले छात्र के साथ केवल उसका भविष्य नहीं, बल्कि पूरे परिवार की उम्मीदें जुड़ी होती हैं। इसलिए शिक्षा और प्रतियोगी परीक्षा व्यवस्था को पारदर्शी, निष्पक्ष, विश्वसनीय और समयबद्ध बनाना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में है।मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य गठन के बाद पहली बार सरकार ने जेपीएससी और अन्य भर्ती परीक्षाओं की प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी और जवाबदेह बनाने के लिए नयी नियमावली तैयार की।

विधानसभा घेराव : जिला प्रशासन की छात्रों से अपील, कानून हाथ में न लें

रांची । दस अगस्त को विभिन्न छात्र संगठनों की ओर से प्रस्तावित विधानसभा घेराव को देखते हुए रांची जिला प्रशासन ने छात्रों से शांतिपूर्ण और वैधानिक तरीके से अपनी बात रखने की अपील की है। जिला प्रशासन की ओर से रविवार को जारी प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया है कि झारखंड विधानसभा परिसर के 750 मीटर के दायरे में अनुमंडल पदाधिकारी, सदर रांची की ओर से बीएनएस की धारा लागू की गयी है। इसमें झारखंड हाइकोर्ट, रांची को इस प्रतिबंध से अलग रखा गया है।जिला प्रशासन ने स्पष्ट किया है कि धारा 163 लागू होने के कारण विधानसभा के निर्धारित क्षेत्र में किसी भी प्रकार का विरोध प्रदर्शन, धरना आदि करना गैरकानूनी होगा।

जनजातीय समाज के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा स्वास्थ्य और कौशल विकास जरुरी : राज्यपाल

आदिवासी महोत्सव आदिवासी समाज के अस्तित्व पहचान और अधिकारों का उत्सव : हेमंत सोरेन

राज्यपाल और मुख्यमंत्री ने किया झारखंड आदिवासी महोत्सव का उद्घाटन

संवाददाता

रांची । विश्व आदिवासी दिवस के मौके पर राजधानी रांची के मोरहाबादी मैदान में दो दिवसीय झारखंड आदिवासी महोत्सव-2026 का रविवार को आगाज हुआ। उद्घाटन समारोह में राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए, जबकि मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन भी कार्यक्रम में मौजूद रहे।
मौके पर राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने कहा कि जनजातीय समाज की समृद्ध संस्कृति, परंपराएं, जीवन-मूल्य एवं प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व की चेतना की विशिष्ट पहचान हैं। उन्होंने कहा कि जनजातीय समाज के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा, स्वास्थ्य, पोषण, कौशल विकास तथा आर्थिक सशक्तीकरण के क्षेत्रों में निरंतर प्रयास आवश्यक हैं।
राज्यपाल ने कहा कि झारखण्ड का जनजातीय समाज सदियों से प्रकृति के संरक्षण एवं संवर्धन का संदेश देता रहा है। आज जब पूरा विश्व जलवायु परिवर्तन एवं पर्यावरणीय संकट जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है, तब जनजातीय जीवन-दर्शन सम्पूर्ण मानवता के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उन्होंने कहा कि विकास की गति को बनाए रखते हुए पर्यावरण एवं प्राकृतिक विरासत के संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित करना आवश्यक है।
मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने आदिवासी महोत्सव को सिर्फ संस्कृति और परंपरा का उत्सव नहीं, बल्कि आदिवासी समाज के अस्तित्व, पहचान और अधिकारों के प्रति संकल्प का उत्सव बताया है। उन्होंने जल, जंगल, जमीन और पहचान की रक्षा को आने वाली पीढ़ियों के लिए जरूरी बताया।

आदिवासी संस्कृति प्रकृति के साथ जीने का दर्शन : शिल्पी

संताल एक्सप्रेस

रांची। कृषि मंत्री शिल्पी नेहा तिर्की ने विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर रविवार को मोरहाबादी मैदान में आयोजित दो दिवसीय आदिवासी महोत्सव का अवलोकन किया। इस दौरान उन्होंने महोत्सव में लगाए गए विभिन्न स्टॉलों का भ्रमण किया और झारखंड की समृद्ध एवं गौरवशाली आदिवासी संस्कृति, परंपरा, कला, प्रकृति और जीवन-दर्शन को करीब से देखा। मंत्री ने कहा कि आदिवासी संस्कृति केवल हमारी पहचान नहीं है, बल्कि यह प्रकृति के साथ संतुलित और सामंजस्यपूर्ण जीवन जीने का दर्शन भी है। हमारी परंपराओं में प्रकृति के प्रति सम्मान, सामुदायिक भावना, सह-अस्तित्व और आने वाली पीढ़ियों को अपनी जड़ों से जोड़ने का संदेश निहित है।महोत्सव में झारखंड के कलाकारों द्वारा प्रस्तुत पेंटिंग्स एवं विभिन्न कलाकृतियों ने आदिवासी जीवन, संघर्ष, प्रकृति के साथ गहरे जुड़ाव और सांस्कृतिक विरासत को जीवंत रूप देने का सुंदर प्रयास किया है। मंत्री ने कलाकारों की रचनात्मकता की सराहना करते हुए कहा कि प्रत्येक चित्र और कलाकृति हमारी उस गौरवशाली विरासत की कहानी कहती है, जिसकी जड़ें सदियों पुरानी हैं। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन हमारी कला, संस्कृति और परंपराओं को व्यापक मंच प्रदान करने के साथ-साथ युवा पीढ़ी को अपनी समृद्ध विरासत से परिचित कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। झारखंड की आदिवासी कला और संस्कृति को संरक्षित एवं प्रोत्साहित करना हम सभी की किया कि आइए, अपनी गौरवशाली आदिवासी विरासत को संजोने, उसका सम्मान करने और आने वाली पीढ़ियों तक इसे गर्व के साथ पहुंचाने का संकल्प लें।

जेपीएससी सीटों को बेचा गया है, जांच हुई तो कई बड़े चेहरे होंगे बेनकाब : जयराम महतो

संताल एक्सप्रेस

रांची। झारखंड लोकतांत्रिक क्रांतिकारी मोर्चा (जेएलकेएम) के सुप्रीमो और विधायक जयराम महतो ने जेपीएससी-जेएसएससी परीक्षाओं में कथित भ्रष्टाचार को लेकर चल रहे छात्र-अभ्यर्थियों के आंदोलन पर सरकार को आड़े हाथों लिया है। उन्होंने आरोप लगाया कि पिछले 15 दिनों से छात्र-अभ्यर्थी लगातार आंदोलनरत हैं, लेकिन सरकार इस गंभीर मुद्दे के प्रति बेहद असंवेदनशील बनी हुई है। इसका मूल कारण जेपीएससी की सीटों को कथित तौर पर 50-60 लाख रुपये लेकर बेचे गए हैं। इतनी बड़ी रकम के कथित घोटाले को सिर्फ अभय तिवारी पचा नहीं सकते। और

सरकार जानती है यदि पूरे मामले की उच्चस्तरीय जांच हुई तो कई बड़े बागड़ बिल्ले के नाम सामने आयेंगे। उनके चेहरे बेनकाब हो सकते हैं। शायद यही वजह है कि सरकार पूरे मामले की उच्चस्तरीय जांच कराने से बच रही है। जयराम महतो रविवार को पुराना विधानसभा परिसर में एक दिवसीय निर्जला उपवास के दौरान मीडिया से बोल रहे थे। महतो ने कहा कि यह बेहद दुखद है कि छात्र अभ्यर्थी आमरण अनशन में है। स्थिति बिगड़ रही है। लेकिन सरकार की ओर से उच्च शिक्षा मंत्री सोनू सुदिव्य जैसे लोग छात्र-अभ्यर्थियों के आंदोलन को राजनीति करार दे रहे हैं। उन्होंने कहा कि यदि आंदोलन राजनीतिक है तो सरकार यह जांच करा ले कि धरनास्थल पर कौन राजनीतिक है और कौन गैर-राजनीतिक। उन्होंने सरकार से मांग की कि छात्र-अभ्यर्थी जिस तरह अपनी मांगों को लेकर लगातार आंदोलन पर डटे हुए हैं, उनकी मांगों को जल्द पूरा किया जाए। उन्होंने चेतावनी दी कि स्थिति लगातार बदतर होती जा रही है। अगर आंदोलन के दौरान किसी तरह की अप्रिय घटना होती है या किसी छात्र-अभ्यर्थी की जान जाती है तो इसकी पूरी जिम्मेदारी सरकार की होगी।

उन्होंने स्वास्थ्य मंत्री इरफान अंसारी के उस बयान पर भी पलटवार किया, जिसमें मंत्री ने बीते दिनों कहा था कि झारखंड में कहीं भी जेपीएससी पेपर लीक नहीं हुआ है। जयराम महतो ने कहा कि मंत्री इरफान अंसारी हमेशा, मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को राम और खुद को हनुमान बताने के चक्कर में इस तरह के बयान देते रहते हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि किसी भी तथ्य पर बयान देने से पहले मंत्री उसका ठीक से अध्ययन नहीं करते।लेकिन देश-विदेश की मीडिया वहां मौजूद है।

बीसीसीएल प्रबंधन और सीआईएसएफ कराते हैं कोयला चोरी : इरफान अंसारी

कतरास। बीसीसीएल प्रबंधन व सीआईएसएफ कोयला चोरी कराते हैं। छाताबाद भू-धंसान की घटना के लिए अवैध खनन जिम्मेवार है। प्रभावित परिवारों को उचित मुआवजा दिया जाय। उन्हें आस - पास के क्षेत्रों में ही बसाया जाय। स्वास्थ्य मंत्री इरफान अंसारी रविवार को छाताबाद भू- धंसान प्रभावित क्षेत्र का निरीक्षण करने पहुंचे। इसके पूर्व छाताबाद कैलूडीह स्थित जीटीएस आउटसोर्सिंग में हैवी ब्लास्टिंग के खिलाफ धरना दे रहे लोगों का समर्थन किया। आयोजित सभा को संबोधित करते हुए कहा कि छाताबाद में भू-धंसान की घटना काफी निंदनीय है। उन्होंने भू-धंसान के लिए बीसीसीएल प्रबंधन को जिम्मेदार ठहराया। कहा कि बीसीसीएल प्रबंधन सचेत रहता तो ऐसी घटना नहीं होती। घटना की पूरी जिम्मेदारी बीसीसीएल प्रबंधन की है। उन्होंने कहा कि धनबाद और बाघमारा में सांसद,विधायक भाजपा के हैं, इसमें कोई उम्मीद करना बेमानी होगी। बीसीसीएल की मनमानी नहीं चलने दी जाएगी। उन्होंने कहा कि भू-धंसान प्रभावित लोगों को छाताबाद के आसपास बसाना होगा। बीसीसीएल के पास जमीन नहीं है तो सरकार से बात करें। बीसीसीएल प्रबंधन लोगों को डराना धमकाना बंद करें। छाताबाद के निरीक्षण की पूरी जानकारी सरकार के मुख्यमंत्री को सौंपेंगे। यहां भयानक घटना हुई है। दर्जनों लोगों का आशियाना ज़मींदोज़ हो गया। सांसद, विधायक की जिम्मेदारी है कि संकट में इनके आंसू पोछे। सांसद विधायक नहीं करते हैं तो बताएं इरफान अंसारी जिंदा है। आपदा विभाग के मंत्री होने के नाते मैं अपनी जिम्मेदारी से नहीं भाग सकता हूं छाताबाद मे मंत्री इरफ़ान अंसारी के साथ प्रदेश कांग्रेस महा सचिव किरण महतो जी, मदन महतो , प्रदेश प्रवक्ता प्रदीप पाण्डेय आदि साथ थे।

रांची में निकली तिरंगा यात्रा राष्ट्रप्रेम और एकता का दिया संदेश

संताल एक्सप्रेस

रांची । 'हर घर तिरंगा' अभियान के तहत भाजपा की ओर से रविवार को रांची के मोरहाबादी मैदान से शहीद अल्बर्ट एक्का चौक तक भव्य तिरंगा यात्रा निकाली गई। प्रदेश अध्यक्ष आदित्य साहू के नेतृत्व में आयोजित इस यात्रा में हजारों भाजपा कार्यकर्ताओं और आम लोगों ने हाथों में तिरंगा लेकर भाग लिया। यात्रा के दौरान भारत माता की जय और वंदे मातरम के नारों से पूरा मार्ग राष्ट्रभक्ति के रंग में रंगा नजर आया। तिरंगा यात्रा के माध्यम से राष्ट्र की एकता, अखंडता और गौरव का संदेश दिया गया। इस दौरान प्रदेश अध्यक्ष आदित्य साहू ने कहा कि प्रधानमंत्री के नेतृत्व में 'हर घर तिरंगा' अभियान राष्ट्रप्रेम, राष्ट्रीय एकता और जनभागीदारी का जनआंदोलन बन चुका है। तिरंगा यात्रा राष्ट्रीय ध्वज के सम्मान का प्रतीक होने के साथ लोगों में देशभक्ति की भावना को मजबूत करती है। उन्होंने कहा कि यह अभियान सामाजिक समरसता, राष्ट्रीय एकता और सद्भावना का संदेश लेकर घर-घर, गांव-गांव और शहर-शहर पहुंच रहा है। उन्होंने लोगों से अपने घर और प्रतिष्ठानों पर तिरंगा फहराने तथा राष्ट्र की एकता, अखंडता और गौरव के इस

अभियान को जन-जन तक पहुंचाने में सहभागी बनने का आह्वान किया। संगठन महामंत्री कर्मवीर सिंह ने कहा कि तिरंगा केवल ध्वज नहीं, बल्कि देश का गौरव है। तिरंगा यात्रा राष्ट्र की एकता, अखंडता और गौरव के प्रति सामूहिक प्रतिबद्धता का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रभक्ति, एकता और देश के प्रति समर्पण की भावना से ओत-प्रोत यह यात्रा हर भारतीय के हृदय में तिरंगे के सम्मान को और मजबूत करने का संदेश दे रही है। रक्षा राज्य मंत्री ने कहा कि तिरंगा देश की आन, बान और शान है। हाथ में तिरंगा आते ही मन में देश के प्रति गौरव और सम्मान की भावना पैदा होती है। उन्होंने कहा कि जब देशवासी एक साथ भारत माता की जय और वंदे मातरम का उद्घोष करते हैं, तो राष्ट्रभक्ति की भावना और मजबूत होती है। उन्होंने देश की सीमाओं पर तैनात जवानों का उल्लेख करते हुए कहा कि हजारों किलोमीटर लंबी सीमाओं पर सैनिक बेहद कठिन परिस्थितियों में देश की रक्षा कर रहे हैं। माइनस 40 डिग्री तापमान में भी जवान अपने कर्तव्य से पीछे नहीं हटते। उनके लिए सबसे ऊपर देश और भारत माता है। ऐसे में प्रत्येक नागरिक का भी कर्तव्य है कि वह राष्ट्र के प्रति अपने दायित्व को समझे। रक्षा राज्य मंत्री ने कहा कि स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर देशभर में तिरंगा यात्राएं निकाली जा रही हैं। इनका उद्देश्य लोगों में राष्ट्रीय भावना और देश के प्रति जागरूकता को मजबूत करना है। तिरंगा यात्रा में प्रदेश उपाध्यक्ष राकेश प्रसाद, बालमुकुंद सहाय, प्रदेश महामंत्री गणेश मिश्र, मनोज सिंह, विधायक नवीन जायसवाल, सीपी सिंह, नीरा यादव, प्रदेश मंत्री सुनीता सिंह, पूर्व विधायक जीतू चरण राम, अनंत कुमार ओझा, रांची की मेयर रोशनी खलखो, संजीव विजयवर्गीय, आरती कुजूर, सुबोध सिंह गुड्डु, केके गुप्ता, शोभा यादव, वरुण साहू, सीमा सिंह, जितेंद्र वर्मा सहित कई वरिष्ठ नेता व कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

शादी का झांसा देकर महिला का यौन शोषण और पैसे की ठगी का आरोप, गिरफ्तार

जमशेदपुर। मानगो थाना पुलिस ने शादी का भरोसा देकर एक महिला का कथित रूप से यौन शोषण करने और उससे रुपये लेने के मामले के आरोपित युवक दिवेन्दु दास रॉय को गिरफ्तार कर लिया है।पुलिस ने रविवार को गिरफ्तारी के बाद आरोपित को आवश्यक कानूनी प्रक्रिया पूरी कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया।मानगो थाना प्रभारी विनय कुमार ने बताया कि महिला की शिकायत पर आरोपित के खिलाफ मामला दर्ज किया गया था। शिकायत में महिला ने आरोप लगाया था कि दिवेन्दु दास रॉय ने शादी करने का भरोसा देकर उसके साथ शारीरिक संबंध बनाए और इस दौरान उससे रुपये भी लिए। बाद में शादी से मुकरने पर महिला ने पुलिस से शिकायत की।मामला दर्ज होने के बाद पुलिस ने शिकायत में लगाए गए आरोपों की जांच शुरू की। अनुसंधान के दौरान पुलिस ने उपलब्ध साक्ष्यों और मामले से जुड़े तथ्यों की पड़ताल की। जांच में आरोपित की संलिप्तता सामने आने के बाद पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तारी के बाद उसे न्यायालय में पेश किया गया, जहां से न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया।पुलिस जांच में आरोपित का पूर्व का मामला भी सामने आया है। पुलिस के अनुसार, पश्चिम बंगाल के पुरुलिया जिले के कोर्टशिला थाना में भी दिवेन्दु दास रॉय के खिलाफ वर्ष 2024 में मामला दर्ज किया गया था।

सड़क दुर्घटना में 13 वर्षीय किशोर की मौत

खूंटी। तोरपा-खूंटी-सिमडेगा मुख्य पथ पर तोरपा थाना क्षेत्र के ममरला गांव के समीप रविवार सुबह हुए सड़क हादसे में 13 वर्षीय किशोर अनूप तोपनो की मौत हो गई। मृतक खसुआटोली गांव का रहने वाला था।जानकारी के अनुसार अनूप शनिवार को अपने पिता संजय तोपनो के मित्र के घर ममरला गांव गया था। रविवार सुबह वह साइकिल लेकर सड़क पर निकला। इस दौरान उसने कान में इयर फोन लगा रखा था। इसी क्रम में रांची से गुमला जा रही मधुकर नामक यात्री बस की चपेट में आ गया। बस के कंडक्टर और खलासी तुरंत उसे बस में लेकर तोरपा रेफरल अस्पताल पहुंचे। वहां जांच के बाद चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

एसवीयू में ग्रैंडपेरेंट्स डे का आयोजन

रांची । सरला बिरला पब्लिक स्कूल, राँची में वात्सल्यम् 2026 - ग्रैंडपेरेंट्स डे का आयोजन अत्यंत आत्मीयता, उल्लास और कृतज्ञता के भाव के साथ किया गया। पहली और दूसरी कक्षा के विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत इस विशेष कार्यक्रम की विषयवस्तु 'एडुवेरिस - शिक्षा का नया युग' रही। इस विषय ने पीढ़ियों के अनुभव और ज्ञान को शिक्षा के बदलते स्वरूप के साथ जोड़ते हुए एक सुंदर एवं सार्थक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। समारोह में ग्रैंडपेरेंट्स द्वारा बच्चों को दिए जाने वाले संस्कार, स्नेह और जीवन की अमूल्य सीख के प्रति सम्मान एवं कृतज्ञता व्यक्त की गई। साथ ही, रचनात्मकता, प्रौद्योगिकी, नवाचार और समग्र विकास से आकार लेती आधुनिक शिक्षा-दृष्टि को भी प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया गया।

घरेलू विवाद में एक की पीट-पीटकर हत्या

पलामू। जिले के हुसैनाबाद थाना क्षेत्र के पथरा गांव में रविवार को घरेलू संपत्ति और घर के बंटवारे को लेकर हुए खूनी संघर्ष में एक व्यक्ति की पीट-पीटकर हत्या कर दी गई, जबकि उनकी पत्नी और दो बेटे भी मारपीट में घायल हो गए। मृतक की पहचान पथरा गांव निवासी अशोक पासवान के रूप में हुई है। घटना के संबंध में मृतक के पुत्र आयुष कुमार (18) ने हुसैनाबाद थाने में लिखित आवेदन देकर नामजद प्राथमिकी दर्ज करने की गुहार लगाई है।थाने में दिए गए आवेदन के अनुसार, 09 अगस्त को अशोक पासवान अपने घर पर मौजूद थे। इसी दौरान घर के बंटवारे की बात को लेकर परिजनों के बीच कहासुनी शुरू हो गई, जो देखते ही देखते हिंसक झड़प में बदल गई। आरोप है कि मृतक के भाई संतोष पासवान, उनके बेटों सुमित पासवान, सोनू पासवान, सौरभ पासवान और पत्नी रीता देवी ने एकजुट होकर लाठी-डंडों से हमला कर दिया।बीच-बचाव करने पहुंचे मृतक के पुत्र आयुष कुमार, दूसरे पुत्र ऋषभ कुमार और पत्नी निर्मला देवी पर भी आरोपितों ने जानलेवा हमला कर दिया और मारपीट की।

वैन की चपेट में आकर एक महिला की मौत

महुदा धनबाद । बोकारो मुख्य मार्ग पर लालबंगला मोड़ के समीप रविवार सुबह पिकअप वैन की चपेट में आने से एक महिला की मौत हो गई, जबकि दूसरी महिला गंभीर रूप से घायल हो गई। हादसे में एक मारुति ओमनी और टोटो वाहन भी क्षतिग्रस्त हो गया। घटना के बाद स्थानीय लोगों ने घायल महिला को अस्पताल भेजवाया तथा पिकअप वैन को चालक समेत पकड़कर महुदा पुलिस के हवाले कर दिया। बताया जाता है कि एक पिकअप वैन में दर्जनों श्रद्धालु बाबाधाम से लौटकर लोहरदगा जा रहे थे। लालबंगला मोड़ के समीप सड़क किनारे दो महिलाएं आपस में बातचीत कर रही थीं। इसी दौरान धनबाद की ओर से तेज रफ्तार में आ रही पिकअप वैन अनियंत्रित हो गई और पहले एक मारुति ओमनी तथा टोटो वाहन को टक्कर मारते हुए आगे बढ़ गई। इसके बाद सड़क किनारे खड़ी दोनों महिलाओं को जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में रोहुप अंसारी की पत्नी हाजरा खातून (66) की घटनास्थल पर ही मौत हो गई।

कांवरियों से भरी स्कॉर्पियो की टाटा पंच से हुई टक्कर, पांच कांवरियों की हालत गंभीर

दुमका। दुमका जिले के मसलिया थाना क्षेत्र के सिदपहाड़ी गांव के समीप रविवार को कांवरियों से भरी स्कॉर्पियो और टाटा पंच के बीच हुई टक्कर में सात लोग घायल हो गये।हादसे में स्कॉर्पियो सवार पांच कांवरियों को गंभीर चोट लगी है।दुर्घटना इतनी जोरदार थी कि स्कॉर्पियो सड़क पर करीब चार बार पलटते हुए सड़क किनारे लगे सूचना बोर्ड को गिराकर सीधी हो गयी। हादसे में स्कॉर्पियो बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गयी। गंभीर रूप से घायल कांवरियों को प्राथमिक उपचार के बाद फूलो झानो मेडिकल कॉलेज अस्पताल, दुमका रेफर कर दिया गया।जानकारी के अनुसार,आसनसोल के जाम नगर से नौ कांवरिये स्कॉर्पियो से आ रहे थे।

आंदोलनकारी छात्र-छात्राओं के इलाज का पूरा खर्च उठाएगी राज्य सरकार : इरफान

संताल एक्सप्रेस

रांची। झारखंड में छात्र-छात्राओं के आंदोलन के बीच स्वास्थ्य मंत्री डॉ. इरफान अंसारी ने रविवार को आंदोलनकारी छात्रों के नाम एक भावुक एवं संवेदनशील अपील जारी की है। स्वास्थ्य मंत्री ने जारी अपील में कहा है कि लोकतांत्रिक तरीके से अपने अधिकारों और मांगों के लिए संघर्ष करना उनका अधिकार है, लेकिन अपनी जिंदगी और स्वास्थ्य को खतरे में डालना किसी भी परिस्थिति में उचित नहीं है।स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि सरकार छात्रों की भावनाओं, उनकी मांगों और उनके संघर्ष को गंभीरता से समझ रही है तथा सकारात्मक एवं सम्मानजनक समाधान के लिए लगातार प्रयासरत है। उन्होंने छात्रों से संवाद और लोकतांत्रिक प्रक्रिया के माध्यम से समाधान की दिशा में आगे बढ़ने का आग्रह किया।अपने पत्र में स्वास्थ्य मंत्री ने छात्रों से कहा कि आंदोलन के दौरान यदि किसी

छात्र-छात्रा की तबीयत बिगड़ती है या अस्पताल में भर्ती कराने की आवश्यकता पड़ती है, तो राज्य सरकार बेहतर से बेहतर चिकित्सा उपलब्ध कराने के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध है। उन्होंने स्पष्ट किया कि राज्य के सभी सरकारी एवं निजी अस्पतालों को निर्देश दिया गया है कि किसी भी आंदोलनकारी छात्र-छात्रा को चिकित्सा सुविधा से वंचित न किया जाए। आंदोलनकारी छात्रों के इलाज के नाम पर किसी प्रकार की राशि नहीं ली जाएगी तथा उपचार से संबंधित आवश्यक खर्च राज्य सरकार एवं स्वास्थ्य विभाग द्वारा वहन किया जाएगा।स्वास्थ्य मंत्री ने बताया कि आंदोलन स्थल पर भी स्वास्थ्य विभाग की मेडिकल टीमों को आवश्यकता के अनुसार तैनात रखा गया है, ताकि आंदोलनकारी छात्र-छात्राओं के स्वास्थ्य की लगातार निगरानी की जा सके और किसी भी आपात स्थिति में तत्काल चिकित्सा सहायता उपलब्ध कराई जा सके। उन्होंने छात्रों से कहा कि वे अपनी जान को दांव पर न लगाएं और अपने स्वास्थ्य की अनदेखी न करें। स्वास्थ्य मंत्री ने छात्रों से अपील करते हुए कहा कि वे अपनी मांगों के लिए लोकतांत्रिक तरीके से संघर्ष जारी रखें, अपनी आवाज बुलंद करें, लेकिन अनशन और भूख हड़ताल जैसे कदमों से बचें। कहा कि सरकार छात्रों की बात सुन रही है और उनकी मांगों पर गंभीरता से विचार कर रही है। ऐसे में संवाद और लोकतांत्रिक प्रक्रिया के माध्यम से समाधान निकालना ही सबसे बेहतर रास्ता है। कहा कि झारखंड के युवा राज्य का भविष्य हैं और उनकी सुरक्षा एवं स्वास्थ्य सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकताओं में है।मेरी पीड़ा है। उन्होंने एक बार फिर सभी आंदोलनकारी छात्र-छात्राओं से अनशन एवं भूख हड़ताल से बचने, अपने स्वास्थ्य की रक्षा करने और संवाद के माध्यम से समाधान की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने की अपील की।

सरकारी खजाने पर अब डिजिटल पहरा

रांची। झारखंड के सरकारी खजाने से फर्जीवाड़ा कर राशि की निकासी पर अब डिजिटल सुरक्षा चक्र काम करेगा।राज्य के विभिन्न कोषागारों से अवैध तरीके से सरकारी राशि निकाले जाने के मामलों को देखते हुए वित्त विभाग ने वित्तीय प्रबंधन प्रणाली (आइएफएमएस) को और मजबूत करने का फैसला लिया है। इसके तहत आइएफएमएस पोर्टल को प्रोटेन ई-गवर्नेंस टेक्नोलॉजी लिमिटेड की बैंक खाता सत्यापन और पैन सत्यापन सेवाओं से इंटीग्रेट किया जायेगा।वित्त विभाग ने इसके लिए आदेश जारी कर दिया है. इस व्यवस्था से सरकारी भुगतान में मानवीय हस्तक्षेप और दस्तावेजों के आधार पर होने वाली गलतियों की गुंजाइश कम करने की कोशिश की गयी है।साथ ही भुगतान से पहले ही संदिग्ध विवरण को चिन्हित किया जा सकेगा।नयी व्यवस्था लागू होने के बाद सरकारी भुगतान जारी करने से पहले संबंधित बैंक खाते और पैन का डिजिटल सत्यापन किया जायेगा।यानी जिस खाते में सरकारी राशि भेजी जानी है, उसके बैंक खाते के विवरण और कार्यालयीय रिकॉर्ड में दर्ज पैन की वास्तविकता की जांच सिस्टम के स्तर पर ही हो जायेगी। इसमें किसी तरह की विसंगति मिलने पर भुगतान की प्रक्रिया आगे नहीं बढ़ेगी। नयी व्यवस्था में बैंक खाता सत्यापन सेवा के माध्यम से भुगतान पाने वाले के खाते का सत्यापन किया जायेगा।खाते का विवरण सही है या नहीं, इसकी डिजिटल जांच होगी।इससे गलत बैंक खाता दर्ज कर सरकारी राशि किसी दूसरे खाते में ट्रांसफर करने जैसी गड़बड़ियों पर रोक लगाने में मदद मिलेगी।इसके साथ ही कार्यालयीय रिकॉर्ड में दर्ज पैन का ऑनलाइन सत्यापन किया जायेगा। प्रोटेन ई-गवर्नेंस टेक्नोलॉजी लिमिटेड की सेवा के जरिये पैन की जानकारी का रियल टाइम सत्यापन संभव होगा।इससे फर्जी या गलत पैन के आधार पर भुगतान कराने की कोशिशों को सिस्टम के स्तर पर ही पकड़ा जा सकेगा।सिस्टम बैंक खाते और पैन से संबंधित विवरण की जांच करेगा। यदि बैंक खाता संख्या, नाम या संबंधित विवरण में विसंगति मिलती है, तो संबंधित पे आईडी का भुगतान रोक दिया जायेगा।

पारस हॉस्पिटल में रोबोटिक सर्जरी शुरू

रांची। झारखंड के राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने रविवार को धुर्वा स्थित पारस एचईसी हॉस्पिटल में रोबोटिक सर्जरी सुविधा का शुभारंभ किया। इस मौके पर उन्होंने इसे झारखंड में आधुनिक और उन्नत स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया। राज्यपाल ने कहा कि चिकित्सा क्षेत्र में अत्याधुनिक तकनीक के इस्तेमाल से मरीजों को अधिक सटीक, सुरक्षित और गुणवत्तापूर्ण उपचार उपलब्ध कराने में मदद मिलेगी। रोबोटिक सर्जरी चिकित्सा विज्ञान में तकनीकी प्रगति का उत्कृष्ट उदाहरण है। इससे जटिल सर्जरी के दौरान चिकित्सकों को अधिक सटीकता के साथ काम करने में सहायता मिलती है। साथ ही मरीजों को कम चीरा, कम पीड़ा और अपेक्षाकृत जल्दी रिकवरी जैसे लाभ मिल सकते हैं।उन्होंने कहा कि रोबोटिक सर्जरी की सुविधा शुरू होने से झारखंड के मरीजों को उन्नत शल्य चिकित्सा सेवाएं राज्य में ही मिल सकेंगी। इससे लोगों को बेहतर इलाज के लिए दूसरे राज्यों का रुख करने की आवश्यकता कम होगी।राज्यपाल ने अपने व्यक्तिगत अनुभव को साझा करते हुए बताया कि करीब 20 वर्ष पहले एक दुर्घटना में उनके पैर में गंभीर चोट लगी थी।

बंद कमरे से मिला मृत रेंटर का शव

बोकारो। बोकारो जिला के गोमिया प्रखंड अंतर्गत बैंक मोड़ स्थित डोली पैलेस में एक कमरा बंद पाया गया और उससे बदबू आ रही थी। सूचना पर पहुंची पुलिस ने दरवाजा तोड़कर अंदर देखा तो किराएदार का शव मिला।डोली पैलेस के मालिक ने बताया कि रेंटर के बारे में जानकारी मिलने पर पता चला कि कमरे से बदबू आ रही है। इसकी सूचना उन्होंने तत्काल स्थानीय पुलिस को दी। सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस दलबल के साथ डोली पैलेस पहुंची। लगभग 1 घंटे की कड़ी मशक्कत के बाद दरवाजा तोड़ा गया। दरवाजा खुलते ही देखा गया कि किराएदार कमरे में मृत पड़ा हुआ है।मृतक ओरिका कंपनी में ब्लास्टिंग में मेजर के पद पर कार्यरत था। डोली पैलेस के मालिक ने बताया कि उसने अपना सिर्फ आधार कार्ड दिया था, किसी सगे-संबंधी का नंबर नहीं दिया था। फिलहाल पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है और घटना की जांच कर रही है। मौत के कारणों का खुलासा पोस्टमार्टम रिपोर्ट के बाद ही हो सकेगा।

धनबाद में दिखी आदिवासी संस्कृति की झलक

धनबाद। विश्व आदिवासी दिवस के मौके पर रविवार को धनबाद में आदिवासी समाज की ओर से कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सोनोत संथाल समाज केंद्रीय समिति, धनबाद की ओर से आयोजित कार्यक्रम में जिले के विभिन्न क्षेत्रों से बड़ी संख्या में आदिवासी समाज के लोग पारंपरिक वाद्य यंत्र मांदर और नगाड़े के साथ शामिल हुए। सांस्कृतिक दल के साथ निकली रैली जिला परिषद से रणधीर वर्मा चौक पहुंची, जहां आदिवासी गीत और नृत्य की शानदार प्रस्तुति दी गई। बड़ी संख्या में लोग कार्यक्रम को देखने के लिए मौजूद रहे। सोनोत संथाल समाज केंद्रीय सचिव अनिल कुमार टुडू ने कहा कि विश्व आदिवासी दिवस को समाज की ओर से एक त्योहार के रूप में मनाया जाता है। कार्यक्रम में अनिल कुमार टुडू, केंद्रीय सचिव, सोनोत संथाल समाज,रमेश टुडू, केंद्रीय संयोजक, रतीलाल टुडू, कोषाध्यक्ष, सोनोत संथाल समाज केंद्रीय समिति, लक्ष्मी मुर्मू समेत सैकड़ों लोग मौजूद थे।

भू-धंसान के बाद फूटा ग्रामीणों का आक्रोश

कतरास। छाताबाद फुटबॉल ग्राउंड के समीप 7 अगस्त को हुई भू-धंसान की घटना के बाद ग्रामीणों में आक्रोश बढ़ता जा रहा है। भू-धंसान की चपेट में आने से दर्जनों घर जमींदोज हो गए हैं। ग्रामीणों का आरोप है कि घटना के बाद भी बीसीसीएल और जिला प्रशासन की ओर से प्रभावित परिवारों की समस्याओं को गंभीरता से नहीं लिया गया। आक्रोशित ग्रामीणों ने पुनर्वास और रोजगार की मांग को लेकर बीसीसीएल एरिया-3 के अंतर्गत संचालित एसटीजी-डेको आउटसोर्सिंग परियोजना का काम अनिश्चितकाल के लिए बंद करा दिया है। ग्रामीण परियोजना के समीप धरना पर बैठकर अपनी मांगों को लेकर आंदोलन कर रहे हैं। धरना को संबोधित करते हुए मोहम्मद शहाबुद्दीन ने कहा कि ग्रामीण दो दिनों से अनिश्चितकालीन धरना पर बैठे हैं, लेकिन अब तक बीसीसीएल प्रबंधन की ओर से वार्ता के लिए कोई अधिकारी नहीं पहुंचा है।वार्ड संख्या-5 की पार्षद निरुपमा देवी ने बीसीसीएल, आउटसोर्सिंग कंपनी और प्रशासन पर प्रभावित परिवारों की अनदेखी करने का आरोप लगाया। तो अनिश्चितकालीन धरना के बाद आंदोलन को और तेज किया जाएगा। नगर निगम वार्ड संख्या 4 के पार्षद छोटू सिंह ने का घटना में जिम्मेवार कौन , बीसीसीएल और आउटसोर्सिंग कंपनी को जिम्मेदारी लेनी चाहिए, अनिश्चितकालीन धरना को पार्षदों द्वारा समर्थन दिए गए हैं ,अगर भू धसान प्रभावितों को मुआवजा पुनर्वास नहीं मिला तो आगे उग्र आंदोलन होगा। वार्ड संख्या एक की पार्षद डॉ मधुबाला ने आग्रह किया कि जो उचित निर्णय लेंगे हम पार्षद आपके साथ है। यह बहुत ही बड़ी घटना है। वार्ड संख्या 8 के पार्षद रामेश्वर तुरी ने कहा कि भू - धंसान प्रभावितों के साथ अनदेखी की जा रही है। छाताबाद के सदर ने कहा कि जब तक प्रभावित परिवारों को सुरक्षित आशियाना नहीं मिलता, तब तक अनिश्चितकालीन धरना और 'आशियाना बचाओ आंदोलन' जारी रहेगा।

सड़क पर गड्ढे के कारण बने तालाब युवाओं ने धान रोपकर जताया आक्रोश

पलामू । जिला मुख्यायल मेदिनीनगर के अति व्यस्ततम चौक चौराहों में से एक बैरिया चौक सड़क इन दिनों गड्ढे में तब्दील हो गई है। इन गड्ढे में पानी जमने से हर दिन हादसे से हो रहे हैं। लगातार परेशानी देखकर बड़ी संख्या में युवाओं ने रविवार को सड़क पर धान रोपनी कर आक्रोश जताया। साथ ही मौके पर धरना प्रदर्शन करने की चेतावनी दी।धान रोपाई कर रहे लोगों ने कहा कि सड़क की स्थिति इतनी खराब हो चुकी है कि बारिश के बाद गड्ढों में पानी भर जाने से सड़क और खेत में अंतर करना मुश्किल हो गया है। राहगीरों और वाहन चालकों को रोजाना परेशानी झेलनी पड़ रही है।बैरिया चौक से होकर गुजरने वाली यह सड़क जिले के कई महत्वपूर्ण इलाकों को जोड़ती है। यह मार्ग हुसैनाबाद, छतरपुर, पड़वा, पाटन, विश्रामपुर और हरिहरगंज सहित कई क्षेत्रों के आवागमन का प्रमुख जरिया है। ऐसे में सड़क की बदहाली का सीधा असर हजारों लोगों के रोजमर्रा के आवागमन पर पड़ रहा है।स्थानीय लोगों का कहना है कि सड़क की मरम्मत को लेकर लंबे समय से मांग की जाती रही है, लेकिन समस्या का स्थायी समाधान नहीं हो सका। बारिश में स्थिति और भी गंभीर हो जाती है। सड़क पर बने गड्ढों में पानी भरने से दुर्घटना की आशंका बनी रहती है।

विश्व आदिवासी दिवस पर मना महोत्सव,गीत-नृत्य से सजा मंच

संताल एक्सप्रेस

गोड्डा। विश्व आदिवासी दिवस-2026 के अवसर पर रविवार को स्थानीय शुभदा बैंक्वेट हॉल में झारखंड आदिवासी महोत्सव का आयोजन उत्साह और उल्लास के साथ किया गया। कार्यक्रम की थीम ÷माटी की पुकार, पुरखों की पहचान–आदिवासी संस्कृति, झारखंड की शान÷ रही। कार्यक्रम में आदिवासी अस्मिता, समृद्ध लोक परंपराओं, लोककला तथा जल-जंगल-जमीन से जुड़ी गौरवशाली विरासत की झलक देखने को मिली। कार्यक्रम का उद्घाटन उपायुक्त लोकेश मिश्रा, पुलिस अधीक्षक मुकेश कुमार, उप विकास आयुक्त विस्पुते श्रीकांत यशवंत, अपर समाहर्ता इंदर कुमार, एसडीओ वैद्यनाथ उरांव, एसडीपीओ आकाश भारद्वाज समेत अन्य पदाधिकारियों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। मौके पर उपायुक्त लोकेश मिश्रा ने कहा कि झारखंड की पहचान उसकी समृद्ध जनजातीय संस्कृति, परंपरा और प्राकृतिक विरासत से जुड़ी है। ऐसे आयोजन जनजातीय समुदाय की कला और संस्कृति को पहचान दिलाने के साथ युवा पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने कहा कि आदिवासी समाज की परंपराओं, लोककला और सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण एवं संवर्धन सामूहिक जिम्मेदारी है। पुलिस अधीक्षक मुकेश कुमार ने कहा कि विकास और आधुनिकता के साथ अपनी संस्कृति एवं पहचान को संरक्षित रखना भी जरूरी है। आदिवासी समुदाय की प्रकृति के प्रति संवेदनशीलता, पारंपरिक ज्ञान, सामुदायिक जीवन और सामाजिक एकजुटता पूरे समाज के लिए प्रेरणादायी है। कार्यक्रम के दौरान उपायुक्त और एसपी ने विभिन्न विभागों की ओर से लगाए गए स्टॉल का निरीक्षण किया।एकलव्य मॉडल प्लस-टू बालिका आवासीय विद्यालय तसरिया, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय गोड्डा, सुंदरपहाड़ी, पोड़ैयाहाट और पथरगामा सहित विभिन्न संस्थानों के कलाकारों ने प्रस्तुति दी।कार्यक्रम का संचालन सुरजीत झा ने किया, जबकि धन्यवाद ज्ञापन जिला जनसंपर्क पदाधिकारी फैजान सरवर ने किया। मौके पर प्रशासनिक एवं पुलिस पदाधिकारियों के अलावा स्थानीय जनप्रतिनिधि, शिक्षक-शिक्षिकाएं, कलाकार, लाभुक, छात्र-छात्राएं और बड़ी संख्या में स्थानीय लोग मौजूद थे।

आदिवासी महोत्सव में गूंजी विरासत की आवाज संस्कृति-संरक्षण और युवा शक्ति का लिया संकल्प

संताल एक्सप्रेस

जामताड़ा। विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर रविवार को नगर भवन, दुलाडीह में जिला स्तरीय झारखंड आदिवासी महोत्सव-2026 का आयोजन उत्साह और गरिमा के साथ हुआ। समारोह में आदिवासी संस्कृति, परंपरा और प्रकृति संरक्षण की जीवंत झलक देखने को मिली। कार्यक्रम का उद्घाटन स्वास्थ्य मंत्री डॉ. इरफान अंसारी, उपायुक्त आलोक कुमार दुबे, पुलिस अधीक्षक शम्भू कुमार सिंह सहित अन्य अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर किया। समारोह में भगवान बिरसा मुंडा, सिदो-कान्हो, चांद-भैरव, फूलो-झानो एवं दिशोम गुरु शिबू सोरेन के चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी गई। अतिथियों का पारंपरिक पगड़ी, पौधा और स्मृति चिह्न देकर स्वागत किया गया। खास बात रही कि जिला प्रशासन के अधिकारी भी पारंपरिक आदिवासी परिधान में नजर आए। मंत्री डॉ. इरफान अंसारी ने कहा कि आदिवासी समाज केवल आंकड़ा नहीं, बल्कि भारत की आत्मा है। उन्होंने आदिवासी अधिकारों, संस्कृति और पहचान के संरक्षण पर जोर देते हुए जामताड़ा में स्वास्थ्य सुविधाओं को मजबूत करने तथा मेडिकल कॉलेज की सुविधा उपलब्ध कराने की बात कही। उपायुक्त आलोक कुमार ने युवाओं से संस्कृति और पहचान को सुरक्षित रखते हुए आधुनिक शिक्षा, तकनीक और कौशल को अपनाने का आह्वान किया। एसपी शम्भू कुमार सिंह ने आदिवासी जीवनशैली को प्रकृति संरक्षण की मिसाल बताया। बच्चों और कलाकारों ने गीत-नृत्य के माध्यम से जल, जंगल और जमीन बचाने का संदेश दिया। विभिन्न विभागों के स्टॉल आकर्षण का केंद्र रहे। अतिथियों ने पांच सामुदायिक वन पट्टों का वितरण किया तथा उत्कृष्ट प्रतिभागियों और स्टॉल संचालकों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। मौके पर वन प्रमंडल पदाधिकारी राहुल कुमार, जिला परिषद अध्यक्ष दीपिका बेसरा, डीडीसी असीम किस्पोट्टा, परियोजना निदेशक आईटीडीए जुगनू मिंज, अपर समाहर्ता पूनम कच्छप, एसडीओ अनंत कुमार समेत जिला स्तरीय पदाधिकारी, जनप्रतिनिधि, झारखंड आंदोलनकारी और स्कूली बच्चे मौजूद रहे।

डीसी-एसपी ने मंडल कारा का औचक निरीक्षण किया

गोड्डा। जिला दंडाधिकारी सह उपायुक्त लोकेश मिश्रा एवं पुलिस अधीक्षक मुकेश कुमार ने शनिवार को मंडल कारा, गोड्डा का संयुक्त रूप से औचक निरीक्षण किया। इस दौरान अधिकारियों ने कारा की सुरक्षा व्यवस्था, बंदियों को उपलब्ध कराई जा रही मूलभूत सुविधाओं तथा कारा प्रबंधन का जायजा लिया। निरीक्षण के क्रम में डीसी-एसपी ने विभिन्न वार्डों का भ्रमण कर बंदियों की सुरक्षा, प्रवेश एवं निकास व्यवस्था, सुरक्षा बलों की तैनाती और निगरानी व्यवस्था की जानकारी ली। अधिकारियों ने प्रतिबंधित सामग्री के प्रवेश को रोकने तथा सुरक्षा व्यवस्था में किसी भी तरह की चूक नहीं होने को लेकर कारा प्रशासन को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। अधिकारियों ने बंदियों को उपलब्ध कराए जा रहे भोजन, पेयजल, स्वास्थ्य सुविधा, स्वच्छता एवं साफ-सफाई की व्यवस्था का भी निरीक्षण किया। उपायुक्त लोकेश मिश्रा ने कारा प्रशासन को सुरक्षा व्यवस्था में किसी भी स्तर पर लापरवाही नहीं बरतने और संवेदनशील स्थानों की नियमित निगरानी सुनिश्चित करने का निर्देश दिया।

जामताड़ा में गूंजा आदिवासी अस्मिता का स्वर

जामताड़ा। विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर रविवार को जामताड़ा के ऐतिहासिक गांधी मैदान में आदिवासी संस्कृति, परंपरा और सामाजिक एकता का भव्य संगम देखने को मिला। मांझी परगना सरदार महासभा एवं सिद्ध-कानू मुर्मू सेवा समिति के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित जिला स्तरीय समारोह में जिले के विभिन्न क्षेत्रों के साथ दूर-दराज से बड़ी संख्या में समाज के लोग जुटे। कार्यक्रम की शुरुआत मांझी परगना सरदार महासभा के जिला अध्यक्ष सुनील हांसदा के नेतृत्व में वीर सिद्ध-कानू की प्रतिमा पर माल्यार्पण के साथ हुई। इसके बाद दिशोम गुरु वीर शिबू सोरेन समेत अन्य महापुरुषों के चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी गई। इस अवसर पर सुनील हांसदा ने विश्व आदिवासी दिवस के इतिहास और उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आदिवासी अधिकारों को लेकर संयुक्त राष्ट्र संघ में 9 अगस्त 1982 को पहली बैठक हुई थी। इसके बाद 9 अगस्त 1994 को इस दिवस को मान्यता मिली। उन्होंने बताया कि जामताड़ा के गांधी मैदान में वर्ष 2008 से लगातार कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है और इस वर्ष आयोजन का 19वां संस्करण है। उन्होंने कहा कि समारोह का उद्देश्य आदिवासी समाज की समृद्ध विरासत को संरक्षित करना, युवाओं को अधिकारों के प्रति जागरूक करना, शिक्षा को बढ़ावा देना और नशे जैसी सामाजिक बुराइयों से दूर रहने का संदेश देना है। पारंपरिक परिधान में सजे महिला-पुरुषों और कलाकारों ने गीत-संगीत व सामूहिक नृत्य प्रस्तुत कर समारोह में उत्साह भर दिया। सांस्कृतिक कार्यक्रमों ने आदिवासी परंपरा और सामाजिक एकजुटता की जीवंत झलक पेश की।

सावन की दूसरी सोमवारी आज शिवालयों में उमड़ेगी श्रद्धालुओं की भीड़

गोड्डा। सावन की दूसरी सोमवारी को लेकर जिलेभर के शिवालयों में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ने की संभावना है। भगवान भोलेनाथ के जलाभिषेक और पूजा-अर्चना को लेकर श्रद्धालुओं में खासा उत्साह है। इसे देखते हुए जिला प्रशासन एवं पुलिस की ओर से प्रमुख शिव मंदिरों में सुरक्षा और भीड़ नियंत्रण को लेकर आवश्यक तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। शहर के शिवपुर स्थित प्रसिद्ध बाबा रत्नेश्वर नाथ धाम मंदिर में भी दूसरी सोमवारी को उमड़ने वाली संभावित भीड़ को लेकर नगर पुलिस प्रशासन एवं मंदिर प्रबंधन समिति ने विशेष तैयारी की है।

विश्व आदिवासी दिवस समारोह का आयोजन

संवाददाता नाला (जामताड़ा)। मांझी परगना सरदार महासभा के तत्वावधान में रविवार को नाला कालीपाथर मौजा स्थित नेताजी स्टेडियम परिसर में वीर सिदो-कान्हू प्रतिमा स्थल के समीप विश्व आदिवासी दिवस समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि 44 परगना धनलाल हांसदा एवं गेड़िया 44 परगना-2 के बासुदेव हांसदा उपस्थित रहे। अतिथियों के पहुंचने पर संथाल समाज की महिलाओं ने पारंपरिक नृत्य-गीत एवं रीति-रिवाज के साथ उनका स्वागत किया। कार्यक्रम से पूर्व मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथियों ने फुटबॉल मैदान में स्थापित वीर सिदो-कान्हू की आदमकद प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि दी। इसके बाद तिलका मांझी, सिदो-कान्हू एवं बिरसा मुंडा के चित्रपट पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर समारोह का शुभारंभ किया गया। समारोह में 44 परगना धनलाल हांसदा, गेड़िया 44 परगना-2 बासुदेव हांसदा, अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी किशोर तिर्की, झामुमो प्रखंड अध्यक्ष उज्जवल भट्टाचार्य, नाला पंचायत के मुखिया अजित मुर्मू, खैरा पंचायत के मुखिया लखी लाल मरांडी, बड़ा रामपुर पंचायत के मुखिया दिलीप टुडू, शालूका पंचायत के मुखिया नेफालाल मरांडी, मुखिया प्रतिनिधि गुपिन सोरेन, मांझी बाबा मंगल सोरेन, जसोदी मुर्मू, भंडारी, महेश्वर मरांडी, हाराधन मुर्मू, उपधन मरांडी, गनेश्वर मरांडी, पवन कुमार मुर्मू, बंकिम टुडू, बलदेव मरांडी, जलेश्वर हेंब्रम, कुश मारंडी, कृष्ण टुडू, केंद्रीय समिति सदस्य सलीम जहांगीर, 20 सूत्री सदस्य जनार्दन भंडारी सहित अन्य जनप्रतिनिधि, गणमान्य लोग एवं संथाल समाज के पदधारक मौजूद थे।

बच्चों के भविष्य को संवार रहा होप चैरिटी फाउंडेशन

मेहरमा। शिक्षा के अभाव में ग्रामीण क्षेत्र के बच्चों का भविष्य प्रभावित न हो, इसके लिए अमजोरा-पिरोजपुर पंचायत के गोविंदपुर गांव के युवाओं द्वारा संचालित होप चैरिटी फाउंडेशन ट्रस्ट लगातार प्रयास कर रहा है। ट्रस्ट की ओर से आर्थिक रूप से कमजोर एवं जरूरतमंद बच्चों को अनुभवी शिक्षकों के माध्यम से निःशुल्क कोचिंग और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराई जा रही है। ट्रस्ट के संचालक एवं सेना के जवान राजेश यादव ने बताया कि होप चैरिटी फाउंडेशन ट्रस्ट पिछले कई वर्षों से सामाजिक उत्थान के क्षेत्र में सक्रिय है।

विश्व आदिवासी दिवस पर जामताड़ा में दिखी एकजुटता

संताल एक्सप्रेस

जामताड़ा। विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर रविवार को स्वास्थ्य मंत्री डॉ. इरफान अंसारी के जामताड़ा स्थित आवास पर विशेष समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में जामताड़ा सहित आसपास के क्षेत्रों से बड़ी संख्या में आदिवासी समाज के महिला-पुरुष शामिल हुए। आयोजन में आदिवासी संस्कृति, सामाजिक एकता और अधिकारों को लेकर उत्साह नजर आया। मंत्री डॉ. इरफान अंसारी ने समाज के लोगों को विश्व आदिवासी दिवस की शुभकामनाएं देते हुए जल, जंगल और जमीन के अधिकारों की रक्षा के लिए एकजुट रहने की अपील की। उन्होंने भाजपा पर राजनीतिक निशाना साधते हुए आरोप लगाया कि लंबे समय तक झारखंड के संसाधनों का दोहन किया गया। उन्होंने कहा कि आदिवासी जमीन और अधिकारों की सुरक्षा के लिए समाज को लगातार सजग रहने की जरूरत है। समारोह के दौरान समाज के वरिष्ठ लोगों को सम्मानित किया गया, जबकि महिलाओं को साड़ी भेंट कर सम्मान दिया गया। कार्यक्रम में महिलाओं की उल्लेखनीय भागीदारी रही। पूर्व सांसद फुरकान अंसारी ने स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन को लेकर लोगों को जागरूक किया। उन्होंने मतदाताओं से मतदाता सूची में अपना नाम जांचने तथा किसी प्रकार की त्रुटि मिलने पर संबंधित अधिकारियों या जनप्रतिनिधियों को सूचना देने की अपील की।

जिला परिषद अध्यक्ष दीपिका बेसरा ने कहा कि आदिवासी समाज की सबसे बड़ी शक्ति उसकी एकता है। उन्होंने संस्कृति, परंपरा और संवैधानिक अधिकारों के संरक्षण के लिए संगठित होकर आगे बढ़ने का आह्वान किया।

विश्व आदिवासी दिवस पर डीसी-एसपी ने वीर शहीदों को माल्यार्पण कर किया नमन

संताल एक्सप्रेस

गोड्डा। विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर रविवार को उपायुक्त लोकेश मिश्रा एवं पुलिस अधीक्षक मुकेश कुमार ने जिले के विभिन्न स्थानों पर स्थापित आदिवासी महापुरुषों एवं वीर नायकों की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किए। इस दौरान अधिकारियों ने कदवा टोला स्थित भगवान बिरसा मुंडा, दिशोम गुरु शिबू सोरेन बायोडायवर्सिटी पार्क स्थित दिशोम गुरु शिबू सोरेन तथा कारगिल चौक स्थित वीर सिदो-कान्हू की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण किया। इस अवसर पर उपायुक्त लोकेश मिश्रा ने कहा कि आदिवासी समाज की गौरवशाली परंपरा, त्याग और बलिदान सभी के लिए प्रेरणास्रोत हैं। विश्व आदिवासी दिवस आदिवासी समाज की पहचान और गौरव का प्रतीक होने के साथ-साथ उसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत, कला, परंपरा और इतिहास को संरक्षित करने का अवसर भी है। उन्होंने कहा कि आदिवासी समाज ने वैश्विक संस्कृति के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। हम सभी को उनकी संस्कृति एवं विरासत के संरक्षण और संवर्धन का संकल्प लेना चाहिए। उपायुक्त ने जिलेवासियों से सामाजिक समरसता, आपसी भाईचारे और विकास में सक्रिय भागीदारी निभाने तथा आदिवासी समाज के इतिहास, संस्कृति और परंपराओं के संरक्षण में सहयोग करने का आह्वान किया। कार्यक्रम के दौरान जिले के अन्य वरीय अधिकारी भी मौजूद रहे।

गोड्डा में सांस्कृतिक संध्या ऑडिशन कल

गोड्डा । जिला प्रशासन के तत्वावधान में स्वतंत्रता दिवस की शाम आयोजित होने वाली सांस्कृतिक संध्या हेतु श्रेष्ठ प्रस्तुतियों के चयन को लेकर एक दिवसीय ऑडिशन का आयोजन मंगलवार 11 अगस्त को स्थानीय भागलपुर रोड अवस्थित शुभदा विवाह भवन में किया जाएगा। उक्त आशय का निर्णय शनिवार शाम अनुमंडल पदाधिकारी गोड्डा बैद्यनाथ उरांव की अध्यक्षता में उनके आवासीय कार्यालय में हुई आयोजन समिति की बैठक में ली गई। बैठक में समिति के संयोजक के तौर पर जिला खेल पदाधिकारी डॉ, प्राण महतो सहित सदस्यों में राजेश झा, सुरजीत झा, संजीव कुमार झा, मनीष कुमार सिंह, मो. जाहिद इकबाल, मो. शाहीन खान, पवन कुमार सिंह, अमित कुमार सिंह, मो. इस्लाम, अमरेंद्र सिंह बिट्टू, शक्ति कुमार, प्रियव्रत परमेश, गुंजन कुमार झा, आर्यन चंद्रवंशी एवं मोनालिसा कुमारी के अलावा नगर परिषद कर्मी भास्कर कुमार शामिल हुए। सर्वसम्मत निर्णय लिया गया कि गायन एवं नृत्य की एकल युगल एवं समूह विधाओं में आयोजित सांस्कृतिक संध्या के लिए प्रतिभागी उक्त तिथि में 11 बजे पूर्वाह्न से 4 बजे अपराह्न तक अपने विद्यालय अथवा संस्थान के लेटर हेड पर अंकित अपने नाम एवं विद्या के साथ अधिकतम तीन प्रस्तुतियों के साथ ऑडिशन में शामिल हो सकते हैं। समूह विधा में प्रतिभागियों की अधिकतम संख्या 20 निर्धारित की गई है।

शहर में व्याप्त समस्याओं के समाधान कराने को लेकर समाजसेवी देंगे धरना

गोड्डा । गोड्डा नगर परिषद क्षेत्र के वार्ड नंबर 2 से पार्षद एवं समाजसेवी सौरभ पाराशर उर्फ बच्चू झा ने शहर में व्याप्त समस्याओं के निराकरण नहीं होने से आहत होकर धरना का फैसला किया है। इस संदर्भ में उन्होंने कहा है कि नगर परिषद क्षेत्र में सड़क, नाला, जल निकासी एवं अन्य मूलभूत विकास कार्यों की लगातार देरी को लेकर मैंने विभागीय एवं प्रशासनिक स्तर पर कई बार आवेदन, पत्राचार एवं निवेदन किया है, लेकिन अब तक अपेक्षित समाधान नहीं निकला। 18.03.2025 को हाईमास्ट लाइट मामले में विभाग द्वारा जाँच का निर्देश दिए जाने के बावजूद आज तक जाँच की स्पष्ट एवं प्रभावी कार्रवाई सामने नहीं आई है। वहीं NIT संख्या UDD/NPG/11/2024-25 एवं UDD/NPG/06/2024-25 से संबंधित राज कचहरी तालाब से मछली गोदाम तक नाला निर्माण कार्य की स्थिति भी स्थल निरीक्षण में जाँच का विषय है। इसी प्रकार हटिया चौक बजरंगबली स्थान से रेस्ट हाउस तक नाला निर्माण के संबंध में भी हटिया चौक बजरंगबली के पास नाला निर्माण कार्य नहीं हुआ है, जिसकी स्थल निरीक्षण एवं अभिलेखों के आधार पर निष्पक्ष जाँच आवश्यक है।

जेएसएलपीएस की नई एचआर पॉलिसी लागू होने पर कर्मियों में खुशी

संताल एक्सप्रेस

गोड्डा । लंबे समय से प्रतीक्षित जेएसएलपीएस की नई मानव संसाधन पॉलिसी लागू होने पर राज्य भर से शनिवार को रांची पहुंचे जेएसएलपीएस कर्मियों ने सूबे की ग्रामीण विकास, ग्रामीण कार्य एवं पंचायती राज मंत्री दीपिका पांडेय सिंह का आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर कर्मियों ने ढोल-नगाड़ों और पारंपरिक नृत्य के साथ मंत्री का स्वागत किया। कर्मियों में लंबे इंतजार के बाद एचआर पॉलिसी लागू होने को लेकर खासा उत्साह और खुशी देखने को मिली। नई एचआर पॉलिसी के लागू होने से जेएसएलपीएस में करीब 1,300 अतिरिक्त पदों पर रोजगार के अवसर सृजित होंगे। इस अवसर पर मंत्री दीपिका पांडेय सिंह ने कहा कि जेएसएलपीएस कर्मियों की भूमिका राज्य की ग्रामीण महिलाओं को सशक्त बनाने और सरकारी योजनाओं को जमीनी स्तर तक पहुंचाने में बेहद महत्वपूर्ण है। उन्होंने इस निर्णय के लिए माननीय मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन एवं वित्त मंत्री जी का आभार व्यक्त किया तथा जेएसएलपीएस कर्मियों को उनके निरंतर प्रयासों और धैर्य के लिए धन्यवाद दिया। मंत्री दीपिका पांडेय सिंह ने कहा कि सशक्त जेएसएलपीएस, सशक्त महिलाएं और सशक्त ग्रामीण अर्थव्यवस्था झारखंड के विकास की मजबूत नींव हैं। इस अवसर पर नगर विकास मंत्री सुदिव्य कुमार सोनू ने कहा कि जेएसएलपीएस की पहचान उसके महिला समूह को लेकर होती है। जो निर्णय जेएसएलपीएस कर्मियों के लिए लिया गया है वो उनके सुरक्षित भविष्य के लिए, उनके रोजगार के लिए महत्वपूर्ण है, ऐसा ना कभी पहले हुआ था और ना ही शायद कभी हो पाएगा। कार्यक्रम में पाकुड़ विधायक निशात आलम, कांग्रेस नेत्री रमा खलको एवं जेएसएलपीएस के अधिकारी व कर्मचारी उपस्थित रहे।

डहरे करम बेड़हा कार्यक्रम 13 सितंबर को

गोड्डा। विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर आज वृहद झारखंड कला संस्कृति मंच के बैनर तले जिला में कुड़मि समुदाय तीसरी बार डहरे करम बेड़हा आयोजन करने का निर्णय लिया गया।

एस. आर. पब्लिक स्कूल, तियोडीह में बैठक किया गया।

बैठक की अध्यक्षता एस एस आर पब्लिक स्कूल के निदेशक श्रवण कुमार महतो ने किया। बैठक में सभी संयोजक मंडली के सदस्यो की सहमती से 13 सितंबर 2026 को कार्यक्रम का समय निर्धारित किया गया।

विश्व आदिवासी दिवस पर निकली रैली

मेहरमा। विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर रविवार को जहेरथान, मांझीथान संवर्धन समिति के तत्वावधान में मेहरमा चौक से भव्य आदिवासी रैली निकाली गई। समिति के अध्यक्ष अमीन मुर्मू एवं सचिव महेंद्र उरांव के नेतृत्व में निकली रैली में बड़ी संख्या में आदिवासी समाज के महिला-पुरुष शामिल हुए। रैली में शामिल लोगों ने पारंपरिक नारों के साथ आदिवासी एकता और अधिकारों का संदेश दिया। रैली के दौरान जल, जंगल, जमीन हमारा है, एक तीर, एक कमान, विश्व के आदिवासी एक समान, दिशोम गुरु अमर रहें, सिद्धू-कान्हू अमर रहें, कार्तिक उरांव अमर रहें÷ और ÷बिरसा मुंडा अमर रहें जैसे नारे लगाए गए। रैली मेहरमा चौक से निकलकर पिरोजपुर स्थित सिद्धू-कान्हू चौक पहुंची।सिद्धू-कान्हू चौक पर राम बाबा मंजू मरांडी के नेतृत्व में आदिवासी रीति-रिवाज एवं परंपरा के अनुसार पूजा-अर्चना की गई।मौके पर उपस्थित लोगों ने आदिवासी समाज की संस्कृति, परंपरा और विरासत को संरक्षित रखने का संकल्प लिया।कार्यक्रम में मुख्य रूप से झामुमो प्रखंड अध्यक्ष शत्रुघ्न सिंह उपस्थित रहे। उन्होंने सिद्धू-कान्हू की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि दी और उपस्थित लोगों को विश्व आदिवासी दिवस की शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर झामुमो प्रखंड सचिव ताला टुडू, जिला समिति सदस्य ईश्वर मरांडी, बिसू उरांव, रोहित उरांव, वीरेंद्र कुमार, श्याम उरांव, राज कुमार किंडो, जितेंद्र उरांव, अनिल उरांव, रविना देवी, चांदनी कुमारी, लक्ष्मी कुमारी, गीता कुमारी, अन्नु टोप्पो सहित बड़ी संख्या में समाज के लोग मौजूद थे। सभी ने सिद्धू-कान्हू की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर उन्हें नमन किया।

मजदूर विरोधी रवैया के खिलाफ धरना आज

गोड्डा। केंद्र सरकार के मज़दूर विरोधी रवैया और प्रबंधन की मनमानी के ख़िलाफ़ आगामी 10 अगस्त को देश के तमाम कोल इंडिया के एरिया कार्यालय के समक्ष एक दिवसीय धरना, प्रदर्शन किया जाएगा। इसकी जानकारी माकपा के वरीय सह मज़दूर नेता डा. राधेश्याम चौधरी ने दी। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार मज़दूरों को परेशान कर रही है। चार लेबर कोड जबरन थोपा गया है। डा. चौधरी ने कहा कि कोयला उद्योग में लंबित राष्ट्रीय कोयला वेतन समझौता एवं एनसीडब्ल्ए 12वीं को जल्द से जल्द लागू करने, जेबीसीसीआई 12वीं का गठन अभिलंब करने, मज़दूरों की ज्वलंत मांगों को लेकर सुरक्षा, रक्षा, भविष्य की गारंटी देने आदि की मांग को लेकर संयुक्त ट्रेड यूनियन द्वारा देशव्यापी आंदोलन का बिगुल फूंक दिया गया है।

विधिक जागरूकता शिविर आयोजित

संवाददाता नाला (जामताड़ा)। झारखंड राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, रांची के निर्देशानुसार जिला विधिक सेवा प्राधिकार, जामताड़ा के तत्वावधान में 'अंतर्राष्ट्रीय नशा निरोधक एवं अवैध तस्करी विरोधी दिवस' के अवसर पर नाला प्रखंड क्षेत्र के सकजुड़िया में नशामुक्ति एवं विधिक जागरूकता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का आयोजन प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश-सह-अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकार, जामताड़ा राधा कृष्ण तथा सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकार, जामताड़ा के आदेश एवं मार्गदर्शन में किया गया। कार्यक्रम में पीएलवी सह अधिकार मित्र जयंती दत्ता ने ग्रामीणों को नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक किया।इस दौरान मादक पदार्थों के सेवन से होने वाले शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक नुकसान के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। साथ ही मादक द्रव्यों की अवैध तस्करी से संबंधित कानूनी प्रावधानों तथा जरूरतमंद लोगों को निःशुल्क विधिक सहायता प्राप्त करने की प्रक्रिया के बारे में भी बताया गया।कार्यक्रम के अंत में अधिकार मित्र जयंती दत्ता ने उपस्थित ग्रामीणों को नशे से दूर रहने तथा नशामुक्त समाज के निर्माण में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने की शपथ दिलाई। इसके अलावा राज्य सरकार द्वारा संचालित विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी भी ग्रामीणों को दी गई।

जनसंपर्क और जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन

गोड्डा। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अध्यक्ष सह प्रधान जिला जज रमेश कुमार एवं सचिव दीपक कुमार के निर्देश पर रविवार को जिले के विभिन्न प्रखंडों में स्थापित लीगल एड क्लिनिक की ओर से सूदर गांवों में जनसंपर्क एवं जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान डालसा की ओर से गठित टीम में शामिल अधिकार मित्रों ने नालसा योजना 2016 की जानकारी दी। इसी कड़ी में सदर प्रखंड की टीम में शामिल इंतेखाब आलम व चंपा कुमारी ने महर्षि मेंहीं नगर में आयोजित शिविर में कहा कि वरिष्ठ नागरिकों को बुनियादी अधिकार सुनिश्चित कराना सर्वोपरि है। इसके लिए राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरणद्वारा बुर्जुगों को उनके कानूनी अधिकार और न्याय सुनिश्चित कराना आवश्यक है। इस योजना के तहत वरिष्ठ नागरिकों को उनके बुनियादी अधिकारों, कानूनी सुरक्षा और सरकारी योजनाओं के बारे में जानकारी देने, राष्ट्रीय, राज्य, जिला और तालुका स्तर पर बुजुर्गों के लिए मुफ्त कानूनी सहायता और वकीलों की उपलब्धता सुनिश्चित कराने, बुजुर्गों को केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा चलाई जा रही है ।

नाला में धोबी महासंघ की नई कमेटी गठित

संवाददाता नाला (जामताड़ा)। राजकीयकृत प्लस टू उच्च विद्यालय नाला परिसर में रविवार को अखिल भारतीय धोबी महासंघ सह गाडगे संस्थान के बैनर तले नाला एवं कुंडहित प्रखंड के धोबी समाज के सदस्यों की बैठक आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता जामताड़ा जिला अध्यक्ष कार्तिक रजक ने की। इस दौरान समाज की एकजुटता, संगठन के विस्तार एवं सामाजिक हितों को लेकर चर्चा की गई। बैठक में सर्वसम्मति से नाला प्रखंड कमेटी का गठन किया गया। सर्वसम्मति से पदाधिकारियों का चयन बैठक में गठित नाला प्रखंड कमेटी में विश्वम्भर मंडल को अध्यक्ष, आनंद मंडल को सचिव, पंकज मंडल को कोषाध्यक्ष, विश्वजीत मंडल को उपाध्यक्ष तथा पूर्ण चन्द्र मंडल को संयुक्त सचिव चुना गया। नवनिर्वाचित पदाधिकारियों से संगठन को मजबूत करने एवं समाज के हित में सक्रिय भूमिका निभाने की अपील की गई। कुंडहित और फतेहपुर में भी गठित होगी कमेटी बैठक में निर्णय लिया गया कि नाला प्रखंड कमेटी के नेतृत्व में आने वाले दिनों में कुंडहित एवं फतेहपुर प्रखंड की कमेटियों का गठन किया जाएगा।

संसद का मानसून सत्र : लोकतंत्र की अग्निपरीक्षा

सरकार के निर्णयों पर सवाल उठाना विपक्ष का अधिकार है और अपने निर्णयों का जवाब देना सरकार का दायित्व। लोकतंत्र की सुंदरता इसी संवाद में है। भारतीय लोकतंत्र में संसद केवल कानून बनाने वाली संस्था नहीं है। संसद वह सर्वोच्च मंच है जहाँ देश की जनता की आकांक्षाएँ, अपेक्षाएँ,असहमति और समस्याएँ जनप्रतिनिधियों के माध्यम से राष्ट्रीय विमर्श का हिस्सा बनती हैं। सत्ता पक्ष और विपक्ष लोकतंत्र के दो महत्वपूर्ण पक्ष हैं। दोनों के बीच मतभेद होना स्वाभाविक है। सरकार के निर्णयों पर सवाल उठाना विपक्ष का अधिकार है और अपने निर्णयों का जवाब देना सरकार का दायित्व। लोकतंत्र की सुंदरता इसी संवाद में है। वर्तमान मानसून सत्र की तस्वीर इस लोकतांत्रिक भावना के सामने एक गंभीर प्रश्न खड़ा कर रही है। सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच टकराव लगातार बढ़ता दिखाई दे रहा है। कई महत्वपूर्ण मुद्दे सदन की कार्यवाही में व्यवधान के कारण अपेक्षित गंभीर चर्चा से दूर रह गए हैं। सत्र के कुछ ही दिन शेष हैं। ऐसे में यह सत्र संसदीय इतिहास में विधायी कार्यों के साथ हंगामे और गतिरोध के लिए भी याद किया जा सकता है। संसद में संख्या बल की अपनी वास्तविकता है। सरकार के पास बहुमत है तो उसे कानून बनाने का संवैधानिक अधिकार प्राप्त है। विपक्ष के पास संख्या कम है तो इसका अर्थ यह नहीं कि उसकी आवाज का महत्व कम हो गया। लोकतंत्र में बहुमत सरकार बनाता है। विपक्ष सरकार को आईना दिखाता है। दोनों की भूमिकाएँ अलग हैं। दोनों की जिम्मेदारी समान रूप से महत्वपूर्ण है। इसी संसदीय वातावरण में 2029 के आम चुनाव से पहले परिसीमन का प्रश्न देश की राजनीति के सामने एक बड़ी चुनौती बनकर उभरा है। यह केवल लोकसभा की सीटों की संख्या बढ़ाने या घटाने का विषय नहीं है। इसके साथ देश के संघीय ढाँचे, राज्यों के राजनीतिक प्रतिनिधित्व,जनसंख्या नियंत्रण और महिला आरक्षण जैसे कई महत्वपूर्ण प्रश्न जुड़े हुए हैं। इस वर्ष केंद्र सरकार ने संविधान संशोधन विधेयक के माध्यम से लोकसभा की अधिकतम सदस्य संख्या 850 करने का प्रस्ताव रखा था। इसमें राज्यों के लिए अधिकतम 815 और केंद्रशासित प्रदेशों के लिए 35 सीटों का प्रावधान प्रस्तावित किया गया था। प्रस्तावित व्यवस्था का उद्देश्य जनसंख्या के आधार पर प्रतिनिधित्व के पुनर्संयोजन के साथ महिलाओं के लिए एक-तिहाई आरक्षण को प्रभावी बनाने की संवैधानिक राह तैयार करना भी था। मगर इस प्रस्ताव को आवश्यक राजनीतिक समर्थन नहीं मिल सका। संविधान संशोधन विधेयक लोकसभा में आवश्यक विशेष बहुमत प्राप्त नहीं कर पाया और आगे नहीं बढ़ सका। इससे जुड़ी परिसीमन संबंधी प्रक्रिया भी उसी समय रुक गई। इसलिए वर्तमान स्थिति में 850 सदस्यीय लोकसभा की कोई अंतिम और लागू व्यवस्था नहीं है। 2029 के चुनाव से पहले यदि इस दिशा में कोई नया संवैधानिक प्रयास होता है तो उसे संसद की निर्धारित प्रक्रिया और व्यापक राजनीतिक सहमति से गुजरना होगा। यहीं से परिसीमन का वास्तविक प्रश्न शुरू होता है। भारत में जनसंख्या के आधार पर राजनीतिक प्रतिनिधित्व का सिद्धांत लोकतांत्रिक दृष्टि से स्वाभाविक दिखाई देता है। मगर भारत जैसे विशाल और विविध देश में केवल जनसंख्या को आधार बनाकर प्रतिनिधित्व तय करना अपने साथ कई दूसरे प्रश्न भी खड़े करता है। दक्षिण भारत के कई राज्यों ने दशकों तक जनसंख्या नियंत्रण की दिशा में उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। इन राज्यों की चिंता है कि यदि भविष्य में सीटों का पुनर्विन्यास केवल जनसंख्या के आधार पर होता है तो जनसंख्या नियंत्रण में सफल राज्यों का राजनीतिक प्रतिनिधित्व अपेक्षाकृत कम हो सकता है।

दूसरी ओर अधिक जनसंख्या वाले राज्यों की अपनी दलील है। उनका कहना है कि लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व में जनसंख्या का उचित प्रतिबिंब होना चाहिए। यही वह संतुलन है जिसे साधना आसान नहीं है। यदि किसी राज्य ने परिवार नियोजन और जनसंख्या नियंत्रण के क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन किया है तो उसे इसका राजनीतिक नुकसान नहीं होना चाहिए। साथ ही अधिक जनसंख्या वाले राज्यों को उनके वास्तविक जनसंख्या भार के अनुरूप प्रतिनिधित्व से वंचित रखना भी लोकतांत्रिक दृष्टि से स्थायी समाधान नहीं हो सकता। समाधान दोनों के बीच संतुलन में ही संभव है। इसीलिए परिसीमन का प्रश्न सत्ता पक्ष और विपक्ष के बीच सामान्य राजनीतिक मतभेद से कहीं बड़ा है। यह भारतीय संघीय व्यवस्था की संवेदनशील परीक्षा है। तमिलनाडु, केरल जैसे दक्षिणी राज्यों की चिंताओं को उत्तर प्रदेश,बिहार और राजस्थान जैसे अधिक जनसंख्या वाले राज्यों की राजनीतिक वास्तविकता के साथ संतुलित करना होगा। डीएमके, समाजवादी पार्टी और अन्य क्षेत्रीय दलों की आपत्तियों को केवल राजनीतिक विरोध मानकर खारिज करने के बजाय उनके पीछे मौजूद संघीय चिंता को समझना होगा। महिला आरक्षण भी इसी विमर्श का महत्वपूर्ण हिस्सा है। संसद और राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षण का संवैधानिक प्रावधान भारतीय लोकतंत्र में ऐतिहासिक परिवर्तन की क्षमता रखता है। स्थानीय निकायों में महिलाओं की भागीदारी ने पहले ही यह प्रमाणित किया है कि राजनीतिक प्रतिनिधित्व सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बन सकता है।

महिला आरक्षण को प्रभावी बनाने के लिए परिसीमन से जुड़ी प्रक्रिया महत्वपूर्ण है। इसलिए सीटों के पुनर्विन्यास और महिला प्रतिनिधित्व के बीच संतुलन बनाना भी आवश्यक होगा। यह काम जल्दबाजी में नहीं बल्कि व्यापक राजनीतिक संवाद के माध्यम से होना चाहिए। इसी मानसून सत्र में विदेशी अंशदान से संबंधित विधायी प्रस्ताव भी चर्चा का विषय है। विदेशी अंशदान विनियमन संशोधन विधेयक 2026 का उद्देश्य विदेशी धन प्राप्त करने वाली संस्थाओं की जवाबदेही और निगरानी को मजबूत करना है।

गाड़ी लोहरदगा मेल- एक रेलगाड़ी, कई यादें : झारखंड की लोक संस्कृति का जीवंत दृश्य दस्तावेज

– शत्रुघ्न प्रसाद

रांची-लोहरदगा नैरो गेज रेललाइन और उससे जुड़ी सामाजिक- सांस्कृतिक कहानियों को समेटती 27 मिनट की वृत्तचित्र फिल्म गाड़ी लोहरदगा मेल मेघनाद भट्टाचार्य और बीजू टोप्पो द्वारा निर्देशित है। यह फिल्म न केवल उस रेललाइन के तकनीकी या ऐतिहासिक पहलुओं को दिखाती है, बल्कि उससे प्रभावित लोगों की रोज़मर्रा की ज़िंदगी, स्मृतियाँ और लोकजीवन को संवेदनशील तरीके से सामने लाती है।

एक सांस्कृतिक धरोहर की विदाई

नैरो गेज ट्रेन रांची और लोहरदगा को लगभग एक सदी तक जोड़ती रही। जनवरी 2004 में इस लाइन का ब्रॉड गेज में परिवर्तन कर दिया जाना उस रेल सेवा के वक़्त के साथ खत्म होने जैसा था। मेघनाद भट्टाचार्य , बीजू टोप्पो और उनकी टीम ने रेललाइन की आखिरी यात्राओं को कैमरे में कैद कर लिया – ऐसा फुटेज, जो आज उस ट्रेन और उससे जुड़े समुदायों के लिए अमूल्य दृश्य-आर्काइव बन गया है। फिल्मकर्ता इसे केवल परिवहन की कहानी नहीं बल्कि एक सांस्कृतिक दुनिया की बेमौजूदगी के रूप में देखते हैं।

लोकसंगीत- फिल्म की आत्मा और संदर्भ

फिल्म में लोकसंगीत का स्थान केंद्रीय है। ट्रेन की डिब्बियों में बैठे कलाकार–डॉ. रामदयाल मुंडा, मुकुंद नायक और मधु मंसूरी हंसमुख–नागपुरी लोकगीत गाते दिखते हैं। ये गीत पारंपरिक धुनों के साथ-साथ पलायन, बिछोह, प्रेम, प्रकृति और आदिवासी-ग्रामीण जीवन के संवेदनशील विषयों को उद्घाटित करते हैं। संगीत केवल पृष्ठभूमि नहीं बल्कि कथानक का संवहनीय अंग बनकर सामाजिक अनुभवों को भाषा देता है।

समाज और अर्थव्यवस्था की परतें

फिल्म में ट्रेन को केवल यातायात का साधन दिखाने से परे, एक सामाजिक-आर्थिक धुरी के रूप में प्रस्तुत किया गया है। इस रेल मार्ग के जरिए लोग बाज़ार जाते, विद्यार्थी शहरों में पढ़ने आते-जाते थे, और ब्रिटिश राज में कई आदिवासी मजदूर असम के चाय बागानों में काम के लिए रवाना हुए। इन व्यक्तिगत यात्राओं और सामूहिक यादों के ज़रिये फिल्म उस क्षेत्र की नब्ज़ पकड़ती है जो परिवर्तन के साथ कहीं दब जाती है।

निर्देशक का उद्देश्य और संवेदनशीलता

मेघनाद भट्टाचार्य ने इस फिल्म को लोकस्मृति के संरक्षण के प्रयास से जोड़ा है। उनके अनुसार, विकास के बहाने जब पुरानी रेल लाइनों को हटाया जा रहा था, तब न केवल भौतिक संरचनाएँ बल्कि? उनसे

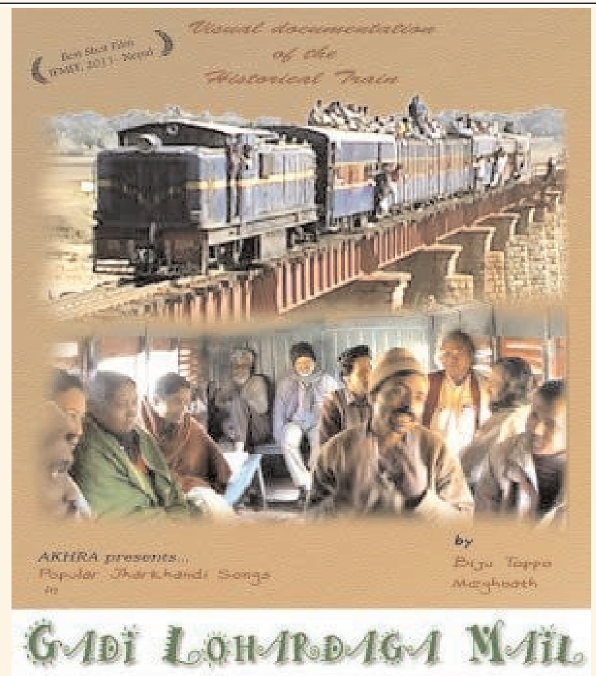

जुड़ी बोलती हुई संस्कृतियाँ और लोकजीवन भी लुप्त होते जा रहे थे। इसे रोकने का तात्पर्य फिल्म में केवल आर्काइविंग से नहीं, बल्कि उन आँखों-हवाओं, गीतों और व्यक्तियों की भावनात्मक गाथा को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने से है। फिल्म समारोहों में प्रस्तुति और पुरस्कार

%गाड़ी लोहरदगा मेल% को भारत और विदेशों के कई प्रतिष्ठित मंचों पर प्रदर्शित किया गया। वर्ष 2011 में नेपाल के इंटरनेशनल फोक म्यूजिक फिल्म फेस्टिवल में इसे सर्वश्रेष्ठ लघु फिल्म का पुरस्कार मिला। इसके अलावा यह लंदन इंटरनेशनल डॉक्यूमेंट्री फेस्टिवल, जेएनयू के सिनेमाला और अन्य फिल्म समारोहों में भी दिखाई जा चुकी है, जिससे इसकी लोक-सांस्कृतिक प्रासंगिकता और फिल्मकला दोनों क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर मान्यता प्राप्त हुई।

दृश्य-भाषा और फौटेज का महत्व

27 मिनट की सीमित अवधि के भीतर फिल्म अपने दृश्यात्मक समृद्धि और ऑडियो-फुटेज के दम पर व्यापक कथ्य प्रस्तुत करती है। अंतिम यात्राओं के दौरान ली गई वास्तविकता-भरी शूटिंग और कलाकारों के सजीव संगीत ने फिल्म को दस्तावेजी मूल्य के साथ-साथ भावनात्मक गहराई भी दी है। यह फुटेज अब उस रेल मार्ग के इतिहास का प्राथमिक स्रोत भी माना जा सकता है।

स्थानीय स्मृति से सार्वभौमिक विषय तक

हालांकि फिल्म विशिष्ट रूप से झारखंड की लोक-संस्कृति को केंद्र में रखती है, इसमें उठाए गए विषय– परिवर्तन के साथ सामुदायिक खोई पहचान, पलायन और जीवन के रीतिरिवाज़–वैश्विक मानवीय अनुभवों से संवाद करते हैं। यही कारण है कि इसे देश-विदेश के समारोहों में सराहा गया और दर्शक स्थानीक स्मृति से जुड़े सार्वभौमिक भावनाओं तक पहुँच पाए।

निष्कर्ष

%गाड़ी लोहरदगा मेल% सिर्फ एक ट्रेन की विदाई का रोना नहीं है; यह उस सांस्कृतिक ताने-बाने का साक्ष्य है जिसे आधुनिकता के कदम जीर्ण कर देती है। मेघनाद भट्टाचार्य और बीजू टोप्पो ने जो फुटेज संजोया है, वह झारखंड की लोकस्मृति के संरक्षण में एक महत्वपूर्ण दस्तावेज बनकर उभरा है–एक ऐसा दस्तावेज जो स्थानीय यादों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संदर्भ में पुनः प्रस्तुत करता है।

आदिवासी संस्कृति भारत की आत्मा है, विकास की दौड़ में पीछे नहीं छूटना चाहिए

कांतिलाल मांडोत

भारत की पहचान केवल उसके महानगरों, आधुनिक तकनीक, विशाल अर्थव्यवस्था और तेजी से बदलते जीवन से नहीं बनती, बल्कि उन करोड़ों लोगों की परंपराओं, भाषाओं, लोककथाओं, प्रकृति से रिश्ते और सामुदायिक जीवन से भी बनती है, जिन्होंने सदियों से इस भूमि की संस्कृति को समृद्ध किया है। आदिवासी समाज इसी सांस्कृतिक विरासत का अत्यंत महत्वपूर्ण हिस्सा है। हर वर्ष 9 अगस्त को मनाया जाने वाला विश्व आदिवासी दिवस हमें केवल आदिवासी समुदाय के अधिकारों की याद नहीं दिलाता, बल्कि यह भी सोचने का अवसर देता है कि देश के विकास में आदिवासी समाज की भागीदारी कितनी है और विकास की मुख्यधारा में उसे उसका उचित स्थान मिल पा रहा है या नहीं।

संयुक्त राष्ट्र महासभा ने दिसंबर 1994 में 9 अगस्त को विश्व के आदिवासी लोगों का अंतर्राष्ट्रीय दिवस घोषित किया था। यह तारीख इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि 9 अगस्त 1982 को संयुक्त राष्ट्र में आदिवासी आबादी से संबंधित कार्य समूह की पहली बैठक हुई थी। इस दिवस का मूल उद्देश्य आदिवासी लोगों के अधिकारों, उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति, उनकी संस्कृति तथा उनकी विशिष्ट पहचान के संरक्षण के प्रति दुनिया का ध्यान आकर्षित करना है। भारत में भी यह दिन अनेक स्थानों पर रैलियों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, लोकनृत्यों, सभाओं और सामाजिक जागरूकता अभियानों के माध्यम से मनाया जाता है।

आदिवासी शब्द अपने भीतर ही एक गहरा अर्थ रखता है। 'आदि' और 'वासी' से मिलकर बना यह शब्द मूल निवास और प्राचीन जुड़ाव की भावना को व्यक्त करता है। भारतीय संविधान में 'अनुसूचित जनजाति' शब्द का प्रयोग किया गया है। देश में सैकड़ों जनजातीय समूह और उपसमूह हैं, जिनकी अपनी भाषाएं, बोलियां, वेशभूषा, लोकगीत, लोकनृत्य, रीति-रिवाज और जीवन पद्धतियां हैं। भील, गोंड, संथाल, मुंडा, मीणा, उरांव, हो, खासी, नागा, बोडो और अनेक अन्य समुदाय भारत की विविधता को अपनी विशिष्ट पहचान प्रदान करते हैं। भारतीय संस्कृति में आदिवासी समाज का योगदान केवल लोकनृत्य और पारंपरिक उत्सवों तक सीमित नहीं है। आदिवासी जीवन प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व का संदेश देता है। जल, जंगल और जमीन उनके लिए केवल आर्थिक संसाधन नहीं हैं, बल्कि जीवन, संस्कृति और अस्तित्व का आधार हैं। पेड़-पौधों, नदियों, पहाड़ों, पशु-पक्षियों और धरती के प्रति सम्मान की भावना उनकी परंपराओं में गहराई से दिखाई देती है। आधुनिक दुनिया आज पर्यावरण संरक्षण, जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता की रक्षा की बात कर रही है, जबकि अनेक आदिवासी समुदाय लंबे समय से प्रकृति के साथ संतुलित जीवन जीने की परंपरा को आगे बढ़ाते आए हैं।

आदिवासी समाज की देशज ज्ञान परंपरा भी भारत की अमूल्य धरोहर है। औषधीय पौधों की पहचान, मौसम के बदलाव को समझना, जंगलों की प्रकृति को जानना, जल संरक्षण के पारंपरिक तरीके, खेती की स्थानीय पद्धतियां और प्राकृतिक आपदाओं के संकेतों को समझने जैसी अनेक विधाएं पीढ़ी-दर-पीढ़ी मौखिक परंपरा से आगे बढ़ी हैं। यह ज्ञान किसी विश्वविद्यालय की किताब में पैदा नहीं हुआ, बल्कि प्रकृति के साथ लंबे अनुभव से विकसित हुआ है। यही कारण है कि आदिवासी समाज के पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण आज पूरे देश के लिए महत्वपूर्ण हो गया है। आदिवासी समाज की सामुदायिक भावना भी भारतीय संस्कृति को एक विशेष संदेश देती है। संकट के समय एक-दूसरे की सहायता करना, सामूहिक श्रम करना और गांव के हित को व्यक्तिगत हित से ऊपर रखना उनकी जीवन पद्धति का हिस्सा रहा है। 'हलमा' जैसी परंपराएं इसका उदाहरण हैं, जिसमें किसी व्यक्ति या परिवार की कठिनाई को पूरे समुदाय की जिम्मेदारी मानकर सामूहिक रूप से सहायता की जाती है। आधुनिक समाज में जब व्यक्ति अपने तक सीमित होता जा रहा है, तब ऐसी परंपराएं सामाजिक एकता और सहयोग का महत्वपूर्ण संदेश देती हैं।

लेकिन इस गौरवपूर्ण सांस्कृतिक विरासत के साथ एक बड़ा सवाल भी जुड़ा हुआ है। क्या आदिवासी समाज को आज वे मूलभूत सुविधाएं मिल रही हैं जिनका अधिकार देश के प्रत्येक नागरिक को है? शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, बिजली, स्वच्छ पेयजल, इंटरनेट, रोजगार और बेहतर आवास जैसी सुविधाओं के मामले में अनेक आदिवासी क्षेत्रों ने निश्चित रूप से प्रगति की है, लेकिन कई दूरदराज और वनवासी इलाकों में अभी भी सुविधाओं की कमी चिंता का विषय बनी हुई है। दुर्गम भौगोलिक परिस्थितियां, गरीबी, शिक्षा की कमी, स्वास्थ्य सेवाओं की दूरी और रोजगार के सीमित अवसर आज भी अनेक परिवारों के सामने चुनौती हैं।

विकास का अर्थ केवल सड़क या भवन बनाना नहीं होना चाहिए। विकास तब सार्थक होगा जब वह स्थानीय समाज की जरूरतों, संस्कृति और परंपराओं को समझकर किया जाए। आदिवासी क्षेत्रों में योजनाएं बनाते समय वहां रहने वाले लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करना आवश्यक है। जिस समाज ने सदियों तक जंगल और प्राकृतिक संसाधनों को समझकर जीवन चलाया है, उसकी राय को विकास योजनाओं में महत्व मिलना चाहिए। किसी गांव में स्कूल बना देना पर्याप्त नहीं है, यदि वहां शिक्षक नियमित रूप से नहीं पहुंचते। अस्पताल बना देना पर्याप्त नहीं है, यदि उसमें चिकित्सक, दवाइयां और आवश्यक जांच सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं। सड़क बनाना जरूरी है, लेकिन उसके साथ सुरक्षित परिवहन और बाजार तक पहुंच भी उतनी ही जरूरी है। सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न शिक्षा का है। आदिवासी बच्चों को ऐसी शिक्षा मिलनी चाहिए जो उन्हें आधुनिक ज्ञान से जोड़ने के साथ उनकी मातृभाषा और सांस्कृतिक पहचान से भी दूर न करे। प्रारंभिक शिक्षा यदि स्थानीय भाषा में उपलब्ध हो और उसके बाद धीरे-धीरे अन्य भाषाओं का ज्ञान दिया जाए तो बच्चों के सीखने की प्रक्रिया अधिक प्रभावी हो सकती है। इसी प्रकार आदिवासी युवाओं के लिए कौशल विकास, उच्च शिक्षा और रोजगार के अवसर बढ़ाना आवश्यक है।

स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी विशेष ध्यान देने की जरूरत है। अनेक आदिवासी बस्तियां आज भी ऐसे क्षेत्रों में स्थित हैं जहां अस्पताल तक पहुंचना कठिन है। गर्भवती महिलाओं, बच्चों और बुजुर्गों के लिए समय पर स्वास्थ्य सुविधा उपलब्ध कराना सरकार की प्राथमिकता होनी चाहिए। मोबाइल चिकित्सा सेवाएं, स्थानीय स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण और दूरस्थ क्षेत्रों में बेहतर चिकित्सा ढांचा इस दिशा में उपयोगी कदम हो सकते हैं। आदिवासी समाज की सबसे बड़ी चुनौती यह भी है कि विकास के नाम पर उसकी जमीन, जंगल और सांस्कृतिक परिवेश प्रभावित न हो। विस्थापन केवल घर छूटने का नाम नहीं है। जब कोई परिवार अपने पारंपरिक क्षेत्र से दूर होता है तो उसके साथ उसकी सामाजिक संरचना, आजीविका, भाषा, लोकज्ञान और सांस्कृतिक स्मृतियां भी प्रभावित होती हैं। इसलिए किसी भी विकास परियोजना में स्थानीय लोगों के अधिकारों, आजीविका और पुनर्वास को सर्वोच्च महत्व दिया जाना चाहिए।

संयुक्त राष्ट्र ने 13 सितंबर 2007 को आदिवासी लोगों के अधिकारों से संबंधित घोषणा को अंगीकृत किया था। इसका मूल संदेश समानता, गरिमा, संस्कृति और अधिकारों के सम्मान का है। भारत ने भी इस घोषणा के पक्ष में मतदान किया था। भारतीय संविधान ने अनुसूचित जनजातियों के लिए विशेष संवैधानिक प्रावधान किए हैं। पांचवीं और छठी अनुसूची सहित अनेक व्यवस्थाओं का उद्देश्य जनजातीय क्षेत्रों और समुदायों के हितों की रक्षा करना है। आवश्यकता इस बात की है कि इन संवैधानिक भावनाओं और कानूनी प्रावधानों का प्रभाव जमीन पर भी दिखाई दे।

विश्व आदिवासी दिवस केवल उत्सव का अवसर न बने। इस दिन होने वाली रैलियां और सांस्कृतिक कार्यक्रम महत्वपूर्ण हैं, लेकिन उससे भी अधिक जरूरी है कि समाज और सरकारें आदिवासी समुदाय की वास्तविक समस्याओं पर गंभीरता से विचार करें। जिस राज्य के किसी आदिवासी क्षेत्र में आज भी पेयजल, विद्यालय, स्वास्थ्य केंद्र, बिजली, सड़क या इंटरनेट जैसी मूलभूत सुविधा पर्याप्त नहीं है, वहां संबंधित सरकार को विशेष अभियान चलाकर उस कमी को दूर करना चाहिए।

पाकुड़ की खबरें

झामुमो कार्यालय में आदिवासी दिवस मनाया गया

संताल एक्सप्रेस संवाददाता पाकुड़। जिले के धनुषपूजा स्थित जिला झामुमो कार्यालय में विश्व आदिवासी दिवस धूमधाम से मनाया गया। इस दैरान उपस्थित आदिवासी महिलाएं व पुरूष अपने पारम्परिक वस्त्र में पार्टी कार्यालय पहुँचे व विश्व आदिवासी दिवस के उपलक्ष्य पर कार्यक्रम आयोजित कर सभ्यता एवं संस्कृति को उजागर किया गया। कार्यक्रम मुख्य अतिथि के रूप में जिला अध्यक्ष अजीजुल ईस्लाम, जिला उपाध्यक्ष हाजी समद अली, सांसद प्रतिनिधि सह केंद्रीय सदस्य श्याम यादव ने शामिल होकर कार्यक्रम का उद्घाटन किया। वही आदिवासी वेश भूषा से सुसज्जित महिला पुरषों ने सभी पदाधिकारीयो का भव्य स्वागत किया। उपस्थित जनसमूह और कार्यकर्ताओ को झामुमो जिला अध्यक्ष अजीजुल ईस्लाम ने संबोधित करते हुए कहा की आज पूरे विश्व में आदिवासी दिवस की धूम है। जिसका जीता जागता उदाहरण पाकुड़ में भी देखने को मिल रहा है आज बड़ी संख्या में आदिवासी महिला व पुरूष कार्यकर्ताओ की उपस्थिति से यह अंदाजा लगाया जा सकता है उन्होंने कहा की यह दुनियाभर में रहने वाले आदिवासी समुदाय की संस्कृति,भाषा और अस्तित्व को बचाने के दृष्टिकोण से मानया जाने वाला दिवस है, मौके पर केंद्रीय समिति सदस्य मिथिलेष घोष, महिला मोर्चा जिला सचिव सुशीला देवी, पूर्व जिला सचिव सुलेमान बास्की, पाकुड़ प्रखंड अध्यक्ष मुसलोद्दीन शेख, लिट्टीपाड़ा प्रखंड अध्यक्ष प्रसाद हांसदा, अल्पसंख्यक जिला उपाध्यक्ष रेजाउल हक, उपाध्यक्ष अजफारुल शेख, लखन हेम्ब्रम, रामसिंह टुडू, सहित सैकड़ों की संख्या में महिला व पुरूष कार्यकर्ता उपस्थित थे।

विश्व आदिवासी दिवस पर संस्कृति संरक्षण, जल जमीन और जंगल बचाने का लिया संकल्प

संताल एक्सप्रेस

पाकुड़। विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर जिले में उत्साह, गौरव और सांस्कृतिक चेतना के साथ विविध संस्थाओं द्वारा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। पारंपरिक वेशभूषा, लोकनृत्य, लोकगीत और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों के बीच आदिवासी समाज की गौरवशाली विरासत को नमन किया गया। कार्यक्रम में वक्ताओं ने जल, जंगल, जमीन, भाषा, संस्कृति और सामाजिक अधिकारों की रक्षा का संकल्प दोहराते हुए युवाओं से अपनी पहचान और परंपराओं पर गर्व करने का आह्वान किया।इस अवसर पर दानियल किस्कू वरिष्ठ झामुमो नेता ने कहा कि आदिवासी समाज केवल प्रकृति का संरक्षक ही नहीं, बल्कि मानवता को प्रकृति के

साथ संतुलित जीवन जीने की प्रेरणा देने वाला समाज है। आज आवश्यकता है कि विकास की मुख्यधारा में आदिवासी समाज की संस्कृति, परंपराओं और अधिकारों को समान सम्मान और स्थान मिले। मार्क बस्की जेकेएलएम पूर्व जिला अध्यक्ष ने कहा कि विश्व आदिवासी दिवस हमें अपनी जड़ों से जुड़ने और प्रकृति के संरक्षण का संदेश देता है।

आदिवासी संस्कृति हमारी राष्ट्रीय विरासत है, जिसका संरक्षण हम सभी का साझा दायित्व है।संत पॉल स्कूल कोलाजोड़ा व झारखंड प्राइवेट स्कूल एसोसिएशन के जिला अध्यक्ष गेब्रियल मुर्मू शिक्षाविद ने अपने संबोधन में कहा, आदिवासी भाषाएं, लोककला और पारंपरिक ज्ञान हमारी अमूल्य धरोहर हैं।

यदि इन्हें नई पीढ़ी तक नहीं पहुंचाया गया, तो यह हमारी सांस्कृतिक क्षति होगी।, आज का युवा अपनी पहचान पर गर्व करे, नशामुक्त समाज के निर्माण में भागीदारी निभाए और शिक्षा, कौशल तथा नेतृत्व के माध्यम से समाज को नई दिशा दे।

भाजपा एसटी मोर्चा के प्रदेश कार्य समिति के सदस्य साहेब हंसदा कहते हैं कि आदिवासी समाज ने सदियों से परिवार, संस्कृति और सामाजिक मूल्यों को संजोकर रखा है। महिलाओं का सम्मान, शिक्षा और आर्थिक सशक्तिकरण ही समाज की वास्तविक प्रगति का आधार है।जल, जंगल, जमीन की रक्षा, आदिवासी संस्कृति एवं भाषाओं के संरक्षण, सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण तथा भावी पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक विरासत से जोड़ने का संकल्प लेना चाहिए।

विश्व आदिवासी दिवस पर जिलेभर में कार्यक्रम
जनजाति सुरक्षा मंच ने जताया विरोध

संताल एक्सप्रेस संवाददातापाकुड़। विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर रविवार को पाकुड़ जिला मुख्यालय समेत विभिन्न प्रखंडों में कार्यक्रम आयोजित किए गए। शहर के रविंद्र भवन, केकेएम कॉलेज और बाजार समिति परिसर में आयोजित कार्यक्रमों में आदिवासी संस्कृति और परंपरा की झलक देखने को मिली।

रविंद्र भवन में जिला प्रशासन की ओर से आयोजित कार्यक्रम में डीसी मेघा भारद्वाज, एसपी अनुदीप सिंह, एसडीओ साइमन मरांडी, डीईओ अनीता पूर्ति, डीईएससी प्रिय श्री भगत, नगर परिषद अध्यक्ष शबरी पाल, कार्यपालक पदाधिकारी अमरेंद्र कुमार चौधरी समेत कई अधिकारी व जनप्रतिनिधि शामिल हुए। अतिथियों का पारंपरिक तरीके से स्वागत किया गया। संथाल हूल के नायकों को माल्यार्पण कर श्रद्धांजलि दी गई। स्कूली बच्चों व संथाली समुदाय के लोगों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए।वहीं, हिरणपुर में जनजाति सुरक्षा मंच के संथाल परगना प्रांत संयोजक सुलेमान मुर्मू ने विश्व आदिवासी दिवस का विरोध किया। उन्होंने कहा कि मंच 9 अगस्त को मनाए जाने वाले दिवस को नहीं मानता है और भारत की आदिवासी सभ्यता एवं संस्कृति की अपनी समृद्ध परंपरा है। उन्होंने बिरसा मुंडा, सिदो-कान्हू, चांद-भैरव और रानी दुर्गावती जैसे आदिवासी महापुरुषों के योगदान को याद किया। मौके पर कमल सोरेन, मनु हांसदा, निर्मल बास्की, राजेश हांसदा व नारायण किस्कू मौजूद थे।

धूमधाम से मना आदिवासी दिवस

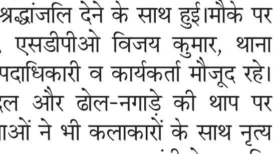

महेशपुर (पाकुड़)। प्रखंड कार्यालय में रविवार को विश्व आदिवासी दिवस धूमधाम और सांस्कृतिक उल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत संथाल हूल के महानायक सिद्धू-कान्हू मुर्मू की तस्वीर पर माल्यार्पण कर उन्हें श्रद्धांजलि देने के साथ हुई।मौके पर केंद्रीय समिति सदस्य उपासना मरांडी, एसडीपीओ विजय कुमार, थाना प्रभारी रवि शर्मा समेत झामुमो के कई पदाधिकारी व कार्यकर्ता मौजूद रहे। महिला एवं युवा कार्यकर्ताओं ने मांदल और ढोल-नगाड़े की थाप पर पारंपरिक नृत्य-संगीत प्रस्तुत किया। नेताओं ने भी कलाकारों के साथ नृत्य कर आदिवासी संस्कृति के प्रति सम्मान जताया। उपासना मरांडी ने कहा कि विश्व आदिवासी दिवस पूर्वजों के त्याग और बलिदान को याद करने का अवसर है। सिद्धू-कान्हू का जल, जंगल, जमीन और अस्मिता की रक्षा के लिए संघर्ष आज भी प्रेरणादायी है। उन्होंने आदिवासी भाषा, संस्कृति और परंपरा को संरक्षित कर आने वाली पीढ़ी तक पहुंचाने का आह्वान किया।

दुमका : विद्यार्थियों ने संताली गीत नृत्य और नाटक से बांधा समां

रानीश्वर (दुमका)। विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर रविवार को भारत सेवाश्रम संघ के स्वामी प्रणवानंद विद्या मंदिर, पाथरा में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में आदिवासी संस्कृति, परंपरा, भाषा और पहचान की झलक देखने को मिली। विद्यार्थियों ने संताली गीत, कविता, नाटक, दंसाय नृत्य और सामूहिक नृत्य की प्रस्तुति देकर लोगों का मन मोह लिया। कार्यक्रम की शुरुआत अतिथियों ने महापुरुषों के चित्र पर पुष्प अर्पित कर की। इसके बाद विद्यालय के प्रधानाचार्य अभिनन्दन मुर्मू ने विश्व आदिवासी दिवस के इतिहास और इसके महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आदिवासी समाज की भाषा, संस्कृति, परंपरा और पहचान को बचाने में नई पीढ़ी की महत्वपूर्ण भूमिका है। शिक्षा और जागरूकता के माध्यम से समाज को आगे बढ़ाया जा सकता है। कार्यक्रम में लखिश्वर बेसरा और उनके साथियों ने शिक्षा एवं जागरूकता पर आधारित लघु नाटक प्रस्तुत किया। नाटक के माध्यम से बच्चों और समाज में शिक्षा के महत्व का संदेश दिया गया। वहीं शिवा मरांडी एवं साथियों ने पारंपरिक वेशभूषा प्रस्तुत कर लोगों को आकर्षित किया। विद्यार्थियों ने आदिवासी पहचान एवं परिचय के साथ संताल समाज के विभिन्न गोत्रों के नामों की भी जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन प्रधानाचार्य अभिनन्दन मुर्मू ने किया, जबकि विकास टुडू ने सहायक कार्यक्रम संचालक की भूमिका निभायी। समापन पर विद्यार्थियों, शिक्षकों और अभिभावकों ने आदिवासी भाषा, संस्कृति, परंपरा और पहचान के संरक्षण के साथ शिक्षा एवं जागरूकता को बढ़ावा देने का संकल्प लिया।

आदिवासी बच्चों को केजी से पीजी तक की शिक्षा उनकी अपनी मातृभाषा में मिले : डॉ एनके बास्की

जरमुंडी । जरमुंडी प्रखंड कार्यालय के सभागार में रविवार को बैजुन टुडु की अध्यक्षता में विश्व आदिवासी दिवस समारोह पूरे हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर बतौर मुख्य अतिथि जरमुंडी के प्रखंड प्रमुख बसंती टुडू , विशिष्ट अतिथि सोना लाल हेम्ब्रम एवं पूर्व मंत्री बादल पत्रलेख, प्रखंड विकास पदाधिकारी कुंदन भगत भी मौजूद थे। विश्व आदिवास दिवस पर आयोजित यह समारोह , मुख्य रूप से आदिवासियों की पहचान, उनका अस्तित्व, अस्मिता, संस्कृति, विरासत, रीति रिवाज, परंपरा व अधिकारों को बचाये रखने के संकल्प के साथ प्रारंभ किया गया। समारोह में शिक्षा और नशा मुक्ति अभियान चलाने कर आदिवासियों को बचाने और उन्हें मुख्य धारा में अग्रसर करने पर जोर दिया गया। आदिवासी संस्कृति और विरासत को आगे बढ़ाने के साथ साथ जल, जंगल, जमीन की सुरक्षा करने का भी संकल्प लिया गया। ताकि बाहरी लोग आदिवासियों की जल जंगल जमीन पर कब्जा न कर सकें। समारोह को संबोधित करते हुए वक्ताओं ने शिक्षा पर जोर देते हुए कहा कि आदिवासी बच्चों को केजी से पीजी तक की शिक्षा उनकी अपनी मातृभाषा में मिले। समारोह में किशोरावस्था के बच्चों को नशामुक्त करने का भी बीड़ा उठाने का संकल्प दोहराया गया। इस अवसर पर मंच संचालन बाबू राम मुर्मू ने किया। जबकि मौके पर विश्व आदिवासी दिवस समारोह में मुखिया संघ जरमुंडी के दामोदर गृही, शिवराम मुर्मु , शिवलाल सोरेन, मुचर हेम्ब्रम, नरेश कोल, महालाल सोरेन, मीनु टुडु, अनिता बेसरा, मंजु मरांडी, बलिराम सोरेन , नन्द किशोर बास्की, मुन्ना बास्की, मताल हेम्ब्रम, छोटका मरांडी, सुलेमान मरांडी, शिवलाल सोरेन, मास्टर हेम्ब्रम, शिवलाल किस्कू, शेखर टुडू, कालेश्वर हेम्ब्रम समेत जरमुंडी प्रखंड के अनेकों बुद्धिजीवी ,विभिन्न गांवों के मांझी बाबा, परगना बाबा, गण्यमान्य लेखा होड़ शामिल हुए।

एनडीआरएफ ने डूब रहे दो शिवभक्तों को बचाया

दुमका। राजकीय श्रावणी मेला के उत्सव के बीच देवघर की पावन शिवगंगा रविवार को दो बड़ी अनहोनी घटनाओं की गवाह बनते-बनते रह गई। शिवगंगा में तैनात एनडीआरएफ की 9वीं वाहिनी के जांबाज जवानों ने अदम्य साहस और तत्परता का परिचय देते हुए गहरे पानी में डूब रहे दो श्रद्धालुओं की जान बचा ली। दोनों ही शिवभक्त पवित्र स्नान के दौरान अचानक गहरे पानी की चपेट में आ गए थे, जिन्हें वहां मुस्तैद जवानों ने पलक झपकते ही सुरक्षित बाहर निकाल लिया। पहली घटना रविवार सुबह करीब 7 बजे की है, जब एक 20 वर्षीय युवक शिवगंगा में आस्था की डुबकी लगा रहा था। इसी बीच अचानक पैर फिसलने से वह गहरे पानी में चला गया और डूबने लगा। युवक को लहरों से जूझता देख वहां तैनात एनडीआरएफ की रेस्क्यू टीम तुरंत हरकत में आई। जवानों ने बिना एक पल गंवाए पानी में छलांग लगाई और डूबते युवक को सकुशल बाहर खींच लाए।

पूजन सामग्री बेचने वाले दुकानदारों का बनेगा पास

जरमुंडी । बासुकीनाथ मंदिर परिसर के अंदर फूल, बेलपत्र, अगरबत्ती, पूजन सामग्री बेचने वाले दुकानदारों को अब तक मंदिर प्रबंधन के द्वारा निर्गत किया जाने वाला परिचय पत्र सह प्रवेश पास निर्गत नहीं किया गया था जिसके कारण दुकानदारों को काफी परेशानी हो रही थी। श्रावणी मेला के 10 दिन बीत चुके हैं। अब तक उन्हें पास नहीं मिलने से काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा था। आज सभी दुकानदारों ने पूर्व कृषि मंत्री बादल पत्रलेख से मिलकर उन्हें अपनी समस्या से अवगत कराया। पूर्व कृषि मंत्री ने तत्परता दिखाते हुए प्रशासनिक अधिकारियों से बात कर इस दिशा में आवश्यक पहल करते हुए यथाशीघ्र पास बनने का आश्वासन दुकानदारों को दिया। पूर्व मंत्री ने कहा कि श्रावणी मेला का सालोंभर सबों को इंतजार रहता है। यह बेहद दुखद है कि अबतक सभी दुकानदारों का पास नहीं बनाया गया है। उन्होंने आश्वस्त करते हुए दुकानदारों को बताया कि प्रशासन द्वारा मंगलवार तक पास बना दिया जाएगा। इस अवसर पर प्रखंड प्रमुख बसंती टुडू, जरमुंडी के बीडीओ कुंदन भगत, सीओ संजय कुमार समेत अन्य मौजूद थे।

बासुकीनाथ में रक्तदान शिविर का आयोजन

जरमुंडी । बासुकीनाथ स्थित कुशवाहा धर्मशाला में रविवार को एक स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। विश्व आदिवासी दिवस के उपलक्ष्य एवं श्रावण मास के द्वितीय सोमवारी में स्वास्थ्य विभाग के द्वारा लगाए गए स्वास्थ्य शिविर में तैयारियों के निमित्त मॉक ड्रिल के रूप में आज कुशवाहा धर्मशाला, बासुकीनाथ में एक स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। विश्व आदिवासी दिवस के उपलक्ष्य एवं श्रावण मास के द्वितीय सोमवारी में स्वास्थ्य विभाग के द्वारा लगाए गए स्वास्थ्य शिविर में तैयारियों के निमित्त मॉक ड्रिल के रूप में आयोजित रक्तदान शिविर में कुल नौ लोगों ने रक्तदान किया। सभी रक्तदाताओं को प्रशस्ति पत्र, मोमेंटो आदि देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर राज्य प्रतिरक्षण पदाधिकारी डॉ अश्विनी कुमार, सिविल सर्जन डॉ सुशांतो कुमार मांझी, प्रभारी चिकित्सा पदाधिकारी डॉ अंजू कुमारी, बासुकीनाथ नगर पंचायत की चेयरमैन वीणा देवी, सामाजिक कार्यकर्ता निरंजन मंडल, श्रीराम हिन्दू हॉस्पिटल ट्रस्ट, नई दिल्ली के प्रतिनिधि संजीत सिंह अमर साह, कुशवाहा धर्मशाला के अध्यक्ष दशरथ मांझी, सचिव विमल मंडल, कोषाध्यक्ष परमानंद सिंह, प्रखंड संजीव कुमार सदस्य डीके राणा, देवनारायण मंडल, भुवनेश्वर कापरी, ब्रजमोहन प्रसाद, मोहनाथ मंडल, सुखु कापरी एवं स्वास्थ्य कर्मी उपस्थित थे।

झारखंड क्रांति सेना ने सिदो-कान्हू को किया नमन

दुमका। विश्व आदिवासी दिवस के पावन अवसर पर झारखंड क्रांति सेना की ओर से रविवार को दुमका के प्रसिद्ध सिद्धू-कान्हू मुर्मू चौक पर एक गरिमामय कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान संगठन के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने महान आदिवासी स्वतंत्रता सेनानी वीर सिद्धू-कान्हू मुर्मू की भव्य प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की और उनके बताए मार्ग पर चलने का संकल्प लिया इस श्रद्धांजलि कार्यक्रम में झारखंड क्रांति सेना के केंद्रीय सदस्य निखिल मुर्मू, लव किशोर टुडू, रविराज मरांडी, आर्यन हांसदा, सुरेश मंडल, बहादुर मुर्मू, अम्पाय हेम्ब्रम तथा फ्रांसिस मुर्मू सहित बड़ी संख्या में स्थानीय कार्यकर्ता और गणमान्य लोग उपस्थित रहे। कार्यक्रम के समापन पर सभी सदस्यों ने एक सुर में आदिवासी समाज की अटूट एकता, अधिकारों के संरक्षण और सम्मान की रक्षा के लिए अपना शांतिपूर्ण संघर्ष निरंतर जारी रखने का सामूहिक संकल्प लिया।

देवघर में आदिवासी महोत्सव में लघु फिल्म लोकनृत्य और सम्मान समारोह ने बांधा समां

संताल एक्सप्रेस संवाददाता

देवघर। विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर रविवार को शिवलोक परिसर में जिला प्रशासन की ओर से झारखंड आदिवासी महोत्सव 2026 का भव्य आयोजन किया गया। महोत्सव में आदिवासी अस्मिता, समृद्ध लोक परंपराओं, कला-संस्कृति और जल-जंगल-जमीन की गौरवशाली विरासत की झलक देखने को मिली। कार्यक्रम का उद्घाटन प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश कौशल किशोर झा, उपायुक्त सह जिला दंडाधिकारी सौरभ कुमार भुवानिया, पुलिस अधीक्षक प्रवीण पुष्कर, उप विकास आयुक्त पीयूष सिन्हा, नगर निगम महापौर रवि कुमार राउत, नगर आयुक्त सुलोचना मीना, मधुपुर नगर परिषद की चेयरमैन दरक्शान परवीन और अनुमंडल पदाधिकारी रवि कुमार ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया।

कार्यक्रम की शुरुआत महान आदिवासी विभूतियों के चित्रों पर पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि देने के साथ हुई। उपस्थित अतिथियों और जनप्रतिनिधियों ने आदिवासी समाज के लिए किए गए योगदान और बलिदान को याद किया। इस दौरान उनके बताए मार्ग पर चलने और उनकी विरासत को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया गया।

प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश कौशल किशोर झा ने विश्व आदिवासी दिवस की शुभकामनाएं देते हुए आदिवासी समाज की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और जल-जंगल-जमीन के संरक्षण में उनके योगदान को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन लोक परंपराओं को जीवित रखने और नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

उपायुक्त सौरभ कुमार भुवानिया ने कहा कि 9 अगस्त केवल उत्सव

मधुपुर में निकली पदयात्रा जनजातीय सांस्कृतिक महोत्सव का आयोजन

मधुपुर । विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर सामाजिक संस्था संवाद समेत अन्य संस्थानों द्वारा आदिवासी संस्कृति, आदिवासियत की समृद्ध परंपराओं व जल-जंगल-जमीन के प्रति उनके अगाध प्रेम का उत्सव मनाया गया. पथरचपटी में सिदो- कान्हो की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर मांदर और नगाड़े की थाप पर पारंपरिक वेशभूषा में हाथों में तिरंगा और नारा देते पदयात्रा निकली. बाबासाहेब डॉक्टर भीमराव अंबेडकर, डॉ राम मनोहर लोहिया, शहीद निर्मल महतो, लोकनायक जयप्रकाश नारायण, नेताजी सुभाष चंद्र बोस की प्रतिमा पर माल्यार्पण के बाद पदयात्रा गांधी चौक पहुंची जहां महात्मा गांधी की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर वक्ताओं ने विश्व आदिवासी दिवस के महत्व पर प्रकाश डालने के बाद पदयात्रा का समापन किया गया. दूसरे सत्र में बावनबीघा अवस्थित मंगलम सभागार में विचार गोष्ठी और विभिन्न टोलियों द्वारा पारंपरिक लोकनृत्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया. पारंपरिक जनजातीय सांस्कृतिक टोलियों को सम्मानित किया गया मौके पर संवाद, प्रेरणा भारती, डॉक्टर भीमराव अंबेडकर झारखंड दलित समाज विकास समिति, गांव ट्रस्ट के सदस्य शामिल हुए. मौके पर वरिष्ठ समाजकर्मी घनश्याम भाई, कल्याणी मीणा, अरविंद कुमार, ऐनी टुडू , सागरी हेंब्रम, रामू आनंद, कुंदन कुमार भगत, पंकज पियूष, शमसेर, सीमोती मुर्मू, कविता सोरेन, मुखिया संतोष टुडू, अरुण निर्झर, विष्णु टुडू, सुनीता मुर्मू, शांति सोरेन, सुशीला हेम्ब्रम, रितिका मरांडी, वीणा, तुहीन , ओबेसर हांसदा,सीमांत, सैफ समेत दर्जनों लोग उपस्थित थे.

देवघर की बेटी प्रतिक्षा रानी का बास्केटबॉल अंतरराष्ट्रीय टीम में चयन

संताल एक्सप्रेस संवाददाता

देवघर। देवघर की बेटी प्रतिक्षा रानी ने बास्केटबॉल में अंतरराष्ट्रीय टीम के लिए चयनित होकर जिले के साथ पूरे झारखंड का नाम रोशन किया है। देवघर निवासी ध्रुव प्रसाद साह की पुत्री प्रतिक्षा रानी वर्तमान में आचार्यकुलम विद्यालय, हरिद्वार में कक्षा 11 की छात्रा हैं। प्रतिक्षा ने अपनी मेहनत, अनुशासन और खेल के प्रति समर्पण के दम पर यह उपलब्धि हासिल की है। विद्यालय में मिले प्रशिक्षण और मार्गदर्शन ने उसे बास्केटबॉल के क्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन करने के लिए तैयार किया। अंतरराष्ट्रीय टीम में चयन को उसकी मेहनत और प्रतिभा की बड़ी सफलता माना जा रहा है। प्रतिक्षा का पालन-पोषण पतंजलि योगपीठ के स्वामी रामदेव और आचार्य बालकृष्ण के सानिध्य एवं संस्कारों में हुआ है। परिवार का कहना है कि प्रतिक्षा की इस उपलब्धि से देवघर और झारखंड का नाम देश-दुनिया में पहचान बना है। परिवार ने उसकी सफलता के लिए विद्यालय के शिक्षकों और प्रशिक्षकों के मार्गदर्शन के प्रति आभार जताया है। प्रतिक्षा के अंतरराष्ट्रीय टीम में चयन की खबर से परिवार और शुभचिंतकों में खुशी का माहौल है। आचार्यकुलम विद्यालय के प्रशासन, कोच और स्टाफ ने भी उसकी सफलता पर बधाई देते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना की है। माना जा रहा है कि प्रतिक्षा की यह उपलब्धि झारखंड की अन्य युवा खिलाड़ियों के लिए भी प्रेरणा बनेगी।

रसोइया दीदियों ने देवघर में निकाला प्रतिरोध मार्च

संताल एक्सप्रेस संवाददाता

देवघर । क्रांति दिवस के अवसर पर राज्यव्यापी कार्यक्रम के तहत रविवार को झारखंड राज्य विद्यालय रसोइया संघ एवं ढ्ढ्ष्ट्ठ्ञ के बैनर तले देवघर में प्रतिरोध मार्च निकाला गया। मार्च की अध्यक्षता संघ की जिला अध्यक्ष देवकी देवी ने की। प्रतिरोध मार्च पुराना सदर अस्पताल परिसर से शुरू होकर वीआईपी चौक होते हुए टावर चौक पहुंचा, जहां गांधी प्रतिमा के समीप सभा कर कार्यक्रम का समापन किया गया।

इस दौरान रसोइया दीदियों को सम्मानजनक मानदेय देने की मांग को लेकर जमकर नारेबाजी की गई। संघ का मुख्य नारा था—÷विद्यालय में कार्यरत रसोइया दीदी को सम्मानजनक मानदेय, कम से कम 26 हजार रुपये प्रतिमाह लागू करो, नहीं तो हेमंत-मोदी कुर्सी छोड़ो। सभा को संबोधित करते हुए संघ की जिला सचिव सह राज्य सचिव कॉमरेड गीता मंडल ने कहा कि केंद्र और राज्य सरकार करीब 20 वर्षों से विद्यालयों में कार्यरत रसोइया दीदियों के साथ सौतेला व्यवहार कर रही है। उन्होंने कहा कि रसोइया दीदियों को न सरकारी कर्मचारी का दर्जा मिला है और न अनुबंध कर्मचारी का। उन्होंने न्यूनतम मजदूरी के अनुरूप कम से कम 26 हजार रुपये प्रतिमाह मानदेय देने, बकाया राशि का एकमुश्त भुगतान करने तथा प्रत्येक माह की पांच तारीख तक मानदेय भुगतान सुनिश्चित करने की मांग की। कार्यक्रम को देवकी देवी, मीनू देवी, सुनीता देवी और तारा देवी ने भी संबोधित किया।

अवैध पत्थर लदे हाईवा जब्त चालक-खलासी फरार

मधुपुर । थाना क्षेत्र के लालगढ़ गांव के समीप खनन विभाग की टीम ने अवैध खनिज परिवहन के खिलाफ कार्रवाई करते हुए पत्थर लदे एक हाईवा को जब्त किया है। जब्त हाईवा को विभाग की टीम ने मधुपुर थाना लाकर आगे की कानूनी प्रक्रिया शुरू कर दी है। जिला खनन निरीक्षक आकाश कुमार सिंह ने बताया कि हाईवा बिहार की ओर जा रहा था। जांच के दौरान चालक से पत्थर के परिवहन से संबंधित वैध चालान एवं अन्य आवश्यक दस्तावेज प्रस्तुत करने को कहा गया, लेकिन चालक कोई वैध कागजात नहीं दिखा सका। इसी दौरान कार्रवाई की भनक लगते ही चालक और उपचालक हाईवा को मौके पर छोड़कर फरार हो गए।

बासुकीनाथ धाम में उमड़ा आस्था का सैलाब, कतार में लगे लाखों श्रद्धालु

संताल एक्सप्रेस संवाददाता

दुमका। राजकीय श्रावणी मेला महोत्सव के 11वें दिन बाबा बासुकीनाथ धाम में शिवभक्तों की भारी भीड़ देखी गई। सुबह से ही सुल्तानगंज से उत्तरवाहिनी गंगा का पवित्र जल लेकर पहुंचे कांवरियों का मंदिर परिसर में आगमन जारी रहा। शाम 5 बजे तक कुल 1,15,276 श्रद्धालुओं ने बाबा बासुकीनाथ पर पवित्र जल अर्पित कर पूजा-अर्चना की। भक्तों की लंबी कतारों को देखते हुए मंदिर प्रशासन पूरी तरह मुस्तैद नजर आया।

श्रावणी मेले में पहली बार बासुकीनाथ धाम ड्रोन शो की रोशनी से जगमगाएगा

दुमका। राजकीय श्रावणी मेला महोत्सव को अधिक भव्य, मनोरंजक और यादगार बनाने के लिए दुमका जिला प्रशासन एक अनोखी पहल करने जा रहा है। इस वर्ष मेले में आने वाले श्रद्धालुओं और स्थानीय आम लोगों के मनोरंजन के लिए एक शानदार ड्रोन शो का आयोजन किया जा रहा है। जिला प्रशासन इस आधुनिक शो को सफल बनाने के लिए सभी जरूरी तैयारियों को अंतिम रूप देने में जुटा है। तय कार्यक्रम के मुताबिक इस अद्भुत हवाई प्रदर्शन की शुरुआत 10 अगस्त 2026 को पवित्र बासुकीनाथ धाम से होगी। इसके बाद 15 अगस्त 2026 को स्वतंत्रता दिवस के विशेष अवसर पर दुमका के ए टीम ग्राउंड से इस शो का भव्य आयोजन किया जाएगा। इस शो के दौरान अत्याधुनिक ड्रोन हवा में तैरते हुए विभिन्न प्रकार की धार्मिक, सांस्कृतिक और मनमोहक आकृतियां बनाएंगे। रात के अंधेरे में आसमान में बिखरती इन रंग-बिरंगी आकृतियों का नजारा दर्शकों और श्रद्धालुओं के लिए इस बार के श्रावणी मेले का सबसे बड़ा आकर्षण साबित होगा।

छात्रों का महाशंखनाद : परीक्षा प्रणाली में सुधार के लिए आज रांची में विधानसभा घेराव

संताल एक्सप्रेस संवाददाता

दुमका। झारखंड में प्रतियोगी परीक्षाओं की बदहाली, कथित भ्रष्टाचार और पेपर लीक के मामलों के खिलाफ राज्य के छात्र संगठन और युवा एक बार फिर बड़े आंदोलन की रणनीति तैयार कर चुके हैं। राज्य के तमाम युवाओं, परीक्षार्थियों और आम जनता से आगामी 10 अगस्त को राजधानी रांची में आयोजित विधानसभा घेराव कार्यक्रम में भारी संख्या में सम्मिलित होने की अपील की जा रही है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर इस मुहिम को लेकर व्यापक अभियान चलाया जा रहा है, जिसमें युवाओं से अपनी एकजुटता और छात्र शक्ति का परिचय देने का आह्वान किया गया है। आंदोलनकारियों का स्पष्ट संदेश है कि जेपीएससी और जेएसएससी जैसी प्रमुख राज्य स्तरीय परीक्षाओं में लगातार सामने आ रही विसंगतियों ने युवाओं के भविष्य को अधर में लटका दिया है। 10 अगस्त को होने वाले इस विरोध प्रदर्शन को लेकर छात्र नेताओं ने जय झारखंड, जय छात्र, जय आदिवासी, जय मूलवासी के नारों के साथ जनता का समर्थन मांगा है। युवाओं का मानना है कि वर्तमान परीक्षा प्रणाली में अमूल-चूल परिवर्तन की सख्त आवश्यकता है। इस बड़े घेराव कार्यक्रम को देखते हुए राजधानी रांची में प्रशासनिक सतर्कता और सुरक्षा के कड़े इंतजाम रहने की संभावना है, क्योंकि राज्य के कोने-कोने से हजारों की संख्या में छात्रों और युवाओं के रांची पहुंचने की उम्मीद जताई जा रही है।

जेपीएससी-जेएसएससी विवाद पर भाजयुमो का सरकार से सवाल, सीबीआई जांच से परहेज क्यों?

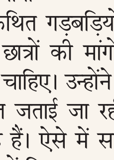

देवघर। झारखंड में जेपीएससी और जेएसएससी सीजीएल जैसी प्रतियोगी परीक्षाओं को लेकर जारी छात्र आंदोलन के बीच भारतीय जनता युवा मोर्चा ने राज्य सरकार पर सवाल उठाए हैं। भाजयुमो के देवघर जिला अध्यक्ष आशीष दुबे ने कहा कि जिन युवाओं ने वर्षों तक मेहनत कर प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी की, वे अब परीक्षा प्रक्रिया में कथित गड़बड़ियों को लेकर सड़क पर उतरने को मजबूर हैं। सरकार को छात्रों की मांगों को गंभीरता से लेते हुए पूरे मामले की निष्पक्ष जांच करानी चाहिए। उन्होंने कहा कि सरकार की ओर से ईडी जांच को लेकर सहमति जताई जा रही है, लेकिन छात्र लगातार सीबीआई जांच की मांग कर रहे हैं। ऐसे में सरकार को स्पष्ट करना चाहिए कि सीबीआई जांच से परहेज क्यों किया जा रहा है।

संप चैंबर ऑफ कॉमर्स ने की एयरपोर्ट पर 13 मिनट की पिक एंड ड्रॉप अवधि में शुल्क न लेने की मांग

देवघर संताल एक्सप्रेस । संताल परगना चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज, देवघर के अध्यक्ष गोपाल कृष्ण शर्मा एवं देवघर एयरपोर्ट एडवाइजरी कमिटी के सदस्य आलोक मल्लिक के नेतृत्व में चैंबर कार्यकारिणी के सदस्यों ने देवघर एयरपोर्ट का स्थल निरीक्षण कर पार्किंग शुल्क वसूली व्यवस्था का जायजा लिया। प्रतिनिधिमंडल ने संबंधित वेंडर एवं पार्किंग कर्मियों से शुल्क वसूली की प्रक्रिया की जानकारी ली। चैंबर ने स्पष्ट किया कि निर्धारित 13 मिनट की पिक एंड ड्रॉप अवधि के भीतर एयरपोर्ट से बाहर निकलने वाले वाहनों से कोई पार्किंग शुल्क नहीं लिया जाना चाहिए। यात्रियों की सुविधा के लिए पार्किंग शुल्क एवं निर्धारित समय-सीमा की जानकारी बड़े और स्पष्ट अक्षरों में पार्किंग बूथ पर प्रदर्शित करने की सलाह दी गई। चैंबर ने लोगों से भी अपील की कि प्रवेश के समय पार्किंग पर्ची पर अंकित 'इन टाइम' अवश्य देखें और उसी के आधार पर वापसी के समय शुल्क का भुगतान करें। इसी क्रम में चैंबर ने टावर चौक से आजाद चौक के बीच फुटकर विक्रेताओं के मामले में नगर निगम एवं प्रशासन की नीति को विरोधाभासी बताया। चैंबर के अनुसार, एक ओर निगम द्वारा फुटकर विक्रेताओं से शुल्क लिया जाता है, वहीं दूसरी ओर अतिक्रमण के नाम पर उन्हें हटाने की कार्रवाई की जाती है। चैंबर ने फुटकर विक्रेताओं को नैतिक समर्थन देते हुए मांग की कि उनके लिए स्थान का स्पष्ट निर्धारण एवं डिमार्केशन किया जाए तथा जिनसे निगम शुल्क वसूलता है, उन्हें अनावश्यक रूप से परेशान या विस्थापित न किया जाए। प्रतिनिधिमंडल में महासचिव निरंजन कुमार सिंह, संयुक्त सचिव पंकज भालोटिया, विवेक अग्रवाल, संजय मालवीय, लक्ष्मण पटेल, ऋषि राज सिंह, विभूति ठाकुर, निलेश सिंह आदि उपस्थित थे।चाहें तो इसे दो अलग-अलग हेडलाइन के साथ दो स्वतंत्र खबरों में भी विभाजित कर सकता हूँ।

एसपी ने लिया कांवड़िया रूट का जायजा

देवघर। राजकीय श्रावणी मेला 2026 की दूसरी सोमवारी से पहले पुलिस प्रशासन ने सुरक्षा व्यवस्था को और मजबूत कर दिया है। पुलिस अधीक्षक प्रवीण पुष्कर ने कांवड़िया रूट लाइन का निरीक्षण कर वहां तैनात पुलिस पदाधिकारियों और जवानों की ड्यूटी का जायजा लिया। उन्होंने श्रद्धालुओं की भीड़ को देखते हुए सुरक्षा व्यवस्था में किसी तरह की लापरवाही नहीं बरतने का निर्देश दिया। निरीक्षण के दौरान पुलिस अधीक्षक ने बाबा बैद्यनाथ मंदिर परिसर की सुरक्षा व्यवस्था भी देखी। उन्होंने श्रद्धालुओं के जलार्पण, भीड़ की स्थिति और कतार प्रबंधन का स्वयं जायजा लिया। मौके पर मौजूद पुलिस पदाधिकारियों और जवानों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। दूसरी सोमवारी पर श्रद्धालुओं की संभावित भारी भीड़ को देखते हुए पुलिस प्रशासन ने भीड़ नियंत्रण पर विशेष जोर दिया है। पुलिस बल को कतार व्यवस्था बनाए रखने, श्रद्धालुओं के सुचारु आवागमन और विधि-व्यवस्था पर लगातार नजर रखने को कहा गया है। पुलिस अधीक्षक ने जवानों को विशेष सतर्कता के साथ ड्यूटी करने और श्रद्धालुओं को सुरक्षित एवं सुगम तरीके से जलार्पण कराने में सहयोग देने का निर्देश दिया।

जमीन विवाद में खूनी झड़प, तीन घायल

देवघर। पथरौल थाना क्षेत्र के गोनैया गांव में जमीन विवाद को लेकर मारपीट का मामला सामने आया है। घटना में महिला समेत तीन लोग घायल हो गए। घायलों में मालती देवी, जितेंद्र दास और वीरेंद्र दास शामिल हैं। तीनों को इलाज के लिए देवघर सदर अस्पताल में भर्ती कराया गया है। परिजनों के अनुसार, मालती देवी खेत में धान रोप रही थीं। इसी दौरान उनके चचेरे भाई कथित रूप से लाठी, डंडा, फरसा और भुजाली लेकर खेत पहुंचे और गाली-गलौज करने लगे। मालती देवी ने इसका विरोध किया तो उनके साथ मारपीट शुरू कर दी गई। मालती देवी को बचाने के लिए जितेंद्र दास और वीरेंद्र दास मौके पर पहुंचे। आरोप है कि इस दौरान दोनों पर भी लाठी, भुजाली और फरसा से हमला कर दिया गया। मारपीट में तीनों गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना के बाद परिजनों ने इसकी सूचना पथरौल पुलिस को दी। पुलिस मामले की जांच में जुटी है। मारपीट के कारणों और घटना में शामिल लोगों की भूमिका की जांच की जा रही है।

कांवरियों की सेवा में जुटी युवाओं की टीम

देवघर संताल एक्सप्रेस । सावन के पावन अवसर पर बाबा बैद्यनाथ की नगरी देवघर पहुंच रहे कांवरियों एवं श्रद्धालुओं की सेवा के लिए युवाओं की एक टीम ने सेवा शिविर लगाकर सहायता प्रदान की। इस दौरान श्रद्धालुओं के बीच नींबू शर्बत का वितरण किया गया। साथ ही महिलाओं एवं अन्य श्रद्धालुओं को स्प्रे सहित आवश्यक सामग्री उपलब्ध कराई गई। सेवा कार्य में खुशी देव, बादल साव, रेशम, सोनू, नेहा, तनु, काव्या, प्रिया सहित कई युवाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। युवाओं ने सामूहिक रूप से श्रद्धालुओं की सेवा कर मानवता, सहयोग और सामाजिक जिम्मेदारी का संदेश दिया। खुशी देव ने कहा कि बाबा बैद्यनाथ की नगरी में आने वाले श्रद्धालुओं की सेवा करना उनके लिए सौभाग्य की बात है। उन्होंने कहा कि युवाओं में समाज के लिए कुछ बेहतर करने की भावना हमेशा बनी रहनी चाहिए। बादल साव ने कहा कि जरूरतमंद के चेहरे पर राहत और मुस्कान लाना ही सेवा की सबसे बड़ी खुशी है।

अभया दिवस पर चिकित्सकों ने जताया विरोध

देवघर संताल एक्सप्रेस । हॉल में रविवार को देवघर ऑब्स्टेट्रिशियंस एंड गायनेकोलॉजिस्ट्स सोसाइटी की ओर से अभया दिवस मनाया गया। कार्यक्रम का आयोजन 9 अगस्त 2024 को कोलकाता के आर.जी. कर मेडिकल कॉलेज एवं अस्पताल में रेजिडेंट चिकित्सक छात्रा के साथ हुई दुष्कर्म एवं हत्या की घटना के विरोध में किया गया। इस दिवस का आयोजन देशभर में ऑब्स्टेट्रिशियंस एंड गायनेकोलॉजिस्ट्स सोसाइटी से जुड़े चिकित्सकों द्वारा विरोध दिवस के रूप में किया जा रहा है। कार्यक्रम के दौरान चिकित्सकों ने घटना की निंदा करते हुए महिला चिकित्सकों एवं स्वास्थ्यकर्मियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर जोर दिया। सभा में सोसाइटी की अध्यक्ष डॉ. अर्पिता गांधी,पैट्रन डॉ. मंजु बैंकर,डॉ. रीता ठाकुर, डॉ. किरण पांडे, डॉ. सिम्मी, डॉ. अमित प्रज्ञा,डॉ. भारती, डॉ. पल्लवी, डॉ. गोपाल प्रसाद बरनवाल, डॉ. डी. तिवारी, डॉ. राजेश कुमार, डॉ. एन.सी. गांधी, डॉ. नेहा प्रिया समेत दर्जनों चिकित्सक मौजूद रहे। कार्यक्रम के माध्यम से चिकित्सकों ने महिला सम्मान, सुरक्षा और न्याय के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।

रात के अंधेरे में चोर खोलकर ले गए गाय

मधुपुर : थाना क्षेत्र के पंचमंदिर रोड निवासी जगदंबा यादव की एक गाय बीती रात चोरों ने चोरी कर ली। पीड़ित जगदंबा यादव ने थाना में लिखित आवेदन देकर बताया कि वह अपने घर के पास खटाल में गाय बांधकर सोए हुए थे। रात में तीन अज्ञात चोरों ने गाय की रस्सी खोलकर उसे चोरी कर ले गए। सुबह पांच बजे जब जगदंबा यादव उठे तो गाय को नहीं पाकर आसपास खोजबीन शुरू की। काफी देर तक गाय का पता नहीं चलने पर अपने घर के बगल में स्थित मेडिकल की दुकान में लगे सीसीटीवी कैमरे की जांच की। सीसीटीवी फुटेज में तीन लोग गाय की रस्सी खोलकर उसे ले जाते हुए स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हैं।

54 फीट का कांवर लेकर उत्तर वाहिनी गंगा से जल उठाकर रवाना हुए शिवगादी

संताल एक्सप्रेस संवाददाता राजमहल- हजारों कांवरिया एवं श्रद्धालुओं ने राजमहल उत्तर वाहिनी गंगा तट के सूर्य देव घाट पर शनिवार रात्रि को गंगा स्नान कर गंगाजल लेकर मिनी बाबा धाम के नाम से प्रसिद्ध शिवगादी धाम के लिए रवाना हुए. वही बोरियो के सैकड़ों श्रद्धालुओं की जत्था 54 फीट की शत सनातन कांवर लेकर राजमहल के गंगा से गंगा जल भरकर निकले . कांवरियों ने बताया कि बीते 4 वर्षों से लगातार राजमहल उत्तर वाहिनी गंगा से जल उठाकर तीनपहाड़, बोरियो, पंचकथिया, बरहेट होते हुए शिवगादी धाम पहुंचते है. और सोमवार को कांवरियों व श्रद्धालुओं की अधिक भीड़ होने की वजह से इतने बड़े 54 फीट का कांवर लेकर मंदिर तक नहीं पहुंच पाते हैं. जिसके लिए मंगलवार सुबह को जल अभिषेक करते हैं. मौके पर संतोष कुमार शाह, सुमित साहा, टुनटुन कुमार, सर्वजीत हरिजन, सोनू कुमार, बीरबल, भीम, अर्जुन, विश्वजीत शर्मा, मिथुन यादव, प्रवीण कुमार, राजू ,अमित सहित हजारों श्रद्धालुओं साथ में थे.

विश्व आदिवासी दिवस पर सम्मेलन का आयोजन

संताल एक्सप्रेस संवाददाता राजमहल-तालझारी प्रखंड क्षेत्र के बड़ा दुर्गापुर पंचायत अंतर्गत छोटा दुर्गापुर में रविवार को विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर सम्मेलन का आयोजन किया गया. सम्मेलन की अध्यक्षता प्रधान सरोज भूषण हेम्ब्रम ने की. कार्यक्रम में तालझारी प्रखंड के विभिन्न पंचायतों से ग्राम प्रधान एवं आदिवासी समाज के लोग शामिल हुए. इस दौरान वक्ताओं ने विश्व आदिवासी दिवस के महत्व, आदिवासी समाज की संस्कृति, परंपरा, अधिकार एवं जल-जंगल-जमीन के संरक्षण को लेकर अपने विचार व्यक्त किए. वक्ताओं ने कहा कि आदिवासी समाज की पहचान उसकी समृद्ध संस्कृति, भाषा और परंपराओं से है. इन्हें संरक्षित रखना समाज के प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है. साथ ही समाज के लोगों से एकजुट होकर अपने अधिकारों के प्रति जागरूक रहने का आह्वान किया गया. मौके पर सचिव मार्शल टुडू, कोषाध्यक्ष गोपाल हेम्ब्रम, उपाध्यक्ष चन्दरय टुडू, उप सचिव छोटू, मथियश बेसरा, उप कोषाध्यक्ष रोबिन टुडू, पोलुस टुडू, मार्शल टुडू, लखन पहाड़िया, लथुरू हेम्ब्रम सहित विभिन्न पंचायतों के ग्राम प्रधान एवं ग्रामीण उपस्थित थे. सम्मेलन के दौरान आदिवासी समाज की एकता और सामाजिक विकास को लेकर भी चर्चा की गई.

श्रावणी मेला ताक रे स्पेशल ट्रेन

श्रावणी मेला ताक रे सांगाड़ियाकोवाक् बांड़ती भीड़ दाराम लागित् ते, 03562 जसीडीह-बासुकीनाथ श्रावणी मेला स्पेशल, **03563/03564 बासुकीनाथ-पटना-बासुकीनाथ श्रावणी मेला स्पेशल, 03565/03566 बासुकीनाथ-पटना-जसीडीह श्रावणी मेला स्पेशल आर 03567/03568 मधुपुर-नरकटियागंज-मधुपुर श्रावणी मेला स्पेशल ट्रेन** लातार रे ओलाकान हुडिञ सोमोय-टेवान, तेंगोन, सांगार रेयाक् तारीकको आर गोठोन लेका रे चालावोक्आः

03562 जसीडीह-बासुकीनाथ श्रावणी मेला स्पेशल ट्रेन

स्टेशन	सेटेरोक्आ	लाड़ाक्आ	दिन
जसीडीह	-	14.55	ओतेमाहां
देवघर	15.02	15.04	
बासुकीनाथ	16.05	-	

चेतान रे ओलाकान स्पेशल ट्रेन दो डाहार रे मोहनपुर आर घोरमारा स्टेशनको रे हों तेंगोना। **सांगार रेयाक् तारीकको/दिनः जसीडीह खोन - 03562** माहित 10/08, 17/08 आर 24.08.2026 (ओतेमाहां) = 03 ट्रिप। **गोठोनः** साधारण द्वितीय श्रेणी (जीएस)शयनयान श्रेणी-20, एसएलआरडी-02 = 22 कोच (अनारक्षित)। **श्रेणीः** मेल/एक्सप्रेस।

03563/03564 बासुकीनाथ-पटना-बासुकीनाथ श्रावणी मेला स्पेशल ट्रेन

बासुकीनाथ-पटना			(03563)(03564)	पटना-बासुकीनाथ		
दिन	सेटेरोक्आ	लाड़ाक्आ	स्टेशन	सेटेरोक्आ	लाड़ाक्आ	दिन
ओतेमाहां	-	16.45	↓ बासुकीनाथ	09.00	-	बालेमाहां
	17.30	17.40	देवघर	07.18	07.23	
	20.43	20.45	किऊल	04.28	04.30	
बालेमाहां	01.00	-	पटना ↑	-	01.20	

चेतान रेयाक् स्पेशल ट्रेनको रेयाक् सांगार ओकते बानार दिग रे डाहार रे घोरमारा, मोहनपुर, जसीडीह **(एकेन 03564)**, सिमुलतला, झाझा, जमुई, लक्खीसराय, अशोकधाम, मनकठा, डुमरी हॉल्ट, बड़हिया, हाथीदा, मोकामा, बाढ़, अथमल गोला, बख्तियारपुर, खुशरूपुर, फतुहा, पटना साहिब आर राजेन्द्र नगर टर्मिन स्टेशनको रे हों तेंगोना। **सांगार रेयाक् तारीकको/दिनः बासुकीनाथ खोन - 03563** माहित 10/08, 17/08 आर 24.08.2026 (ओतेमाहां) = 03 ट्रिप आर **पटना खोन - 03564** माहित 11/08, 18/08 आर 25.08.2026 (बालेमाहां) = 03 ट्रिप। **गोठोनः** साधारण द्वितीय श्रेणी (जीएस) शयनयान श्रेणी - 20, एसएलआरडी - 02 = 22 कोच (अनारक्षित)। **श्रेणीः** मेल/एक्सप्रेस।

03565/03566 बासुकीनाथ-पटना-जसीडीह श्रावणी मेला स्पेशल ट्रेन

बासुकीनाथ-पटना			(03565)(03566)	पटना-जसीडीह		
दिन	सेटेरोक्आ	लाड़ाक्आ	स्टेशन	सेटेरोक्आ	लाड़ाक्आ	दिन
बालेमाहां	-	10.30	↓ बासुकीनाथ	-	-	सागुनमाहां
	11.20	11.30	देवघर	-	-	
	-	-	जसीडीह	02.50	-	
	14.43	14.45	किऊल	23.28	23.30	बालेमाहां
	20.00	-	पटना ↑	-	20.25	

चेतान रेयाक् स्पेशल ट्रेन दो सांगार ओकते बानार दिग रे डाहार रे घोरमारा, मोहनपुर, सिमुलतला, झाझा, जमुई, लक्खीसराय, अशोकधाम, मनकठा, डुमरी हॉल्ट, बड़हिया, हाथीदा, मोकामा, बाढ़, अथमल गोला, बख्तियारपुर, खुशरूपुर, फतुहा, पटना साहिबगंज आर राजेंद्र नगर टर्मिनल स्टेशनको रे हों तेंगोना। **सांगार रेयाक् तारीकको/दिनः बासुकीनाथ खोन - 03565 आर पटना खोन 03566 -** माहित 11/08, 18/08 आर 25.08.2026 (बालेमाहां) = बानार 03 ट्रिप। **गोठोनः** साधारण द्वितीय श्रेणी (जीएस)/शयनयान श्रेणी - 20, एसएलआरडी- 02 = 22 कोच (अनारक्षि)। **श्रेणीः** मेल/एक्सप्रेस।

03567/03568 मधुपुर-नरकटियागंज-मधुपुर श्रावणी मेला स्पेशल ट्रेन

मधुपुर-नरकटियागंज			(03567)(03568)	नरकटियागंज-मधुपुर		
दिन	सेटेरोक्आ	लाड़ाक्आ	स्टेशन	सेटेरोक्आ	लाड़ाक्आ	दिन
बालेमाहां	-	01.00	↓ मधुपुर	02.15	-	सारदीमाहां
	01.25	01.35	जसीडीह	00.40	00.50	
	03.40	03.42	किऊल	21.30	21.35	बालेमाहां
	08.30	08.35	मुजफ्फरपुर	16.55	17.00	
	12.25	-	नरकटियागंज ↑	-	13.25	

चेतान रेयाक् स्पेशल ट्रेन दो सांगार ओकते बानार दिग रे डाहार रे सिमुलतला, झाझा, जमुई, लक्खीसराय, अशोकधाम, मनकठा, डुमरी हॉल्ट, बड़हिया, बरौनी, समस्तीपुर, मोतीपुर, मेहसी, चकिया, बापूधाम मोतिहारी, सगौली, बेतिया आर चनपटिया स्टेशनको रे हों तेंगोना। **सांगार रेयाक् तारीकको/दिनः मधुपुर खोन - 03567 आर नरकटियागंज खोन 03568** - माहित 11/08, 18/08 आर 25.08.2026 (बालेमाहां) = बानार 03 ट्रिप। **गोठोनः** साधारण द्वितीय श्रेणी (जीएस)/शयनयान श्रेणी - 20, एसएलआरडी - 02 = 22 कोच (अनारक्षित)। **श्रेणीः** मेल/एक्सप्रेस।

मुख्य यात्री परिवहन प्रबंधक

पूर्व रेलवे

नोंड़े पांजालेपेः @EasternRailway @easternrailwayheadquarter

पेड़ से पतंग उतारने के दौरान 11 हजार विधुत तार की चपेट में आने से किशोर की मौत

संवाददाता

राजमहल- राजमहल थाना क्षेत्र के वार्ड नंबर 12 अंतर्गत मटियाल के चहरबन्ना में रविवार को दर्दनाक हादसे में 15 वर्षीय किशोर की मौत हो गयी. पेड़ पर चढ़कर पतंग निकालने के दौरान समीउल शेख 11 हजार वोल्ट के बिजली तार की चपेट में आ गया. करंट लगने से वह बुरी तरह झुलस गया और पेड़ से नीचे गिर पड़ा.मिली जानकारी के अनुसार समीउल शेख घर के आसपास खेल रहा था. इसी दौरान उसकी पतंग पेड़ में फंस गयी. पतंग निकालने के लिए वह पेड़ पर चढ़ गया. पेड़ के समीप से ही 11 हजार वोल्ट का बिजली तार गुजर रहा था. पतंग निकालने के दौरान उसका शरीर बिजली तार के संपर्क में आ गया. तेज करंट लगने से वह गंभीर रूप से झुलस गया.हादसे के बाद परिजन और स्थानीय लोग उसे आनन-फानन में राजमहल अनुमंडल अस्पताल लेकर पहुंचे. जहां डॉ उदय टुडू ने जांच के बाद उसे मृत घोषित कर दिया. मृतक मटियाल निवासी मुख्तार शेख का 11 वर्षीय पुत्र समीउल शेख था.घटना की सूचना मिलते ही राजमहल थाना के एसआई एसके तिर्की पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे. पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया. नगर पंचायत अध्यक्ष मो. केताबुद्दीन शेख और वार्ड पार्षद राजू सरकार ने भी घटनास्थल पर पहुंचकर परिजनों से मुलाकात की और ढांढस बंधाया.स्थानीय लोगों ने बताया कि पेड़ के काफी समीप से 11 हजार वोल्ट का तार गुजर रहा है. लोगों ने बिजली विभाग से तारों की जांच और सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करने की मांग की है.

झारखण्ड आदिवासी दिवस पर सिदो-कान्हू सभागार में सांस्कृतिक कार्यक्रम

संताल एक्सप्रेस संवाददाता

साहिबगंज - विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर झारखण्ड आदिवासी महोत्सव-2026 का आयोजन साहिबगंज स्थित सिदो-कान्हू सभागार में आदिवासी संस्कृति, परंपरा, प्रकृति एवं जीवन-दर्शन की समृद्ध विरासत को प्रदर्शित करने के उद्देश्य से विशेष एवं भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया. कार्यक्रम का शुभारंभ डीसी दीपक कुमार दुबे, वन प्रमंडल पदाधिकारी प्रबल गर्ग एवं नगर परिषद अध्यक्ष रामनाथ पासवान ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया.

जनजातीय संस्कृति, अधिकार एवं प्रकृति संरक्षण के प्रति संकल्प आवश्यक- डीसी

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डीसी दीपक कुमार दुबे ने विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर सभी को हार्दिक शुभकामनाएं दीं. उन्होंने कहा कि प्रत्येक वर्ष 9 अगस्त को हम अंतरराष्ट्रीय विश्व आदिवासी दिवस मनाते हैं. यह दिवस विश्वभर के आदिवासी समुदायों की विशिष्ट पहचान, संस्कृति, परंपराओं एवं अधिकारों को स्मरण करने तथा उनके संरक्षण एवं संवर्धन के लिए संकल्प लेने का अवसर प्रदान करता है.उन्होंने कहा कि हम सभी इस तथ्य से भली-भांति अवगत हैं कि जनजातीय समाज का प्रकृति के साथ सदियों से गहरा और आत्मीय संबंध रहा है. जल, जंगल और जमीन जनजातीय जीवन एवं संस्कृति के अभिन्न अंग हैं. प्रकृति के संरक्षण के प्रति जनजातीय समाज की प्रतिबद्धता सदैव अनुकरणीय रही है. सरहुल जैसे प्रकृति पर्व इसके जीवंत उदाहरण हैं. आज के इस अवसर पर हम सभी यह संकल्प लें कि जल, जंगल और जमीन के संरक्षण के लिए जनजातीय समाज के साथ कंधे से कंधा मिलाकर सदैव तत्पर रहेंगे तथा पर्यावरण एवं प्रकृति के संरक्षण के लिए अपने प्रयासों को और अधिक सशक्त करेंगे.आदिवासी दिवस हमें झारखंड की समृद्ध जनजातीय सांस्कृतिक विरासत को समझने, सम्मान देने तथा उसके संरक्षण एवं संवर्धन का भी अवसर प्रदान करता है. सोहराय चित्रकला, डोकरा कला, बाँस एवं अन्य पारंपरिक शिल्प, लोकचित्रकला तथा जनजातीय नृत्य-संगीत हमारी विविध एवं समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक हैं. ये कलाएँ केवल जनजातीय समाज की सांस्कृतिक विविधता को प्रदर्शित नहीं करतीं, बल्कि हमारे अतीत और वर्तमान के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी का कार्य भी करती हैं. जिला प्रशासन यह सुनिश्चित करने के लिए प्रतिबद्ध है कि जनजातीय समाज के अधिकारों का किसी भी प्रकार से उल्लंघन न हो.उन्होंने कहा कि जनजातीय समाज के सामाजिक, शैक्षणिक एवं आर्थिक विकास के लिए सरकार द्वारा अनेक योजनाएँ संचालित की जा रही हैं. डाकिया योजना, प्रधानमंत्री जनजातीय आदिवासी न्याय महाअभियान (पीएम-जनमन), जाहेरथान के उन्नयन, धुमकुड़िया भवन निर्माण, मेधावी छात्र-छात्राओं के लिए

पत्रकार व नगर परिषद के बीच क्रिकेट मैच में नगर परिषद क्रिकेट टीम ने की जीत दर्ज

संताल एक्सप्रेस संवाददाता

साहिबगंज-साहिबगंज नगर परिषद की ओर से रविवार को स्वच्छता अपनाओ बीमारी भगाओ अभियान के तहत् सिदो कान्हु स्टेडियम में नगर परिषद एकादश बनाम मीडिया एकादश के बीच फ्रेंडली क्रिकेट मैच का आयोजन किया गया. क्रिकेट मैच का उद्घाटन नगर परिषद अध्यक्ष रामनाथ पासवान व कार्यपालक पदाधिकारी अभिषेक कुमार सिंह ने दोनों टीमों से परिचय प्राप्त करके ओर बैट से बोल मारकर किया.टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करते हुए मीडिया एकादश की टीम ने 12 ओवर में 67 रन बनाया. जवाब में अंतिम बॉल तक चले रोमांचक मुकाबले में नगर परिषद की टीम 68 रन बनाकर विजय हुई. वही विजेता नगर परिषद एकादश ओर उपविजेता मीडिया एकादश को अध्यक्ष व कार्यपालक पदाधिकारी ने ट्रॉफी देकर सम्मानित किया.वही स्टेडियम में उपस्थित क्रिकेट प्रेमियों ने मैच देखकर कहा कि अंतिम बॉल तक काफी रोमांचक मैच हुआ.वही नप अध्यक्ष रामनाथ पासवान ने शहरवासियों से अपील किया कि शहरवासी कूड़ा कचरा घर घर उठाव करने वाले वाहन में दे, इधर उधर कूड़ा कचड़ा न फेंके, सफाई अपनाए ओर बीमारी को साहिबगंज से दूर भगाए. मौके पर सिटी मैनेजर रवि कुमार, वार्ड पार्षद चमरू उरांव,शेखर पासवान ,पार्वती उरांव, दीपा देवी, हिमांशु कुमार, निशु कुमार,अकबर, मनी प्रकाश, सोनू हरि, सोनू मंडल सहित नगर परिषद कर्मी व मीडिया साथी उपस्थित थे.

फुटबॉल टूर्नामेंट का आयोजन

मंडरो-मंडरो प्रखंड के धनवासा फुटबॉल मैदान में विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर रविवार को मैत्रीपूर्ण फुटबॉल मैच का आयोजन किया गया. मैच का शुभारंभ बीडीओ मेघनाथ उरांव, झामुमो के जिला अध्यक्ष अरुण सिंह, प्रधान के जिला अध्यक्ष लच्छू मुर्मू, जिला परियोजना पदाधिकारी, नमामि गंगे साहिबगंज एवं क्षेत्र के चर्चित फुटबॉलर अशोक साहनी के द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया. वहीं अतिथियों ने खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर फुटबॉल में किक मारकर फुटबॉल मैच का शुभारंभ किया. वहीं कई आंगनबाड़ी सेविका सेलिन किस्कू, मोनी मुर्मू एवं कई आदिवासी महिलाएं अपने पारंपरिक वस्त्र पहनकर स्वागत गान गाकर अतिथियों का स्वागत की. बीडीओ ने कहा कि युवाओं में खेल की भावना, सामुदायिक सहभागिता एवं सकारात्मक सामाजिक जुड़ाव को बढ़ावा देने के उद्देश्य से नमामि गंगे की ओर से प्रखंड अंतर्गत धनबासा फुटबॉल मैदान में एक मैत्रीपूर्ण फुटबॉल मैच का आयोजन किया है. वहीं नमामि गंगे के द्वारा जनभागीदारी आधारित गतिविधियों के माध्यम से पर्यावरण एवं नदी संरक्षण के संदेश को समुदाय,विशेष कर युवाओं तक पहुंचाने के साथ-साथ स्थानीय स्तर पर सामाजिक सहभागिता को बढ़ावा देने के प्रयासों के क्रम में इस मैत्रीपूर्ण फुटबॉल मैच का आयोजन किया गया.

बरहेट में आदिवासी दिवस पर दिखी सामाजिक एकजुटता,लोगों ने लिया नशामुक्ति का संकल्प

संताल एक्सप्रेस संवाददाता बरहेट- विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर रविवार को संपोषित दामिन हाई स्कूल बरहेट के ऑडिटोरियम भवन में भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया. विश्व आदिवासी दिवस आयोजन समिति बरहेट के तत्वावधान में आयोजित कार्यक्रम में प्रखंड क्षेत्र के विभिन्न पंचायतों और गांवों से हजारों की संख्या में आदिवासी समाज के लोग पहुंचे.कार्यक्रम की शुरुआत पौधे में पानी डालकर की गई.मुख्य अतिथि पूर्व विधायक थॉमस सोरेन, सांसद प्रतिनिधि संजीव सामू हेंब्रम, झामुमो प्रखंड अध्यक्ष सह प्रमुख बर्नार्ड मरांडी, प्रखंड विकास पदाधिकारी, थाना प्रभारी तथा सिदो-कान्हू के वंशज रूपचंद मुर्मू सहित कई ग्राम प्रधान उपस्थित थे.अपने संबोधन में प्रमुख बर्नार्ड मरांडी ने कहा कि समाज के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा को प्राथमिकता देना जरूरी है. उन्होंने युवाओं को नशे से दूर रखने, बच्चों को उच्च शिक्षा से जोड़ने और अंधविश्वास के खिलाफ जागरूकता फैलाने का आह्वान किया. उन्होंने कहा कि नशे की लत युवा पीढ़ी के भविष्य को प्रभावित कर रही है. इसलिए समाज को मिलकर नशामुक्त वातावरण तैयार करना होगा.कार्यक्रम में आदिवासी संस्कृति की आकर्षक झलक भी देखने को मिली. कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, गर्ल्स हाई स्कूल बरहेट सहित विभिन्न विद्यालयों की छात्राओं ने आदिवासी गीतों पर नृत्य एवं रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं. कार्यक्रम के माध्यम से आदिवासी संस्कृति, परंपरा और सामाजिक एकता को मजबूत करने का संदेश दिया गया.

राजमहल-तीनपहाड़ के बीच अंडरपास सब-वे का हुआ उद्घाटन

संताल एक्सप्रेस संवाददाता साहिबगंज- पूर्व रेलवे की महाप्रबंधक गीतिका पांडेय के नेतृत्व में मालदा मंडल ने तीनपहाड़ और राजमहल के बीच समपार फाटक संख्या 49 को स्थायी रूप से बंद कर एक नए सीमित ऊँचाई वाले सबवे का सफलतापूर्वक उद्घाटन किया है.नए अंडरपास के निर्माण और कमीशनिंग का कार्य पूरा होने के बाद 5 अगस्त को समपार फाटक को आधिकारिक रूप से बंद कर दिया गया. यह कार्य मालदा मंडल के मंडल रेल प्रबंधक मनीष कुमार गुप्ता के नेतृत्व में पूरा किया गया. यह वैकल्पिक सुविधा स्थानीय सड़क उपयोगकर्ताओं को रेलवे ट्रैक पार करने के लिए बिना गेट पर प्रतीक्षा किए अधिक सुरक्षित, मौसमरोधी और विश्वसनीय मार्ग उपलब्ध कराती है.समपार फाटक 49 को स्थायी रूप से हटाए जाने से रेलवे सुरक्षा और परिचालन दक्षता में महत्वपूर्ण सुधार होगा. सतह पर रेलवे ट्रैक और सड़क के प्रत्यक्ष संपर्क को समाप्त करने से ट्रेनों के परिचालन में कम व्यवधान आएगा. वहीं पैदल यात्रियों और वाहनों को सुगम एवं सुरक्षित आवागमन की सुविधा मिलेगी.इस परियोजना के महत्व पर प्रकाश डालते हुए पूर्व रेलवे के मुख्य जनसंपर्क अधिकारी शिव राम मांझी ने कहा कि इस अंडरपास का सफल उद्घाटन और समपार फाटक को बंद किया जाना हमारी निरंतर सुरक्षा मुहिम में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है. हम स्थानीय समुदाय के सहयोग के लिए उनका आभार व्यक्त करते हैं. जिसने हमें अधिक सुरक्षित और कुशल परिवहन नेटवर्क के निर्माण में सहायता की.

सोमवार को डेढ़ लाख कांवरिया के जलार्पण की संभावना

बरहेट- श्रावणी मेला के दौरान रविवार को शिवगादी धाम में आस्था और भक्ति का अद्भुत नजारा देखने को मिला. सुबह से ही बाबा गजेश्वर नाथ महादेव के दर्शन एवं जलाभिषेक के लिए शिवभक्तों का पहुंचना शुरू हो गया. दिन चढ़ने के साथ धाम परिसर में श्रद्धालुओं की भीड़ बढ़ती गई.सोमवार को भी बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के पहुंचने की संभावना को देखते हुए शिवगादी प्रबंधन समिति ने तैयारियां तेज कर दी हैं. अनुमान है कि सोमवार को करीब डेढ़ लाख श्रद्धालु बाबा गजेश्वर नाथ महादेव का जलाभिषेक करेंगे.डाक बम कांवरियों की भी बड़ी संख्या में आने की संभावना है.

डूरंड कप फुटबॉल मैच देखने के लिए जिले से 50 खिलाड़ी रांची रवाना

साहिबगंज -खेल कूद एवं युवा कार्य निदेशालय झारखंड रांची के निदेश के आलोक में जिला प्रशासन साहिबगंज एवं जिला खेल कार्यालय द्वारा जिले के सिदो कान्हु स्टेडियम में संचालित आवासीय बालक एथलेटिक्स एवं नवसृजित बालक फुटबॉल क्रीड़ा प्रशिक्षण केंद्र के कुल 50 खिलाड़ी खेल प्रशिक्षक योगेश यादव के साथ रांची के लिए रवाना हुए. 10 अगस्त को संध्या 7 बजे से बिरसा मुंडा फुटबॉल स्टेडियम में आयोजित होने वाले एस सी दिल्ली बनाम इंडियन एयर फॉर्स के बीच मैच देखेंगे. इसको लेकर जिले के खिलाड़ियों में खासा उत्साह देखा जा रहा है. खिलाड़ियों ने खेल विभाग एवं झारखंड सरकार का आभार जताया.

बिंदुधाम मंदिर परिसर में लगा रक्तदान शिविर

संताल एक्सप्रेस संवाददाता बरहरवा-बिंदुधाम मंदिर परिसर में जनकल्याण एवं मानव सेवा की भावना से रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया.शिविर का उद्घाटन झामुमो केंद्रीय समिति सदस्य सह झामुमो युवा मोर्चा जिला अध्यक्ष संजय गोस्वामी एवं बरहरवा अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी ने संयुक्त रूप से किया. कार्यक्रम में बरहरवा सीडीपीओ नितिन खंडेलवाल सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे.उद्घाटन के पश्चात संजय गोस्वामी ने अपने ओजस्वी संबोधन के माध्यम से युवाओं एवं उपस्थित लोगों को रक्तदान के महत्व के प्रति जागरूक किया. उन्होंने कहा कि रक्तदान केवल एक सामाजिक जिम्मेदारी नहीं बल्कि किसी जरूरतमंद व्यक्ति के जीवन को बचाने का महान कार्य है. उन्होंने युवाओं से आगे बढ़कर रक्तदान करने और समाज में दूसरों को भी इसके लिए प्रेरित करने की अपील की.कार्यक्रम में उपस्थित अतिथियों ने भी बारी-बारी से अपने विचार रखते हुए रक्तदान को मानव सेवा का सर्वोत्तम माध्यम बताया. .इस अवसर पर रांगा थाना प्रभारी अखिलेश यादव ने स्वयं रक्तदान कर समाज के सामने मानव सेवा की प्रेरणादायक मिसाल पेश की.

खुला नि:शुल्क सेवा शिविर

बरहेट- बरहेट बाजार के शिवगादी चौक स्थित झामुमो कार्यकर्ता पप्पू कुमार भगत के आवास पर रविवार को निःशुल्क कांवरिया सेवा शिविर शुरू किया गया. शिविर का उद्घाटन सांसद प्रतिनिधि संजीव सामू हेंब्रम, झामुमो प्रखंड अध्यक्ष सह प्रमुख बर्नार्ड मरांडी, जिला संगठन सचिव छवि हेंब्रम एवं प्रखंड उपप्रमुख रुपक कुमार साह समेत अन्य लोगों ने फीता काटकर किया.शिविर में शिवगादी धाम जाने वाले कांवरिया श्रद्धालुओं के लिए निःशुल्क भोजन, पेयजल और उपचार की व्यवस्था की गई है.आयोजकों के अनुसार श्रावणी मेले के दौरान कांवरियों को सुविधा उपलब्ध कराने और उनकी यात्रा को सुगम बनाने के उद्देश्य से यह सेवा शिविर लगाया गया है. यहां आने वाले श्रद्धालुओं को आवश्यकतानुसार भोजन-पानी उपलब्ध कराने के साथ स्वास्थ्य संबंधी प्राथमिक उपचार भी किया जाएगा. उद्घाटन कार्यक्रम में झामुमो कार्यकर्ताओं के अलावा स्थानीय लोग भी उपस्थित थे.

लूटकांड का खुलासा, आरोपी गिरफ्तार,देसी कट्टा व जिंदा कारतूस बरामद

संताल एक्सप्रेस संवाददाता साहिबगंज- राजमहल थाना कांड संख्या 174/25 में पुलिस ने बड़ी कार्रवाई करते हुए कल्याणचक ज्वेलरी लूटकांड में प्रयुक्त देसी कट्टा और जिंदा कारतूस के साथ एक आरोपी को गिरफ्तार किया है. इस संबंध में एसडीपीओ सुशील कुमार ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर पत्रकारों को बताया कि राजमहल थाना क्षेत्र में हुई कल्याणकारी ज्वेलरी लूटकांड के मामले में गिरफ्तार आरोपी विष्णु मंडल से पूछताछ के दौरान पूर्व में लूटकांड में प्रयुक्त देसी कट्टा एवं कुछ गोलियां सुबोध मंडल के पास होने की जानकारी मिली. सूचना के आधार पर अनुमंडल पुलिस पदाधिकारी के नेतृत्व में छापेमारी दल का गठन किया गया.08 अगस्त को जिरवाबाड़ी थाना प्रभारी शशि सिंह एवं राजमहल थाना प्रभारी हसनैन अंसारी के नेतृत्व में संयुक्त टीम ने त्वरित कार्रवाई करते हुए शांतिनगर लोहंडा निवासी 23 वर्षीय सुबोध मंडल पिता सीताराम मंडल को गिरफ्तार किया है. उसकी निशानदेही पर पुलिस ने दो अवैध देसी कट्टा एवं दो जिंदा कारतूस बरामद की गई है.उन्होने बताया कि बरामद हथियारों को जब्त कर लिया गया है.

स्वतंत्रता दिवस से पूर्व परेड पूर्वाभ्यास सिदो कान्हु स्टेडियम में शुरू

संताल एक्सप्रेस संवाददाता साहिबगंज- स्वतंत्रता दिवस से पूर्व मुख्य समारोह स्थल सिदो कान्हु स्टेडियम में परेड का पूर्वाभ्यास रविवार से शुरू हुआ. सार्जेंट मेजर के नेतृत्व में जिला सशस्त्र बल एक प्लाटून, जैप09 एक प्लाटून, गृह रक्षा वाहिनी एक प्लाटून, एनसीसी एक प्लाटून, गर्ल्स गाइड की छात्राएं सीनियर एक प्लाटून,गर्ल्स गाइड की छात्राएं जूनियर एक प्लाटून, चौकीदार पुरुष व महिला एक एक बटालियन, साहिबगंज कॉलेज, राजस्थान इंटर विद्यालय, जवाहर नवोदय विद्यालय, कस्तूरबा विद्यालय, सेंट्रल स्कूल, संत जेवियर्स स्कूल के 25-25 की टुकड़ी एक एक बटालियन ने परेड का पूर्वाभ्यास किया. 13 अगस्त को परेड का फाइनल रिहर्सल होगा. जिसमे डीसी एसपी सहित जिला के आला अधिकारी शामिल होंगे.

विश्व आदिवासी दिवस पर नगर परिषद अध्यक्ष ने महापुरुषों की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया

साहिबगंज- विश्व आदिवासी दिवस के पावन अवसर पर नगर परिषद अध्यक्ष रामनाथ पासवान व कार्यपालक पदाधिकारी अभिषेक कुमार सिंह सहित वार्ड पार्षदों ने दिशोम गुरु शिबू सोरेन व महापुरुषों की प्रतिमा पर माल्यार्पण किया. वही सिदो कान्हु स्टेडियम में हूल के महानायक वीर शहीद सिदो कान्हु के प्रतिमा पर माल्यार्पण करके नमन किया. मौके पर सिटी मैनेजर रवि कुमार, मणि प्रकाश सिन्हा, सोनू हरि, अतीउर रहमान सहित कार्यालय कर्मी व वार्ड पार्षद उपस्थित थे.

झारखंड आदिवासी महोत्सव पर महापुरुषों एवं स्वतंत्रता सेनानियों को श्रद्धांजलि

साहिबगंज -झारखंड आदिवासी महोत्सव -2026 के अवसर पर जिले में गौरव, सम्मान और श्रद्धा का वातावरण देखने को मिला.इस अवसर पर जिला एवं प्रखंड स्तर के पदाधिकारियों द्वारा जिले के विभिन्न स्थानों पर स्थापित महापुरुषों एवं स्वतंत्रता सेनानियों की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण कर श्रद्धापूर्वक नमन किया गया.कार्यक्रम के माध्यम से राष्ट्र एवं समाज के लिए अपना सर्वस्व समर्पित करने वाले महान विभूतियों के त्याग, संघर्ष, साहस एवं योगदान का स्मरण किया गया.झारखंड आदिवासी महोत्सव केवल संस्कृति और परंपराओं का उत्सव नहीं बल्कि यह अपनी गौरवशाली विरासत, वीर नायकों और महापुरुषों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का भी अवसर है.जिले में आयोजित यह श्रद्धांजलि कार्यक्रम इसी गौरवशाली परंपरा को सम्मानपूर्वक आगे बढ़ाने की एक सार्थक पहल है.

विश्व आदिबासी माहां

– चुण्डा सोरेन 'सिपाही'

नागामिया माहां दो आसीम गेया। आर, ओना रे नोआ 'विश्व आदिवासी दिवस' हों मित् नागामिया माहांकान गेया। नोआ रेयाक् एतोहोप् दो पारोमेन 1982 साल रेयाक् 9 अगस्त गे काना। एनते, ओना माहां हिलोक् गे स्वीटजरलैंड रे मेनाक् संयुक्त राष्ट्र संघ दो ि श्व रे आर-आर जात गातांक रेन होड़को लेका गे विश्व रे मेनाक्को आदिवासीको हों विश्व रे लेखा आर से मान-सोनमान ञाम लागित् ते आकोवाक् कामीको एहोप् लेदा। आर, ओनका लेका ते नोको दो ओना काथा आंगोच ओचोय रे 12 बोछोर हाबिच् रिकिड़ कामी होयलेनताकोआ। आर, ओनका लेका ते संयुक्त राष्ट्र संघ दो 1994 साल रेयाक् 9 अगस्त हिलोक् गे बिश्व रेन मित् टेन आदिवासी कानाको मेनते रेयाक् काथा दो आंगोच से मित् टेन आदिवासी लेका तेय लेखा सेलेत्लेत्कोआ। आदो, उन खोन गे नोआ माहां दो जाव सेरमा गे मित् टेन विश्व आदिवासी दिवस लेका ते मानाव हिजुक् काना। तोबे, तेहेञाक् नोआ माहां दो आदिवासीकोवाक् जियोन रेयाक्आसीमाक् सोमोल सापड़ाव काते सोहोर सेटेर आकाना। आर, ओना दो चाहे समाज तेयाक् गे होयोक्, चाहे धोरोम तेयाक् गे होयोक्आर से मेन केयाम राज आरी तेयाक् गे होयोक्, आर से बिर-बुरू, जागा-हासा, ओलोक्-पाड़हावक्, नुकरी-चाकरी, निफुट होड़मो दोहोय, बानिज-बेपार एमानाक्को बाबोत रे आय-उमान, आरी-बांधिय आर से सोक्-सेटेच् आर लापाई-चापाल बाबोततेयाक् गे माहां काना। मेताक्मे, पारोमेन तेहेञाक् दिन खोन नेसाक् तेहेञाक् दिन हाबिच् ते नोको विश्व रेन गातांक नापित आदिवासीको दो सोसनोक् रेयाक् ञिर-हापाराव होर रे तिनाक् हाबिच्को लाहायेना। चेत्को दोको ञाम केदा। आर, चेत्को दो बाको ञाम दाड़ेयादाक्आ। ओनाको बाबोत रे गे ओनमानोक् तेकोचेपेच् हापाटिञा। मेनेक, दुनिया रे आदिवासीको दोको आसीम गेया। आसीम ठेच्हाटिञ आकान मेनाक्कोआ। आर, ओनका लेका ते जुदी दुनियारेयाक् दिसवातिया हिसाब ते ञेलेत्को खान दो मित्-बारको दो नोडका लेकाको बाडायोक् काना। जे लेका- एस्कीमो- नोको दोग्रीनलैंड आर कानाडा दिसाम रे, खिरगीज- नोको दो मध्य एशिया महादेश रे आर माओरी- नोको दो न्युजीलैंड दिसाम रे मित् सांगेलेखा रे मेनाक् आकात्कोआ। आर, से ओनका लेका गे- मसाईको दो पूर्वी अफ्रीका, वेद्दास- नोको दो श्रीलंका, नीग्रोको दो मध्य अफ्रीका,सेमांगको दो मलेशिया, आइनूको दो जापान, कुशमैनको दो कोलाहारीमरूस्थल, रेड इंडियनको दो उत्तर अमेरिका, पि मीजको दो कांगोबेसिन, बोरोको दो ब्राजील, इकायाको दो द. अफ्रीका आर से ओनका गेहैदा, तातांर, बइदू, पपुआना, याकू, आर से जुलु एमान आडीगान गातांक रेनको दो एमान-एमान आदिवासीको एमान-एमान दिसामको रे ञुमञामोक् लेका ते मेनाक् आकात्कोआ।तोबे, नोआ भारोत दिसाम रे दो दिसाम सोरकाराक् जन जातीयबिकास बिभाग रेयाक् लेका ते दो नोआ दिसाम रे दो 550 गातांकगान रे हाटिञ आकान आदिवासीको मेनाक् आकात्कोआ। नोको दो भारोत रेयाक् संबिधान रे मेनाक् अनुच्छेद 366 (25) लेका ते दो नोको दोको ओनको काना, ओकोय दो नोआ संबिधान रेयाक् गे अनुच्छेद 342 लेका तेको मानाव आकान। पोनोत हिसाब ते नोको दो जोतो खोन सांगे दो मध्यप्रदेश रे मेनाक् आकात्कोआ। आर, जोतो खोन कोम दो मिजोरम रे। नोको आदिवासीको दो नोआ भारोत दिसाम रेयाक् 89'आक् संशोधन (2003) लेका ते, मेन दो राष्ट्रीय अनुसूचितजन जाति आयोग दाराय ते संबिधाान रेयाक् अनुच्छेद 338 रेयाक् उपखंड (क) लेका तेको चालाव-बानावक्आ। निया हाली ओना 'राष्ट्रीय अनुसूचितजन जाति आयोग' रेन चेयरमेन दो मान किशोर मकवाना मेनाय आकादेया।मेनेक, नोआ आयोग रेन पोरथोमिच् चेयरमेन दो मान यू0 एस0 ढेबर'एताहेंकाना। तोबे, संसदको होतेते बेनाव आकान ओना आयोग रेनसभापति, उपसभापति आर से ओना रेन रासियाकोवाक् कामी-कराड (शर्त) आर सोमोय दो राष्ट्रपति गेय निट गोटाया। आर, ओना आयोगरेन रासियाको दो आको ते गे नोको आदिवासीकोवाक् लाहान्तीको बाबोत रे दोको निट गोटाया। नोआ दिसाम रेन आदिवासीकोवाक्लाहान्ती दो ओनको जिमा रे गे ताहेंना। आर, ओना आयोग रेयाक् कामी-कासनी आर से एकतियारीको दो नोडका लेका काना। जे लेका-

अनुसूचित जन जातिको लाहान्तीको बाबोत ते संबिधान रे ओल आकान नियोम लेका ते गे ओना आयोग रेन रासियाको दो ओनको लाहान्तीको बाबोत रेको आरीबाधिया, कामी होराको बेनावा आर ओना लेका तेको कामीय ते ओनाको ओनमाना। अनुसूचित जन जातिको दो संबिधान रे ओल आकान नियोम लेका तेलाहान्तोक् रे से आकोवाक् अधिकार आर रूखियाक् रे नाड़ाक्लेकाको आइकाउ रे जाहांयको सिकात एमान लेखान दो ओना बाबोत रेको जांचा आर ओना बाबोत रे जाहांनाक्को उपाइयाकोआ। अनुसूचित जन जातिकोवाक् लाहान्ती जे लेका- जोम-ञुई तेयाक्,ओलोक्-पाड़हावक् सेच् ते आर से निफुट होड़मो दोहोय रे नाड़ाक् लेकाको आइकाउ रे ओना बाबोत ते दो पोनोत सोरकारसांव तेको गालमाराव ते आदिवासीकोवाक् भालाइ लागित् ते जाहांलेकानाक् गे पोरहोवानाक् कामी पोन्थाको बेनावा। मिमित् साल रे ओनकानाक् पोरहोवानाक् कामीको कामी तायोम ओकाटाक् दो आयोग दो बेसाक्ए बुझावा। ओना बाबोत रे राष्ट्रपति रिपोर्टए एमाया। ओनकानाक् रिपोर्ट रे दो ओना कामी बाबोत रे ओने एटाक्कामी पोन्थाको कामीय लागित् ते दिसाम से पोनोत सरकार दोयकामिया आर अनुसूचित जन जातिको रूखिया, भालाइ, आर सोमाज आरसे जोम-ञू सेच् तेको लाहान्तीक् लागित् तेयाक् आरदास साकामको एमा।

आदो, ओने ओनका दिसाम रे आदिवासीकोवाक् भालाइ बाबोत रे दो राष्ट्रीय अनुसूचित जन जाति आयोग दोय कामिया। मेनखान, ओना रे ओनको भोट रे चुनाव काते एम0 एल0ए0 आर एम0 पी0 जिताउ काते मंत्री एमानको बेनावक्कान रे चेत्को चेकायेत् काना। ओनको गे एनतेपोनोत आर से दिसाम रेयाक् मिमित् गातांक रेन होड़को सानाम लेका ते भालाईको लागित् ते बाबार-पेपे धाव किरयाको जोमेत् काना। आर, ओना ते ओनकान लेकमान हुदा रेयाक् कामीभारको एमाको काना। आर, ओना कामी पुराउ लागित् हों किरयाकोजोमेत् काना। ओना किरया जोम (शपथ ग्रहण) रे ओनको दो नुनाक्हाबिच्को किरयाक् काना जे मेनेत् कानाको-'इञ दो भारोत रेनसान गातांक रेन होड़ (सामाजिक, आर्थिक आर राजनीतिक न्याय, बिचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म आर उपासना रेयाक् स्वतंत्रता,मान-सोनमान, भालाई आर अवसर ञाम ओचोको ते ओनकोवाक् कामी पुराउ लागित् तेञ सिकार गेया) आर, से नुनाक् हाबिच् जे 'व्यक्ति की गरिमाञ' दोहोया आर ओना ते चान्दो-बोंगा सामाङ रेञ एकराड़ोक् काना।' आदो, ओने ओनका नोको 'राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग' रेन रासियाको हों इन दिन ते चेत्कोको कामी केदा।ओनकानाक् सानाम लेकानाक् बाबोतको रे गे तेहेञाक् दिन रे हों चोरचा मेसालोक्आ।तोबे, विश्व रेन आदिवासीको लेका गे नोआ भारत दिसाम रे हों आडीगान गातांक रे हाटिञ आकान आदिवासीको मेनाक् आकात्कोआ। आर, ओनका लेका ते जुदी भारत सोरकाराक् जन जातीयबिकास बिभाग रेयाक् लेखा लेका ते नोको दो पोनोत हिसाब ते ञेलेत्को खान दो सांगे लेखा रे दो नोकोको आदिवासीको मेनाक् आकात्कोआ। जे लेका-गुजरात- भील, बंजारा, कोली, पटैलिया, डाफर आर टोड़िया एमान। हिमाचल प्रदेश- गुड़डी, कनौरा आर लाहौली एमान। ज मू कश्मिर-बक्करबाल, गद्दी, लद्दखी, आर गुज्जर एमान। कैरल- कादर, उराली, मोपला, इरूला, आर पनिधान एमान। मध्यप्रदेश- भील ल बाडी, बंजारा, गोंड़, अबुझमारिया, मुरिया, बिशनहार्न, गोंड खेरवार, असुर, वैगा, कोलआर मुण्डा एमान। महाराष्ट्र- बारली, बंजारा, गौड़ आर अबुझमारियाएमान। मणिपुर- कुकी, मैटी, नागा आर अंगामी एमान। मेघालय- गारो,खासी, जयन्तिया आर मिकिर एमान। मिजोतम- लाखर, पाचो, मिजो, चकमा, लुसाई आर कुकी एमान। नगालैंड- नागा, नाबुई नागा, अंगामी आरमिकिर एमान। उड़ीसा- जुवांग, खड़िया, भुंईया, संताल, हो, कौल,उरांव, बैंचू, गौड़ आर सोंड एमान। राजस्थान- मीणा, शहरिया, सांसी,गरासिया, भील, बंजारा आर कुकी एमान। सिक्किम- लेपचा एमान।तमिलनाडू- बड़गा, टोडकोटा आर टोडा एमान। त्रिपुरा- रियांग आरत्रिपुरी एमान। उत्तराखंड- थारू, कोच, मारा, निति, भोट से भोटियाआर खास एमान। पश्चिम बंगाल- लोधा, भूमिज, संथाल आर लेपचा एमान। आसाम-राभा, दिमारा, कोछारी, बोडो, अचोर, आचो, मिकिर, नागा आर लुसाई एमान। आन्ध्रप्रदेश- चेन्चुस, कौढम, सवास, गदवा आर गौंड एमान। आरूणाचलप्रदेश- मीणा, डबला, सुलुंग, मिश्मी, मिनयोग, गिरिगेलोंग, अपतनी आर मैजी एमान। झारखंड- संथाल, मुण्डा, हो, उरांव, बिरहोर, कोरवा,असुर, भुंईया, गौंड़, सौंरिया, भूमिज आर वैगा एमान। लक्ष्दीप- वासी एमान। अण्डमन निकोबार- ओंगे, जारवा, सेंटलीज, अण्डमानी आर निकोवारीएमान। आदो, ओने ओनका नोआ भारत रे दो आडीगान पोनोतको रे आडी लेकान आदिवासीको मेनाक् आकात्कोआ। आर, ओनका लेका ते नोआ दिसाम रेयाक् ओका दो मारे स यता 'हड़प्पा से 'होड़ रापाक्'लेखाक् काना।

ओना दो नोको आदिवासीकोवाक् गे ताहेंकाना। मेनेक,ओनकोको मुद रे हों काथाय नोआ दो 1890 साल रे भाषा वैज्ञानिकजर्जग्रियर्सन साहेब गातांक नापित पारसीकोय हाटिञलेत्को मुद रेप्रोटो आस्ट्रलायड आर भूमध्य सागरीय प्रजाति सिसिली (हिहिड़ी) आर सांवसाबाद 'पिपिड़ीं' ञुतुमानाक् जायगा रेको ताहेंनकान ताहेंकोवाक् गे ताहेंकाना। आर, नोको दो उत्तर भारत रेयाक् आडीगान जायगाको रेआडी स यता होड़को ताहेंकाना। आदो तेहेञ लेकान दिन रे दो ओनको गे जाहांय दो अर्न्तराष्ट्रीय लेवेलरे मेनाक् आकात्को, ओनकोवाक् लाहान्त बाबोत तेयाक् काथाको गेआय-उमानोक्आ। आदो, ओनका लेका ते पोनोतिया हिसाब ते नोआ झारखण्ड पोनोत रे मेनाक्को आदिवासीको मुद रे संतालकोवाक् जाहांयाक् पारसी दो 2003 साल रे दो नोआ भारत दिसाम रेयाक्संबिधान रे मेनाक् इरालाक् सूची रे पारसी सेलेत् आकान ताकोवाक् दो सारी गे लाहान्त होय आकान ताको गेया ? चेत् ओनको दो धोरोम जोड़ोको ञाम आकात् गेया ? चेत् ओनको दो बिर-बुरू माक् टांडी काते ओड़ाक्-दुवारको बेनाव आकावान आर से नोआसीएनटी एक्ट आर एसपीटी एक्ट केटेच् जुमी आन ताहेंन तुलुच् हों बाको बेदोखोल ओचोक् काना ? चेत् नोआ आकोवाक् आतो-ओड़ाक् रेयाक् कोयला, धिरी आर से गितिल एमानको आकोको ञाम गेया ? चेत्नोआ झारखण्ड पोनोत रे संताली पारसी दो नोआ पोनोत रेयाक् पोरथोम राजभाषा बेनाव आकान गेया ? आदो, जुदी बाङ। एण्डेखान दो ओका लेकान लाहान्त नोआ दो ? ओनका गे नोआ पोनोत रे दो आडीगानआदिवासी ओलोक् कोड़ा-कुड़ीको दो बी0ए0, एम0ए0 रेयाक् डिगरीहाताव काते आसुलोक् रेयाक् आत कोयोक् होर रेकोतांड़ाक् आकाना। मेनेक, सोरकार दो चेत् नुकरिये एम दाड़े आकावात्कोआ ? जुदी बाङ। एण्डेखान, दो ओका लेकान लाहान्त नोआ दो ?नोआ पोनोत रेन चासीको दो सोमोय रे गे इताकोको ञामेत् गेया ? जुदी बाङ ? एण्डेखान दो ओका लेका नोआ लाहान्त दो ?ओना इयाते नोकोवाक् लाहान्त होय ओचोय लागित् दो दिसाम आर पोनोत सोरकार दो नोको आदिवासीको दो सानाम सेच् तेगोड़ोवाको लेक काना। एनते नोको आदिवासीकोवाक् लाहान्त रे गे पोनोत आर से दिसाम रेयाक् लाहान्त दो टेहाड आकान मेनाक् आकादा।....

आदिवासी

- रघुनाथ हाँसदाः 'चलविन्धा'

जेगेत् जाकात आदिवासी माहां तेहेञ दिन दो,
आम दो बेंगेत् आचुरमे जेगेत् जाकात रे।
रासका बेड़ा रे आदिवासी दाया गे,
जेगेत् जाकात रेयाक् आयमा दिसोम रे।

जुमिद बाडते पालने नोडका दाया गे,
आकिल हामेट रे तायनोम आकान होड़ दो नोडका गे।
साय गेसाय सासाय बोछोर खोनाक्,
बाञ्चाव आगुवाकादाको लाकचार साँवहेत्।

ओना इदिते नित हों ओपरोम मेनाक् गेया,
आदिवासी मेनते जेगेत् जाकात रे ओपरोम।
जोम ञु होरोक्-बान्दे खोनाक् एतोहोप् काते,
एनेच् सेरेञ रू राहा आड़ाङ जोतो गे।

जेगेत् रेन एटाक् मानमी खोन दो जुदा गे,
जोतो गेको ओरामकोआ आदिवासी मेनते गे।
ऐटाक् मानमी दोको लाहा एना सानाम लेकाते,
आदिवासी दोको साहा एना ओना ताला खोनाक्।

ओकोय इदि ते आदिवासी नित हों नोडका दो,
आदिवासी गांताक रेन बुद्धि जिवीको।
चाक् बाडको बिचार काना नोआ सातम चेतान रे,
तेहेञ दो काना सागुन जेगेत् जाकात आदिवासी माहां।

आदिवासीकोवाक् लाहान्ती डाहार,
पाञ्जा ञाम लाकती मेनाक्आ नोआ बेड़ा रे।
हाताव लाकती मेनाक्आ किरिया कसम,
रेगेंच् तेताङ ताहेंकाते रे हों आकिलबोन हामेटा।
निताङ ओकतो रे आदो आलोबोन हिडिञमा,
आम चाहे ईञ माड़ाङ दो होयोक् गेया दिन।

संताल आदिवासी

सोहागिनी टुडू

आम दो संताल आदिवासी
भारोत गोगो रेन मूलवासी,
आद खोनेम बेरेल बासावाकान
तेहेञ होंचोम आसोलाकान।

मेनाक्ताम गे साँवहेंत् आरसी
होरोक् बान्देन पाञचीदासी,
ती-कोड़ाम कादाम बाहा खोदा आर
बेवोहारताम सोमाजारी डोबोक् जोहार।

एनेच् सेरेञ दुराङ मेनाक्तामा
सोरोस गेचोम बाङगेम कोमा,
दोङ लागड़े बाहा सोहराय सेरेञ
जोगाव दोहोयेत्एम बाचोम हिड़िञ।

आतो मेनाक्ताम रासी कुलही टोला-टोला
मांझी टोला, पारानिक टोला, गान्डे टोला,
ओड़ाक् मेनाक्ताम बेड़हाय ढाबा पिण्डा
कुल्ही दुवार बाड़गे मुचात् मारे डिण्डा।

हाने ञेलोक् कुल्ही नाखा बांगला पिण्डा
साते रे आका मेनाक् जोंडरा-गुहुम बिण्डा,
गाड़सादी पिण्डा चेतान मा दोड़ोम दाक्
गोटा साते पावरा चेलाङ आकावाकात्।

मेनाक्तामा ओत हासा जागा-जुमी
आरजावेदाम जावगे पेरेच् दुड़मी
आदिवासी होड़ आम बाङगेम लांगाक्
आदिवासी जियोनताम छापरी रे होंम आंगाक्।

पेटेर बोड़ ते एसेत् बांदी होड़ो
मेनाक्ताम आरहों चाके गोंयठा जोड़ो,
आदिवासी होड़ आमेम ञेलोक्कान
संताल आदिवासी नितेम बोदोलोक्कान।

हायरे आदिवासी

एडवर्ड सोरेन 'सिबिल सिकारिया'

(दालदली, हिरणपुर, पाकुड़, झा।)

हेन्दे-होड़ेच् दो पोण्ड गोडा रे,
चाक् आम दो जाला रे,
तेयार जोड़मे
नोआ ओगोम दोरियाँ रे।
उत पुटाउ आगुयमे,
नोआ नागाम ताला रे।
सापड़ाव गोदमे,
पोण्ड गोडा हेन्दे होड़ेच्।
आलोम ताहेंन आम दो आथाउड़ी,
खेत-बाड़गे आलोम दोहोय आजाउड़ी।
ञेलकोम हानको,
दाहाड़ा-दाहावाड़ी।
साप् जोड़कानको आथाउड़ी काउडी।
सापड़ावेत्को आन-आरी,
चेदाक् आम दोम,
एखेन सागात् साउड़ी।
लुती-लुती पुतीमे।
ओकतो मेनाक् बानुक्।
आलोम सेनोक् बिलात दिसोम कामी।
ओकोय एरताम भाला,
पोण्ड गोडा हेन्दे होड़ेच्।
आकिल बाइरी, हिंसा-सुयाम राड़ेच्।

आदिबासी माहाँ!

रवि बेसरा 'जियाड़ झरना'
घटियारी, पतना, साहेबगंज!

इञगे आद रेन आदिबासी,
सानामाक्तिञ आडी साबासी,
जावगेञ ताहेंन आडी कुसी।

इञ दो कानाञ हासा होपोन,
ओनाते आडी गेञ जोतोन,
बिर - बुरू दारे - नाड़ी,

आलाक-बालाक आलाकजाड़ी,
कुल-तारूप् चेंड़ें-चिपरूत्,
सागाई मेनाक्ताले आजगूत।

जुदागेतिञ इञाक् ओपरोम,
जुदागेतिञ इञाक् धोरोम,
बिसवासगेतिञ कोरोम,
सोरोसगेतिञ आरी-चाली,
पारसी रेयाक् बुलीदूचाली,
बानुक् चेत् हों जाली।

इञगे मालीक बिर-बुरू रेन,
इञाक् रेहेत् आडी खानदरीञ,
इञाक् ओपरोम हों सारीयाक्
इञाक् आड़ाङ, मित् आतुक् दाक् लेका,

ओने आतुक्कान बिन तेङगो थिर ते।
इञाक् जिबोन रेयाक् सागाई,
सिरजोनिया सांव जोपड़ाव मेनाक्।
जाय आदिबासी माहाँ!

आदिवासी आदोक् मोहन्डा रे

- शिवलाल मरण्डी 'बेचारा'

आदिवासी ओल रे होंम मेटाक्कान ,
आदिवासी लेखा रे होंम घाटाक्कान , आदिवासी
आदोक् मोहन्डा रे।
आबोल-आबोल खेत एनका गे खोत बाङ साहार
बाङ,
बाङ दोबोन मोकोञेना गुरीच् गोयठा हालाङ।
बागीयादाबोन आका रे आराँड़ इसी पाँक जुती,
जांगा लागाक्कान ताम ओते, जिराक्कान ती।
आबोवाक् बोरसा हासा रे,
बानुक्बोन केटेच् टाका-पायसा रे,
आदिवासी आदोक् मोहन्डा रे।
ओकोरकोताम जोग पारानिक ओकोरकोताम मोड़ें होड़ गे,
आगा-पुजा बिचार बैसी बेजाय जोतो बातोड़ गे।
भिडी लेका भिड-भिड घाने आदोक् कानाबोन जुड्डु-जुड्डु ते,
चाखना तेको चाबायेना बेरदोक् आम ओकोय सिमाक् कुकड्डु ते।
तिरे हुनार बाङ ताम,
रोहोड़ मोकोञ चेलाङ ताम,
आदिवासी आदोक् मोहन्डा रे।
रोड़ तामेम बाञ्चावले रे ओल ताम दो बाञ्चाक् ,
बाखान हाना राबुड़ नोआ राचाक्,
जातेम बाञ्चावले रे धोरोम ताम दो बाञ्चाक् ।
तोबे आदिवासी जाहाम चालाक् ताहाम पारचाक्।
तायनोमोक्कानबोन ओल सेच् पाड़हाक् सेच् ,
ओत सेच् आरजाव सेच् ,
आदिवासी आदोक् मोहन्डा रे।
आताङ दाक् तापाम दाक् भिजाक् काना बाखेंड़ ते बिनती ते ,
मोज-मोज काथा मुचादोक्कान पहालमान लेका कुस्ती ती।
तिनाक् गान चोम ञुवाकादा तारुप् लेकाम तारासा,
नोआ गेको पाञ्जाया नाहाक् आम रेन आँवसा-बाँवसा ।
आदिवासीम आदोक्कान,
ओकोयाक् ञुतुम ठेमका, ओकोय लोदोक्कान,
ञुतुम पेरेच् एना दिल्ली आर कोलकाता ते,
नीमदाक् मान्डी हों नासता ते ,
आदिवासी आदोक् मोहन्डा रे।

सी. आर. हेम्ब्रमाक् रोड़ रे जिवेत् आकान आदिवासी जियोन

कैनवास रेय छापा केदा झारखंड रेयाक् सोंधाड़ हासा आर आदिवासीकोवाक् आत्माः सी. आर. हेमब्रमाक् बिनलाई काहनी चिकान-चोकोन बाजारवाद खोन फाराकः आपनार हासा आर बिर-बुरू बाञ्चाव लागित् एकराड़ाकान कला

खोबोरिया

दुमका। कला रेयाक् दुनिया दो जावगे केटेच् होड़ आर से महानगर रेयाक् चिकान-चोकोन ताला रे गे ञेलोक् काथाको मेना। बाहरे दुनिया तिन दो आदिवासीकोवाक् आबोसताको तुला-पाईलाया, ओना रे जावगेम ञेला ते रेंगेच्-नाहाचार आर से हाहाड़ाक् लेकान काथा ताहेंना, मेनखान ओना रे सारीयाक्तेत् दो पुलसुत् माछा गे ताहेंना। मेनखान तिन दो जाहांन कारीगोल ओना हासा खोन फुद्याक् राकाप् काते सेरमा टुंगाउ सेच् ताड़ाम डाहारे लाहायेत् काना, उन रे एकेन ओना रेयाक् चितार मोतो दो बाङ दो बिचकोम पुराउ सोसनोक रे जिवीय ओडात् काना। ओनका गे मित्टेन सोड़ा मोनेयान कारीगोल मेनाया सी. आर. हे ब्रम, जाहांय दो संताल आदिवासीकोवाक् ओनोरोम केनवास रे गार काते कला जगत गेय हिलाउ उताराकादा।

कुरूमुटू तेय सांवार केदा जियोन

सी. आर. हेमब्रमाक् सांगार दो जाहांन डामड़ाहीयाकान चित्रकार लेका दो बाङ ताहेंकान ताया। इराल बोछोर उमार रे तोवा दारे आर छाता दारे रेयाक् उमुल कोचेयेना। ओना दुक बेड़ा रे चान्दो बाराबारी मामा गेय सुतुक् केदेया। तिन दो सी.आर. हे ब्रम पटना कला आर शिल्प महाविद्यालय आर ओना तायोम महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बड़ौदा (एम. एस. यूनिवर्सिटी) खोन कला रेयाक् आकिलेहामेट तायोम उनी दो बाटिया रेय पाड़ावेना। मित् दो महान चित्रकार वैन गॉग आर पॉल गॉगिन लेका कला लागित् ते काउडी तेयाक् साकड़ा डाहारे बाछाव केया, आर दोसार रे दो आपनार घारोंज रेयाक् जिमाबारीय गोक् केया। मामोततेत्आक् रीन आर पायसा टाका रेयाक् लाकती दिसा दोहोय तुलुच् हेमब्रम दो भारत सरकाराक् नवोदव विद्यालय रे कला रेन माहासोय रूप रेय नुकरी केदा। हें मेनखान, नुकरी रेयाक् 27 बोछोर रे उनी दो कला खोन दो बाङ गेय फराक लेना आर ओनका लेकाते उनी दो आयाक् कामी ते गेय ताहेंयेना।

दुड़ही ते पोटोमाकान मेंत्आहाँ

हेमब्रमाक् चितारको रे जोतो खोन माराङ काथा दो उनीयाक् चितार तायोम रेयाक् ञेनेल। उनीयाक् चितार दो मेंत् लेंजेदोक् लेकान लेञजेर आर से साफ रोड़ दो बानुक् आकादा। चितारतायोम रेयाक् ञेनेल दो सोपोक्-रोड़ोक् गेया। मेताक्मेओना तायोम रे आडी माराङ भोड़ काथा मेनाक् आकादा। उनीय मेनेत्काना जे आदिवासीकोवाक् जियोन, ओनकोवाक् ओत-हासा दो ओनका गेसोपोक्-रोड़ोक् गेया। ओनकोवाक् जियोन दो ओनासोपोक्-रोड़ोक् रे गे पारोमोक् काना। उनीयाक् चितार रे मोटामुटी नोआ गे ञेलोक् काना जे कोम किचरिच् सांवते दुड़ही ते हारूप् आकात् मेत्आहां। नोआ दुड़ही दोएकेन सेतोङ आर दाक् खोन बांचाक् सुमुङ दो बाङ, बिचकोम ओनकोआदिम होड़ाक् काहनीय लायेत् काना, जाहांय दो दुड़ही रेयाक्चिरित् भुगाक् खोन नेबेताराक् सोमाज रेयाक् आसोल डाहारे ञेलेत् काना, बोतोरोक् कानाय आर ओकोक् रेयाक्एकुरूमुटूयेत् काना। नोआ दो शहरीकरण रेयाक् मित् कुड़पाड़ काना ओका दो आतो होड़ आर बिर पाकाड़ मोहोर मेटाव रेयाक्को कुरूमुटूयेत् काना।

डिहात गे इञाक् ओनोरोम काना

नेबेतार मिमित् कलाकार 'ग्लोबल' सेच् लाहाक् लागित्को ञिरजोङ काना, मेनखान हेमब्रम दो मित् डिहात रेन होड़ गे ताहेंन सानाय काना। उनी दो साफ तेय मेनेत् काना जे डिहात रे गे आपनार सातम दोवैश्विक बेनाव रेयाक् दाड़े ताहेंन काना।

ओका सोसनोक् मारे गेया,ओना गे मानवांकोवाक् आसोल रेहेत् काना। अमृता शेरगिल आर पॉलगॉगिन ठेन खोन उसकुराकान हेमब्रम दोय मेनेत् काना जे आपनारआरीचाली आर ओनोरोम दुनिया सामाङ रे आगुय गे उनीयाक् कलारेयाक् आसोल जोस काना।बाजारवाद रेयाक् नोआ ञिरान रे, चित्रकार दो मित्टेन 'सिग्नेचरस्टाइल' बेनाव काते बाजार रेको ठंवोक् काना, मेनखान हेमब्रम दोनोआ खोन फराक रेय ताहेंन काना। उनीय मेनेत् काना जे मित्टेन स्टाइल रे बांधाव ताहेंन काते ञुतुममाम कामाव गे मेनखान क्रिएटिविटीदो चाबाक् काना आर ओनका रे ओनको दो बाजार रेन गुलामकोबेनाव ताहेंन काना।

कला जगत रे मित् खाटाईयावाक् नावां उडान

सरकारी नुकरी खोन कामीजिरावेन तायोम सी.आर. हे ब्रम दो नित पुराउ ते आयाक् कला रे गे लागावाकान मेनाय आकादेया। उनी दो झारखंड रे लोक कला लाहान्तीय लागित् ते रिनतिरित् कुरूमुटू रे मेनाय आकादेया।

सी.आर. हेमब्रमाक् काहनी दो आबो नोवाय चेत्आबोन काना जे सारी कलाकार उनी दो बाङ कानाय जाहांय दो मोंज ञेलोक् सेच्कोदाड़ेत् काना, बिचकोम सारी कलाकार दो उनी कानाय जाहांय दोआपनार हासा रेयाक् सोंधाड़ सो आर आपनार ओनोरोम दुनिया सामाङरे पुराउ निरोड़ सालाक् तेय दोहो दाड़ेयाक् काना। तेहेञउनीयाक् चितार दो एकेन रोड़ आर कैनवास रेयाक् मेल दो बाङ काना, बिचकोम ओना दो तापिस सालाक् ते आदोक्कान ओना आदिवासीआरीचाली राखी जोक्गावाक् काना।

विश्व आदिवासी दिवस : दुमाक में कला, भाषा, साहित्य और परंपरा का प्रदर्शन

• अपनी भाषा-संस्कृति पर गर्व करें, नई पीढ़ी को जड़ों से जोड़ें : नलिन सोरेन

• कलाकारों और प्रतिभाओं का सम्मान लाभुकों के बीच परिसंपत्तियों का वितरण

ब्यूरो

दुमका। विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर रविवार को दुमका के कन्वेंशन सेंटर में झारखंड आदिवासी महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि दुमका सांसद नलिन सोरेन सहित उपस्थित अतिथियों ने दीप प्रज्वलित कर महोत्सव का उद्घाटन किया। पूरा आयोजन आदिवासी संस्कृति, परंपरा, भाषा, कला, साहित्य और लोकजीवन के रंगों से सराबोर नजर आया। छात्र-छात्राओं और स्थानीय कलाकारों की प्रस्तुतियों ने कार्यक्रम में चार चांद लगा दिए।

सांसद नलिन सोरेन ने कहा कि आदिवासी समाज की पहचान उसकी भाषा, संस्कृति, परंपरा और प्रकृति से जुड़ी जीवनशैली में है। उन्होंने कहा कि नई पीढ़ी को आधुनिक शिक्षा और तकनीक के साथ अपनी मातृभाषा, लोक परंपराओं और सांस्कृतिक विरासत की जानकारी भी होनी चाहिए। अपनी पहचान को लेकर किसी प्रकार की हीन भावना नहीं होनी चाहिए, बल्कि गर्व के साथ अपनी आदिवासी पहचान को आगे बढ़ाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि जल, जंगल और जमीन आदिवासी जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं। प्रकृति के संरक्षण की परंपरा को आगे बढ़ाना सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है। विकास जरूरी है, लेकिन विकास की दौड़ में अपनी जड़ें और सांस्कृतिक मूल्यों को भूलना उचित नहीं है। ऐसे महोत्सव युवाओं को अपनी संस्कृति से जोड़ने के साथ विभिन्न समुदायों के बीच सांस्कृतिक संवाद को भी मजबूत करते हैं। उपायुक्त अभिजीत सिन्हा ने जिलेवासियों को विश्व आदिवासी दिवस एवं झारखंड आदिवासी महोत्सव की शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि यह आयोजन आदिवासी समाज की समृद्ध विरासत को समझने, संरक्षित करने और आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाने का महत्वपूर्ण अवसर है। संताल परगना की धरती सिदो-कान्हू, चांद-भैरव, फूलो-झानो और भगवान बिरसा मुंडा जैसे महान नायकों के संघर्ष और बलिदान की गवाह रही है। सरकार और जिला प्रशासन आदिवासी एवं पहाड़िया समुदाय के लिए आवासीय विद्यालय, छात्रावास, एकलव्य मॉडल विद्यालय सहित विभिन्न योजनाओं के माध्यम से कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि विकास की वास्तविक सफलता तभी है, जब उसका लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे। सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में सड़क, बिजली, पेयजल, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए प्रशासन लगातार प्रयासरत है। साथ ही आदिवासी कला, जादोपटिया चित्रकला, लोक संगीत, चित्रकला, कृषि और अन्य क्षेत्रों की प्रतिभाओं को प्रोत्साहित करना भी जरूरी है।

जरमुंडी विधायक देवेंद्र कुंवर ने कहा कि आदिवासी समाज की माटी, संस्कृति और परंपरा उसकी अमूल्य विरासत है। शिक्षा और विकास के साथ सांस्कृतिक पहचान को मजबूत बनाए रखना समय की जरूरत है। वहीं जिला परिषद अध्यक्ष जॉयस बेसरा ने कहा कि संस्कृति आने वाली पीढ़ियों के लिए पहचान और गौरव का आधार है। इसे बचाने के लिए युवाओं को अपनी भाषा और परंपरा से जोड़ना होगा। महोत्सव में कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय जामा, दुमका, जरमुंडी, काठीकुंड और मसलिया की छात्राओं ने मनमोहक सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं। ट्राइबल फैशन शो, हूल वीर बाजल सोरेन पर आधारित लघु नाटक और थॉमस टुडू एंड ग्रुप बैंड की प्रस्तुति ने दर्शकों की खूब तालियां बटोरीं। गीत, संगीत और पारंपरिक नृत्य ने पूरे वातावरण को आदिवासी संस्कृति के रंग में रंग दिया। उत्कृष्ट योगदान के लिए कई प्रतिभाओं को सम्मानित किया गया। वरिष्ठ साहित्यकार चुड़ा सोरेन, कवयित्री निर्मला मुर्मू, कठपुतली कलाकार बोड़ा मुर्मू, जनजातीय चित्रकार एरमेस मुर्मू, संताली लोक गायिका बबिता मुर्मू, बांस शिल्पकार रिंकी मरांडी, फुटबॉल खिलाड़ी रंजिता हेम्ब्रम तथा स्ट्रॉबेरी एवं सब्जी उत्पादक किरण मुर्मू को सम्मानित किया गया। रंजिता हेम्ब्रम प्रथम खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स में स्वर्ण पदक विजेता झारखंड फुटबॉल टीम की सदस्य रही हैं।

सेंगेल ने की संताली को राजभाषा और सरना धर्म कोड की मांग

संताल एक्सप्रेस संवाददाता

दुमका (रानीश्वर)। आदिवासी सेंगेल अभियान की ओर से रविवार को रानीश्वर प्रखंड के सालतोला स्थित सिदो मुर्मू-कान्हु मुर्मू चौक पर विश्व आदिवासी दिवस मनाया गया। इस अवसर पर सिदो-कान्हु की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर आदिवासी समाज के अस्तित्व, पहचान, भाषा और संवैधानिक अधिकारों की रक्षा का संकल्प लिया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रखंड सेंगेल महिला मोर्चा की अध्यक्ष कविता मुर्मू ने की।

दुमका जोनल हेड बार्नार्ड हांसदा ने कहा कि इस वर्ष विश्व स्तर पर 32वां विश्व आदिवासी दिवस मनाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि 9 अगस्त 1982 को जेनेवा में आदिवासियों की घटती आबादी और उनकी समस्याओं को लेकर बैठक हुई थी। संयुक्त राष्ट्र की

घोषणा के बाद 1995 से प्रत्येक वर्ष 9 अगस्त को विश्व आदिवासी दिवस मनाया जाता है। इसके बावजूद आदिवासियों की घटती आबादी और उनके अस्तित्व से जुड़ी चुनौतियों पर अपेक्षित रोक नहीं लग सकी है।

संताली को झारखंड की प्रथम राजभाषा बनाने की मांग

सेंगेल अभियान ने आदिवासी अस्तित्व और अधिकारों की रक्षा को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के समक्ष पांच प्रमुख मांगें रखीं। अभियान की ओर से कहा गया कि संयुक्त राष्ट्र के विश्व आदिवासी भाषा दशक (2022-2032) के अनुरूप संताली भाषा को झारखंड में संविधान के अनुच्छेद 345 के तहत प्रथम राजभाषा का दर्जा दिया जाए। इसके साथ ही पठन-पाठन, सरकारी कार्य और रोजगार में संताली के उपयोग को बढ़ावा देने की मांग की गई।

सरना धर्म कोड को संवैधानिक मान्यता देने पर जोर

अभियान ने कहा कि बड़ी संख्या में आदिवासी प्रकृति पूजक हैं और उनकी अलग धार्मिक पहचान है। इसलिए संविधान के अनुच्छेद 25 के तहत सरना धर्म कोड को स्वतंत्र धार्मिक मान्यता देने की मांग की गई। इसे आदिवासी समाज के अस्तित्व, पहचान और इतिहास से जुड़ा महत्वपूर्ण मुद्दा बताया गया।

सेंगेल अभियान ने असम और अंडमान में बसे झारखंडी आदिवासियों को अविलंब अनुसूचित जनजाति का दर्जा देने,सीएनटी /एसपीटी कानून को सख्ती से लागू करने तथा झारखंड में स्थानीय नीति और प्रखंडवार नियोजन नीति लागू करने की मांग भी उठाई। अभियान की ओर से कहा गया कि इन मांगों को लेकर संगठन लगातार कार्यक्रम, आंदोलन, पुतला दहन और रेल-रोड चक्का जाम जैसे आंदोलन करता रहा है। विश्व आदिवासी दिवस के अवसर पर केंद्र सरकार से आदिवासी समाज के हित में इन मांगों पर सकारात्मक पहल की उम्मीद जताई गई। कार्यक्रम में हेमंत हांसदा, डॉ. सोरेन, पुण्यता मुर्मू, प्रेमलता मुर्मू, जीतू हेम्ब्रम, मोतीलाल सोरेन, मंगल हेम्ब्रम, सिमल हेम्ब्रम, पलटन हेम्ब्रम सहित अन्य लोग मौजूद थे।

विश्व आदिवासी दिवस : आदिवासीको दो़ ओपरोम सालाक् लाहाक् रेयाक् जा़रूड़ मेनाक्आ

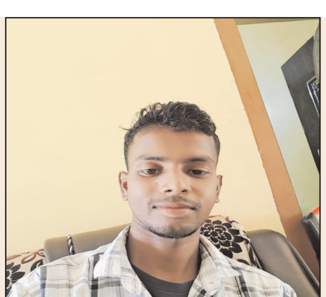

साइमन हाँसदाक्

दुमका। तेहेञ दो़ दुनियाता़री रे आदिवासी माहांको मानावेत् काना, ओकादो़ 9 अगस्त दिन विश्व आदिवासी दिवस रूप रे बाडाय ञामेक्काना। आदिवाकोवाक् हो़क आ़यदा़री बाँचाव, ओनकोवाक् संस्कृति, पा़रसी, कला बांचाव आर इतिहास मानो़त एमावाक् ला़गित्को मानावेत् काना। आदिवासी सोमाज रेयाक् जुदा़ हाहाड़ संस्कृति, कला कारीगोल, आर जियोन धारा बांचाव दो़हो़य आर बाढाव एमावाक् सांव सांवते आदिवासीकोवाक् लाहांतीक् रे हो़ड़को आर सरकाराक् हुदिस बिचा़र हों ताहेंन काना। ओ़ल पाड़हाव ते लाहाक् सांवते एटाक् आर विद्याको रे, टेक्नोलॉजीको रे, साँवहेंत् क्षेत्र रे, खोंदरोंद क्षेत्र रे, एनेच्-सेरेञ लेका ते लाहाक् हों जा़रूड़ मेनाक्आ। आदिवासीकोवाक् एनेच्-सेरेञ, संस्कृति छाडा आदिवासीकोवाक् लाहान्ती बाबो़त हों गापालमाराव जा़रूड़ काना। नोवाको ला़गित् दो़ जुवा़नको रे झुका़ल आयुरियाको बेनाक् हों हापेन दिन रे ला़गित् आ़डी जा़रूड़ गेया। ठिक नोआ आदिवासी दिवस सेटेरेन रे बारया पेया कुकली काथा गे आदिवासी जुवा़नको गे आदिवासी आ़किल गेयान, नावांबिचा़र हुदिस आर नाहांक् जुग हिसा़ब ते आदिवासीकोवाक् लाहाक् बाबो़त, आ़युर दाड़ेयाक् बाबो़त दिस हुदिस रे कुली आकात्को रे जुदा़ जुदा़ काथाको ला़येत् काना। 1. आ़किल गेयान, नावांविचा़र हुदिस आर नीतिः दिसा़म रेयाक् लाहान्ती रे जनजातीय खो़न्दरों़दियाकोवाक् एनेम रे चेत्एम मेनकेया से चेत्लेका मेनाक्आ?...1 आदिवाकोवाक् एकेन आ़धिकार गे बाङ; बो़रो़ङ आ़क्युर दाड़ेयाक् रे चेत्एम मेन केया?...2 चेतानता़री ओ़ल आ़किल रे जनजातीय आ़क्युरको चेत् लेकानको ताहेंन जा़रूड़?...3 खो़न्दरों़दिया, नावांबिचा़र आर नीति निया़म बेनाव रे आदिवासीको का़मी गो़ड़ेंक् सेलेदो़क् रे चेत्एम मेन केया?

----

1 आदिवासीको नाहांक्तेयाक् विज्ञान आर पारंपरिक गेयान रे

मित्ते ताड़ाम जा़रूड़ताबोना जाहांटाक् दिसा़म रेयाक् सा़रियाक् रे लाहाक् दो एकेन आर्थिक विकास मो़तो़च् ते दो़ बाङ होयोक् काना, बिचको़म भारतलेकान विविधताकोते पेरेच् दिसा़म रे जनजातीय सोमाज रेनकोवाक्गेयान आर अनुभव दो़ आबोवाक् दामानाक् आ़दआ़री काना आर नोआरे जनजातीय समाज रेन खो़न्दरो़डियाकोवाक् एनेम दो़ आ़डी दामान गेया। नोआ आ़दआ़रीको बुझाउ, रुखिया़, जोगाव आर लाहा इदीय ला़गित् आ़डी दामानाक् कामी जनजातीय खो़न्दरो़डियाकोको का़मी काना। जनजातीय खो़न्दरो़डियाको आपनार समाज रेयाक् भाषा, संस्कृति, इतिहास, लोककला, पारंपरिक, रानमुरगा़न, चासो़क् धाराको आरप्रकृति सो़ंगे जो़तो़ हों मिला़उ काते रेयाक्को पानाड़हावेत् काना। नोकोवाक् खो़न्दरो़ङ दो़ पुथी मो़तो़च् धा़बिच् दो़ बा़नुक्आ बिचको़म समाज आर सरकार ताला रे मित्टेन केटेच् साको़ रेयाक्ए कामीयेत् काना। जुदी खो़न्दरो़डको आधार ते नीतिकोबेनाक् खान तो़बे ओना दो़ जा़सती प्रभावी आर हो़ड़भा़लाईआनहोयोक्आ। जा़रूड़ मेनाक्आ जे नोको जनजातीय जुवा़नको खोन्दरोंद, विज्ञान आर नावां नानां हु़दिस रेयाक् क्षेत्र रे लाहा सेच् लाहाक् ला़गित्बोन उसकुरको मा। नित नाहांक्तेयाक् विज्ञान आरपारंपरिक गेयान रे मित् ते ताड़ाम होयोक्ताबोना। तोबेयानेच्लाहान्ती दो़ जा़सती टिका़उ आर मित् ते बेनाक्आ। मुचात् रेनोवाञ मेना जे जनजातीय खो़न्दरो़डियाको दो एकेन आपनाराक् सामाजमो़तो़च् दो़ बाङ, बिचको़म पुरा़उ भारत रेयाक् भविष्य बेनाव जा़रूड़ काना। नोकोवाक् गेयान, नावां-नावां हुदिस आर खो़न्दरो़ङ तेगे मित्टेन संमृद्ध, न्यायपूर्ण आर निजटेहाड भारत रेयाक् कुकमूपुरा़उ दाड़ेयाक्आ। आपे सानामको 9 अगस्त विश्व आदिवासी दिवस जुतुमते जोहार।।

लखीराम हाँसदाः पा़ठवा़, सिकामु,दुमका।

----

2 आदिवासीकोवाक् हो़क आयदा़री गालमाराव मो़तो़ दो़ बाङ, बिचको़म भागे का़मीको सो़दो़र जा़रूड़ा़ विश्व आदिवासी दिवस दो़ एकेन आदिवासीकोवाक् हो़क आ़यदा़री बाबो़त गालमाराव रेयाक् दिन दो़ बाङ काना, बिचकोम भागे सिकना़त, भागे नेता से आ़युरको आर आ़न-आ़री बेनाव आर आदिवासीकोवाक् भागे का़मीको सो़दो़र रेयाक् दिन काना। आदिवासी समाज दो़ आकोवाक्आ़यदा़री छाडा आकोरेन नेता बाबो़त हों बाडाय जा़रूड़ा़, सांवते समाजरेयाक् आ़री-चा़ली आ़युर ला़गित् जुवा़नको हों सापड़ावको जा़रूड़गेया। आदिवासी जुवा़नकोवाक् सिकना़त दो आरहों चेतान सेच् राकाप् जा़रूड़ काना। स्कूल, कॉलेज, खो़बो़र साकाम, पा़ठुवा़कुड़ी-कोड़ाको, चेचेत्को आर खो़बो़र साकामको रे का़मीयाकोवाक् भागे का़मी दो़ आरहों बा़ड़ती सो़दो़र जा़रूड़काना, नोआ होतेते आदिवासीयाक् का़मी आर आटकारको बाबोतबाड़तीको खो़न्दरो़ंदा। आदिवासी समाज ठेन चासबास का़मी छाडा बीर-बुरू दारे-नांड़ीं रान-रेहेत् रेयाक् हों भागे आ़किलमेनाक्आ, नोआ आ़किल दो़ नाहांक् विज्ञान सो़ंगे जोड़ाव काते आरहों भागे लेका ते नांवांनाक् रान-मुरगा़न बेनाव रेको गोंड़ोंदाड़ेयाकोआ। आदिवासी समाज दो ओपरोम बेनाव मोतो दो बाङ; आ़किल सो़दो़र, भागे नेता बेनावको, आ़नआ़री बेनाव आर भागे पो़थाकोबेनाव रेयाक् काना।

राजाधन सोरेन, संताली ओ़नो़ड़हिया़,

----

3 आदिवासीको दो़ ओपरोम सालाक् लाहाक् रेयाक् ला़कती 'नाहाँक् जुग रेन आदिवासी आ़डी मुहिम रे मेनाक्बोना। ओना इया़तेआ़डी सो़न्तो़र आर चेताव रे ताहेंन होयोक्ताबोना। चेदाक्जे गोटा भारत रेन आदिवासी चेत् बाङ चेत् नाना हुना़र एटकेटोड़ें रे मेनाक्बोन गेया। आदिवासी ओपरोम सालाक् लाहान्ती रेनाक् जा़रूड़ मेनाक्आ। ओना इया़ते आपनार आ़रीचा़ली आ़नआ़री रा़खी जोगावसालाक् ताड़ाम लाहाक् जा़रूड़ा।

नोआ दुनियाता़री आदिवासी माहित माहाँ रे एकेन एनेच्-सेरेञ रा़सका़ मो़तो़ दो़ बाङ; सोमाज लाहान्तीला़गित् गाण्डो़न जा़रूड़ा। हुदिस बिचा़र ते लाहाक्, आ़किल बा़तीडिगडिग मारसालो़क् जा़रूड़ा। सोमाज रे मारसाल डाहार रेनाक् काथा गे गापालमाराव जा़रूड़ा। तो़बे आनेच् सोमाज रे आन्धा पा़तियाउचाबाक्आ, आदिवासी सोमाज एटाक् सोमाज लेका चोटचुड़ा़ रे राकाबोक्आ।

आदिवासी सोमाज आपनाराक् ओपरोम सालाक् लाहान्ती होयोक्आ।

श्री शुभम जयश्री मुर्मू 'राजच पा' सहायक शिक्षक, संत योहन मध्य विद्यालय, डकैता

----

4 नाहांक् जुग रे आ़किल हा़रजो़ङ रेयाक् आ़डी जा़रूड़ गेया आबो जो़तो़ आदिवा़सीको नाहांक् जुग रे आ़किल हामेट रेयाक्पा़हिल का़मी लेका गे का़मी होयोक्ताबोना, चेदाक्जे नाहांक् जुगरेयाक् आसो़ल लाड़हाई दो़ 'अकिल' रेयाक् लाड़हाई काना।आ़किल बेगो़र दो़ आपनाराक् हो़क-आयदा़र बाबोन हामेट दाड़ेयाक्आ। आपनार रे बुद-आ़किल बाङ ताहेन खान आपनाराक्हो़क-आयदा़र सोमाज रे, पो़नो़त रे दिसोम रे आर चाहे जेगेत्जारात रे बाबोन हाताव दाड़ेयाक्आ। ओनाते नाहांक् जुग रे आ़किलहा़रजो़ङ रेयाक् आ़डी जा़रुड़ मेनाक्ताबोना।

नाहांक् जुग रेआदिवासी जुवा़नको नावां-नावां हुदिस-गान्डो़न काते आदिवासीयाक् आ़रीचा़ली, लाय-लाकचार आर हो़क-आयदा़र ला़गित् ते नावां-नावांनीति से का़नून बेनाव दो़रकार काना, जेमो़न आदिवासी सोमाज रेयाक्भा़लाई होयोक् । दिसोम रेयाक् लाहांती ला़गित् ते आबोरेनखोंदरो़दियाकोवाक् आ़डी माराङ एनेम मेनाक् आकादा, जेलेका नोकोखोंदरोदियाकोगे आबो आदिवासीको ला़गित् नावां-नावां जिनीसकोखो़जेत्ताबोना जाहां दो़ आबो आदिवासी जुवा़नको ला़गित् मित् माराङहो़र-डाहार ञामो़क् काना आर सोमाज लाहाय रेयाक् माराङ दावबोनञामेत् काना ।

आर ओनका लेकाते आबोरेन पा़ठुवा़ कोड़ा-कुड़ीको आ़किल हामेटजो़ङ रे, नाहांक् टेक्नोलॉजी जुग रे आरखो़न्दरो़ंद रेयाक् हो़र-डाहार रे लाहाक् रेयाक् आ़ंत आर ओ़पसो़रको ञामेत् काना। आबोवाक् सोमाज हारा-बुरूय ला़गित्नागामिया आर सोमाजिया रेयाक् ओ़ड़े-ओ़ड़पात सेंदरा खोंदरो़ंद काते सित्र-त्रिदा़ का़मी रे छुटा़उ मेनाक्कोवा। ओनका लेकाते दिसोमताबोन लाहाय ला़गित् आदिवासी खो़ंदरो़ंदियाकोवाक् आ़डी माराङएनेम मेनाक् आकादा।

बिनयलाल मराण्डी 'पिरीतिया़', ओ़नो़ड़हिया़

----

5 आदिवासीकोवाक् हो़क आ़धिकार ला़गित् निता़ेक् केटेच् ते आ़युर रेयाक् ला़कती मेनाक्आआ़डी माराङ कुकली काना आर खोंदरो़ंदजो़ङ रेयाक् काथा होंकाना। आदो़ चेदाक्? नोवा इया़ते ञेल मा़बोन आ़दिबा़सीको रेन गे जो़तो़ जात रेन खोंदरोदियाको दो़ जा़सती मेनाक्कोआ आर आ़दिबा़सी गे़ को़म मेनाक्कोवा, नोडका रे आ़दिबा़सीकोवाक् लाहान्ती चेका होयोक्आ? बाङ होयोक्आ। नोआ कारेन कानगे़यानित हों तायनो़म रेबोन एहेरजीकी बाड़य काना। नाहांक् जुग रे नांवा दिस-हुदिस लेका चालाक् जा़रूड़ काना आदो़म-आदो़म सेदाय रेयाक् आ़नआ़रीको बो़नो़दो़ल जा़रूड़ काना। मेनखान मित् खो़न्दरो़दियादो़को मेनेदा सेदाय लेका गे ताहेंओ़चोवा। आबो आ़दिबा़सीको दो़ नित आ़डी दिगधा़ रे मेनाक्कोवा। एनतेत् बिचा़रधारा बाडमिला़वक् कान तेबोन सोलोक् बोंकोक् चाबा आकाना। खोंदरो़दियाकोवाक् एनेम मेनाक्आ। मेनखान ओनको हों मित् मंच रे मोंज ते बा़नुक्कोवा। आदो़ मित् मंच रे से मित् था़र रे हिजुक् आ़डी गे़ जा़रूड़ काना। आदिवासी हो़ड़ दो़ आपनाराक् हो़क आ़धिकार ला़गित् निता़ेक् केटेच् ते आ़युर रेयाक् जा़रूड़ मेनाक्आ। नोण्डे खो़न गे आधिकार आर आ़क्युर रेयाक् लाहान्तीहोयोक्आ। चेतान ओ़लआ़किल से विवि रे आदिवासीको दो़ आ़युर दाड़ेयाक् रेयाक् ओ़पसो़र ञाम जा़रूड़ काना। खो़न्दरो़ंद, नावांबिचा़र आर नीति निया़म बेनाव रे आदिवासीको सेलेदो़क् जा़रूड़ काना, मेनखान खास ओ़पसो़र जा़रूड़ गेया। आदिवासी खो़न्दरोंदियाको लेकमान स्कॉरशिप ञाम जा़रूड़ काना, चेदाक्जे आयमा दो़ स्कॉलरपोयसा ओ़भाब ते तालारे खोंदरो़ंद का़मीको बा़गीयाक् काना। आदिवासीकोवाक् नीति निया़म बेनाव रे आदिवासीको दाड़ेयाक् गेया, ओनाइया़ते सोमान ते सेलेत् ओ़चोवाको जा़रूड़ काना।

सुनील मुर्मू शनि संताली ओ़नो़ड़हिया़,

----

6 आ़ईदा़रीको रेयाक् खो़ज मो़तो़ हा़बिच् दो़ बाङ; मेनखान आ़यूरना सेच् फेडो़क् हों आ़डी जा़रूड़ा़ दुनियाता़री आ़दिबा़सी माहाँ एकेन आपनार ओ़परोम, लेगचार आर आ़ईदा़रीको दिसा़ रूवा़ड़ रेयाक् दिन मो़तो़ दो़ बाङ काना, बिचको़म नोआ दो़ आपनार सोमाज रेयाक् आ़किल आर आबोवाक् आगाम बाबो़त रे दिस हुदिस रेयाक् ओ़पसो़र हों काना, जे आबो आ़दिबा़सी सोमाजेरेनको आपनार आगाम रेयाक् आ़यूरना, ओका लेकाबो ओ़रामा? निताक् जा़रूड़ एकेन आ़ईदा़रीको रेयाक् खो़ज मो़तो़ हा़बिच् दो़ बाङ; मेनखान आ़यूरना बेनाव रेयाक् काना। आबोरेन जुवा़नको लाहान्त सिखना़त रे लाहा सेच्को लाहा चालाक्, बिरदा़गा़ड़ आर खो़न्दरो़न्द गा़ड़को रे आकोवाक् केटेच् हा़जीरको दो़हो़ दाड़ेयाक् आर बिचा़र दाड़े रेयाक् जायगा हा़बिच्को सेटेरो़क्। चेदाक्जे तिन हा़बिच् आबो दो़ बिचा़र का़मी रेयाक् हिसा़दा़री रे बा़नुक्बोना, ऊन हा़बिच् आपनाराक् आगाम रेयाक् हो़र डाहार बेनाव दाड़ेयाक् रे आबोवाक् बेबेनाव आ़री दो़ एन्डेगे ताहेंना। आ़दिबा़सी सोमाज रे सोमाजिया जिबो़न आर हापड़ामको ठेन खो़न हामेटाकात् आ़किल रेयाक् नापड़ाक् लिन्डा़रतेत् मेनाक्ताबोना।

नित जा़रूड़्काना जे नोआ आ़किल दो़ सिखना़त, खो़न्दरो़न्द, नावाँ दिसहुदिस आर नावाँ लेगचार सांवते जोड़ाव। आ़दिबा़सी सोमाज बाबो़त रे एकेन एटाक् हो़ड़ आलोको खो़न्दरो़न्द, बिचको़म आबोरेन जुवा़नको आकोते आपनारसोमाज, ईतिहास, पा़रसी, लेगचार आर निताक् लिलका़र चेतानरेको खो़न्दरो़न्द। आ़दिबा़सी खो़ंदरो़न्दीयाको एकेन खो़न्दरो़न्द हा़बीच् हों आलोको ताहेंनमा, बिचको़म ओनकोवाक् आ़किल आर लिन्डा़रतेत्रेयाक् ऊतजो़ग सोमाज रेयाक् मुसकिलाक्को छिन्डा़उ आर नावाँ दिस हुदिस लाहासेच् लाहाय ला़गित् हों होयोक्। नोनकालेका निया़मआ़री बेनाव रे आबोवाक् हिसा़दा़री हों बान्धाव जा़रूड़्काना। आबोवाक् मुसकिलाक्को आर जा़रूड़ाक्को बुझा़उ दाड़ेयाक्हो़ड़कोवाक् केटेच् हिसा़दा़री एकेन आ़दिबा़सी सोमाज, बिचको़मदिसा़म रेयाक् लाहान्ती रे हों ढेर सेनेलेत् आर मानायनाक् बेनावदाड़ेयाक्आ। आबो ओनकान पिढ़ी बेनाव जा़रूताबोना, ओको़य दो़रेहेत् सांवको जोड़ावक्, मेनखान सिखना़त नावाँ का़रीगा़री आर बो़दो़लो़क् कान दुनिया़ सांव होंको ओपरोमो़क्। ओको़य एकेन आपनार आ़ईदा़री रेयाक् काथा मो़तो़ बाको रो़ड़, बिचको़म,आ़किलदाड़े होंको सिरजा़उ, नावाँ डाहारको सेन्दराय आर निया़मआ़री बेनाव आर बिचा़र हाताव दाड़े रेयाक् का़मी होराजायगाको तोयनात। आ़दिबा़सी सोमाज ला़गित् नित लाहा चालाक् रेयाक् हो़र एकेन आ़ईदा़री रेयाक् लाड़हाई मो़तो़ सेच् ते दो़ बाङ; बिचको़म, आ़किल, खो़न्दरो़न्द, नावाँ लेगचार आर आ़यूरना सेच् तेहों फेडो़क् आ़डीगे जा़रूड़्काना। ओपरोम दो़ आबोवाक् रेहेत्काना, आ़किल आबोवाक् दाड़े आर आ़यूरना आबोवाक् आगाम काना। दुनियाता़री आ़दिबा़सी माहाँ रेयाक् एकराड़ दो़ नोआ गे होयोक् जा़रूड़्काना, जे आबो दो़ जेमो़न आपनाराक् ओपरोम बाञ्चाव मो़तो़हा़बिच् दो़ आलोबो ताहेंन, सांव-सांवते आ़किल, खो़न्दरो़न्द आर आ़यूरना लेकाते आपनाराक् आगाम रेयाक् डाहार आपनारतेबो ञेल ठिक दाड़ेयाक्। दुनियाता़री आ़दिबा़सी माहाँ रे आपे सानामको दुला़ड़, मानो़त आर जोहार। जा़य आ़दिबा़सी।

रवि बेसरा, संताली ओ़नो़ड़हिया़,

----

7 दिसोम रेयाक् लाहान्ती का़मी आर आ़नआ़री बेनावको रे हों लाहाक् जा़रुड़ताबोना तेहेञ आ़दिबा़सी मांहा रेयाक् गो़रो़बानाक् दिनरे एकेन निजाक् ओपरोम झालकाव रेयाक् रा़जा़री खो़न चेतान हुदिस जा़रुड़कानताबोना। तेहेञ आबो दो़ एकेन आपनाराक् आ़धिकार को़को़य से आ़दिबा़सी सोमाज रेयाक् किंसा़ंड़तेत् रे मो़तो़ मा़हिमा बाङ काते दिसोम रेयाक् लाहान्ती का़मीको रे आर दिसोम रेयाक् आ़री बेनावको रे हों लाहाक् जा़रुड़ कानताबोना। पिड़्ही चेतान पिड़्ही खो़न हेच् हिजुक् कान सिरजोन बाञ्चाव रेयाक् आ़किल दिसोम रेन एटाक्जा़तको ठेन हा़टिञ रेयाक् जा़रुड़ मेनाक्ताबोना। जाते, निराई आर सा़धिनते जिवेदो़क् ला़गित् सानामकोबोन हुदिस दाड़ेयाक्।

आलबिनुस हेम्ब्रम

प्रेसिडेंट, संताल परगना संताली राइटर्स एसोसिएशन, दुमका

स्वामी, प्रकाशक,मुद्रक एवं संपादक अशोक कुमार द्वारा भास्कर प्रिंटिंग प्रेस,धनबाद गोविंदपुर मेन रोड अशोक नगर, केजी आश्रम,गोसाईंडीह धनबाद झारखंड से मुद्रित तथा संताल एक्सप्रेस कार्यालय दंगालपाड़ा, हिजला रोड, दुमका (झारखंड)से प्रकाशित, RNI NO. JHABIL/2018/76383, सलाहकार संपादक चंदन मिश्र, प्रबंध संपादक सिद्धार्थ कुमार, स्थानीय संपादक चुण्डा सोरेन सिपाही फोन न. 7367009287, 9771486686